॥ श्रीदरिः ॥

^{का.०द}पुज्यपादआचार्यरत्नगोस्वामिकळकौस्तुभ

श्री १०८ श्रीगोक्छनाथजीमहाराजश्री

की आज्ञासं

• वसंत के कीर्तन

ी प्राप्त अस्ति । प्रथम भागः

इस्तलिखित प्राचीन पुस्तकनम् संग्रह करके जगायवेम् लेके पोटायवे तकके अलग् अलग्, ताल सहित.

-सुदामापुरीस्थ-परमभगवदीय कीर्तनियाजी ठा. नारायणदास छक्ष्मीदास

की अपूर्व हार्दिक सहायताम्

-: खंभालीआस्य :--

टा॰ त्रीकमदास चकुभाई ने प्रकट कीनो है.

२७--२९ कोल भाट लेन वस्वई नं. २ प्रकाशक नें सर्वे इक स्वाधीन रचलें है.

न्योछावर रु. १-०-०

यह पुस्तक श्री अच्युन सुद्रणालय, २३३ कालबादेवी रोड, बम्बई में छपी.

पॅ० कृष्णकुमार श्रमः यो० शतनगढ़ ज़ि० विजनीर (यू० पी०)

वालक विकास के वरे-

(१) पं॰ कृष्णकुमार समी, पो॰ रशनगढ़,कि॰ विजनीर(यू.पी.) (२) दिन्दी भवत, जनारकडी, जहीर (३) भेहरचन्द छक्ष्मणदास, सेदिनिट्टा बाजार, जाहीर

> सुदक— श्री देवचन्द्र विशास्त

दिन्दी भवन ग्रेस साहीर

श्राहारःशरणम् ।

🗞 प्रस्तावना. 🄊

पुष्टिमार्गनां भाषा-साहित्यमां वार्षान वनसायानां कीनेनो वनि अपूर है. कारण है हे वर्डान्त-कारोने सालाद मुझी लीजानां ने दर्बन थनां ने ने नो कीनियां वर्षणा हा. अन्यव दिनोमां ने आनन्दनी नदी वरे हे ने अन्यव नशी वरेती. यन्दिरीनी अंदर समय समयनां जने ने एण अपूर्ट समुत्ता कीनेनां याचा है. विदे साण्ये ने न्यायापूर्वक साम्यव्यक्ष तो प्रभुती जाजानां हांगां थया विचा नारे रहे. सम्बद्धायमां एसी प्रणाणी हे के पुत्ती सिलायमां ज्या छाएं नांन होनेनां यहं यहे. अन्यनां नहिं, ने कारण ए के के कीनीयों क्योंच करनानं स्थान वर्षण पश्ची साहात कोनानां दक्त-कारता हता, ने बहानुमारोनांन रचित्र कीनीय प्रमुत्ता साहात्रकार हता जने साहात्र कीनां प्रमुत्ता आध्यक्ष साहात्र कोनां का अन्यवात्र कीनां प्रमुत्ता प्रणाणिक साहात्र कीनां प्रमुत्त मातात्र कीनां प्रमुत्ता प्रमुत्ता प्रमुत्ता प्रणाणिक साहात्र कीनां प्रमुत्त साहात्र का प्रार्थ कालां, प्रचान प्रमुत्त सार्वात्र का स्थान कीनां साहात्र कीनां प्रमुत्त साहात्र का प्रार्थ कालां, प्रमुत्ता प्रमुत्ता प्रमुत्ता प्रमुत्ता प्रमुत्ता प्रमुत्ता कालां कीनां प्रमुत्ता स्थानां कीनां कीनां प्रमुत्ता प्रमुत्ता प्रमुत्ता प्रमुत्ता प्रमुत्ता प्रमुत्ता प्रमुत्ता साहात्र कीनां प्रमुत्ता साहात्र कीनां प्रमुत्ता साहात्र कीनां प्रमुत्ता साहात्र कीनां प्रमुत्त साहात्र कीनां प्रमुत्ता साहात्र कीनां प्रमुत्ता कालां कीनां प्रमुत्ता साहात्र कीनां प्रमुत्ता साहात्र कीनां प्रमुत्ता साहात्र कीनां प्रमुत्ता कालां कीनां प्रमुत्ता साहात्र कीनां कीनां साहात्र कीन

"श्रीसुरदासजी महामुगुरुआचार्यके शिष्य थे। इनके अतिरिक्त परमा-नन्ददान कुंमनदासजी महामुग्जी के शिष्योमे नामी किन हुए हैं। चतुमुंजदान, ग्रीतस्वामी, नन्ददान और गोनिन्दस्वामी महामुजीके पुत्र गोस्वामी अधिकट-नाथजीके शिष्योमें मुख्य थे। इन्हीं आठोंको मिठाकर गोस्वामीजीने 'कष्टमा' स्वापित की, जिसपर सुरदासजी प्रसन्न होकर कहने ठगे ' थापि गोसाई करी मेरी आठ मण्ये छाप'

'बसन्त के क्रीनेन' अभिकती आ पुरत्कशां करान कहु सम्बन्धनो साथः सर्व क्रीर्थनोनो संबद्ध करी नेने शिव शिव पृदित कर्षा छे. भः विकारमां आ पुत्रकार्य केटलाक आग्रापः, अस्वत्र कीर्य-मेंने पण शोध खोळ करी बक्ट कर्षा छे. पकट्टो २३५ क्रीर्यनोनो सा संबद्ध पर्या छे. तथा पार्थण्य-स्वत्यव्य भी पीतक्ष श्रीयद्दारात्री अञ्चानना स्वताकाळिति. सं. १५६० थी १६२०) श्रीयसुद्धनहास्त्री (अनुसानदा र. का. दि. सं. १९६८) क्रेप्यनदास्त्री (अनुसानदा र. का. दि. सं. १९६८) श्रीतस्त्रात्री (अनुसानदा र. का. दि. सं. १९२३) नहद्दास्त्री (अनुसानदा र. का. दि. सं. १९६२) कांना एक कोनंगे छे. भा क्षिकेस कोण ? तेने ऐतिब स्तष्ट मज्युं नगी. मिश्रनसुभोए 'इस्किल' नान्ना कांनेगे उड़ेल की नेने किरेना स्वताज्ञ कि. सं. १०८८ बताव्यों छे. कदाब हिकेस्त्र में अभ्यंत्र क्षिकेस पूर्व गये होण तो वे बना जीए छे. नेते दीने साधोदासा कीनी छे. के क्या साधोदाल ? ते व सांदेश छे. स्थिकंपुओ नेने साधादास होय एस अनुमान करी क्रकार साधोदाल ? ते व सांदेश छे. स्थिकंपुओ नेने साधादास होय एस अनुमान करी क्रकार छे. तेम कत्याल (अ. ८. का. दि. सं. १८४०) 'ज्ञावील (अ. का. दि. सं. १०६२) अनुमान (अ. र. का. दि. सं. १०६२) अनुमान ने एक प्रमुख्यमान मक हना-मान्ना आमक्तरण महीनों वसनने अनुना युपनी साधोदिक कोन्युन वर्णक करना कीनी साथा समय पर बोजना प्रमोन सुरत श्रेत्रीय आयों गुंच्या छे. पुष्टियागित बेच्याने मारे आ स्त्रीत प्रमुख्य हम स्थाप का हना-प्रमुख सुरत श्रेत्रीय आयों गुंच्या छे. पुष्टियागित बेच्याने मारे आ स्त्रीत पुरुषक सह आधीरान-स्वक छे. केटव्यार वर्गीयों देण्यारे परनना सीनीनोता गुसक साट नवस्ता हना. म० विकासाल आ पुष्पकने आता नवसानियाल स्वरूपनी साचीर्य हमें की से सं प्रमुख्य हम स्वर्ण हमें हमें छे. बेचन ना स्वर्णताने वर्णने स्वर्ण के सम्याणात्र हुए से स्वर्ण के स्वर्णन स्वर्ण के स्वर्णन स्वर्ण के सम्याणात्र से स्वर्ण के सम्याणात्र के स्वर्णन स्वर्ण के सम्याणात्र से स्वर्ण के सम्याणात्र के स्वर्णन स्वर्ण के सम्याणात्र के स्वर्णन स्वर्ण स्वर्णन स्वर्ण के सम्याणात्र के स्वर्णन स्वर्ण के सम्याणात्र के स्वर्णन स्वर्ण के सम्याणात्र के स्वर्णन स्वर्ण स्वर्णन स्व

सांची कहों मनपोहन मोगो तो खेळीं तुम सँग होरी।
आजकी रेनि कहाँ रहे मोहन! कहाँ करी वर जोरी।
मुन्देंप पीक पीठि पै कंकन. हिये हार चित्र होरी।
अपने भीके उपर कुछ और चाल चलन कुछ आंरी।
मोहि बतावति मोहन नागर काह मोहि जानित मोरी।
भोर भये आये हो मोहन! बात कहति कुछ जोरी।
मुस्दान प्रमु पूर्मा न कीजे, आह भिलो काह चोपी।
मन माने रंथों करिन नन्दसुन, अब आह है होरी।

मिंगलाके पद प. ८०]

[े] कॉरोनामां 'जजपति' छात छे. एक सिश्रकपु वितोरमां **जजनाय ज्ञासम** जैम जेक स्थाउँ उक्षेत्रम छे. नको तेना प्रकारकारण प्रांतमा देशी कराज जजकीनीमां 'जजपति छार मुक्ती होग से सेमची शक्ते छे.

[े] मुर्गविष्टम नामना कविनुं अंकत कीर्निन आमां संग्रहित छे. तेतुं अंतिया तपासतां सिश्रकपु विनोदना दिनोय जिनामां 'सुर्गविष्ट मह' ना नामनी तथा स्वना-काळ वि० नो उहेल छे. कदाच तेओं कोरीनमां सर्गविष्ट अप नकी होय नो कही न सकाय,

नेदं जीवनमस्मरह्णतिसायम् । किन्तुतवक्या विरहेण प्राणानां गमने प्रति-वन्यं करोनि । कथायाः पुनः यथा तव सामर्थ्यं तथा । साधि पङ्गुणास्मिका मोक्षरायिनी परमानन्दरूपाच......। तव कथा असृत्यिव । असृते भगवद्रभान्यकम् । सर्वेयां मरणादिनिवर्तकं यद्रयं तदसृतशब्देनोच्यते ।

(द. पृ. ता. फ. म. अ. २८ श्हों. ९ पे. ७-१० पृ. ९४)

अधान भा जीवन अवाराधी कृतिमाध्य नथी घरन्तु नारी कथा, विरुद्धां वाणीन कथा नथी देनी. कथा नारा नेवीज मावध्यं मावध है. जेम हो देवाण युक्त है. तेम नारी कथा पण नेवीज है. मोशहरां में पमाननद रहा है. वन्तुनः नारी कथा धीयूच माव है अपना भावस्थास्य है. मावधी स्वाराधीं निवर्षक में कथा ने अपना करूपी करिवाण है. मको प्रमुखी विरुद्ध एक अभा पण मी नथी प्रकार, पण मुख्ता वस्त्रायुक्त पानधील विरुद्ध नहींने भीवी रहा है. कॉलीनोंन और जा उन्हें में स्वाराधी मोबन दक्षा के हैं. मादे वीजवननों आ पुनक्का में स्वाराध वीजियों के निवर्ण मावधील में स्वाराध है. स्वाराध स्वाराधील मुख्य स्वाराधील क्षा स्वाराधील में स्वार

प्रतिपदा ब्रज मात्र कृष्ण सं. १९९० गो० त्र० वि० महाराज.

रीप:-आ लेक्सो कीर्निकारोनो रचनाकाळ-संवतो 'मिश्रवन्यु विनोद' प्रथम भाग अने द्विनीय भागमांची उनायों छे. ळेकक

भोहरि: । विजयने श्रीबालकृष्णः प्रभुः।

. 🔎 प्रकाशकतुं निवेदन 🔌

मेवा भावीशीने मोटा असरना मणबूत कागळना कीर्तनोनां पुस्तकोनां अभावे पडती मुझ्केली पर काने आयो. के तरत ते अपूर्णता पूर्ण करवा पृत्यपाद गोस्वामी कुलकौस्तुम श्रीमद गोकलनायजी वराराजश्रीय आजा आपी तेमज ते विभागवार मकट करवा आदेश थयो, तदनसार आ पुस्तक मकट कर नेओश्रीनांज करकमलोगां अर्पण करी कुतार्थ थाउं छुं.

उच्यसहायनाः-सम्प्रदायना साहित्यना प्रकाशनना पाटे गोलोकबासी श्रेठ काराभाई मळजीप खास अण आप्याना राजीर आपान्तर माटे रू. १०००) एकहमार आपेल. उक्त पुस्तकना वेचाणपुकी बचेली रू. ४५०) साडाचारमोती रक्कम ते ओना बील अने कोडीसीलना पावरनी अरज सामे केबी अटनों पावनां जेनी मांदवाल थना मळेळी रक्कममांथी खरच बाद करतां प्रकाशकने फाळे आवेळी आवरे रू.२६००) बेहजार छसोनी रकम. ह. १५०) जलमो प्यास गो. वा. श्रीमती टस्वाईना बीलनी रुए त्रस्टीओ, शेटो विहलदास दामोदर गोवीं-दत्री. जगजीवनदास गोरथनदास ठाकरसी, मथुरांदास हरिभाई, जमनादास धरमसी आह्य, मुन्दरदास धर-ममी दराज अने प्रकाशके प्रकाशन माटे धीरेजी रक्कम रू. २५) प्रचीन, खांड्याचा शेंड छसनन्ताल रतन जीव आपेज छे. उक्त सहायतामांथी आ प्रत्य प्रकट करवामां आव्यो छे अने बीजा प्रकट थंके. नेमज इस्तजिखित पुस्तको अने छापेला पुस्तको आपनारा चुदा चुदा मन्द्रगश्रीको, गोम्बामी बालको अने बेंग्ययोनी परनका आप्या बहुल तमज बीजी सहायना आप्याबहुल आभार माने हुं.

हस्तिविध्वत पुस्तक आपनाराओ, श्रीमोकुलाधीशजीनुं मन्दिर, १ पुस्तकः श्रीलालजीनं मन्तिरः १ ए. श्रीलालवावानुं मन्दिरः, १ पु. श्री मोर्ट्रमन्दिर ४ ए. जेमांशेठ भगवानदास दलभदास स्टेबनरनी विषया तरफथी भेट आयेला वे पुस्तकोनी समावेश थाय छे.

इयसरीभा केशवजी हरजी, भट्ट सामनी वंदरावन, मानावार्ड, रामकुंबरवार्ड, कीर्यानया ना. ल. नं माहित्य, कीर्निनया जेटाभाईन उ.मुन्द्रदास बालजी चीखलने कवजेशी, शीमारवाला वगुलाल, केसवजीनाइए गोधरानी श्रीआचार्यचरणनी येडकने भेट करेलु पुसक, गो. या. कीर्नीनया नाराणदास गोवीदकीन् विष्णुदासने कवलेवी मळेलुं साहित्य, श्रीनाथजीना सिगार साथे, वि. स. १९८७ ना वर्षमां अंगीकार करें या कीर्तनी कीर्तिनया हरनाथे लखेल, शेठ रणछोडदास वरजीवनदास पासेथी प्राप्त थणले.

पुस्तक, लेख वर्गरे लखवामां मुफ बांचवामां सहायता आपनाराओः—कच्छ मांडबीवाला कीर-त्रानिभा रणछोडदास लायाभाई, अधिकारीकी देवराम जीणाभाई-वेरावल, पुरुपोत्तमदास सुरदास-जायनगर, द्वारकादास भेराम मंबर्ड, पोपटभाई-सामीक गोकलाधीक्षतीना सहवकीतंत्रीआ, देवकी-मन्दनती, श्रीत्राजनीना किस्तिनेशा कनैयाबाल, गिरिधस्टास ज. शाह वृकसेलर कस्भारद्रकडानी दोन्होना मुख्याती अने श्रो अच्युन मेसना मालेकनो किकायन भावे पुस्तक छापी आप्याबदल अने एलक अने कीर्तन संसोधनम् कार्य मयुरावासी पण्डिन मवाहिरलाले जुन रक्कम लई करी आप्या वहल आभाग गामें हो. दासानदास-

पोप कृष्ण पंचमी स्वीचार वि. सं. १९९० | बस्बर्ट,

त्रीकमदास चकुभाई ना

भग्वदस्याण.

श्रीहरिः

बसंत-अनुक्रमणिका अरु विपय-सृचि.

क्रमांक सास्त्री १	ताल-पृष्ट्.	क्रमांक नाल-प्रष्टुः आगमके पद ५
साला १		जागमक पद
 आई ऋतु-बसंतकी गोपीन किये जगायवेक पद ३ 	सिंगार १	२१२ ऋतुवसंत के आगम घ. १४४ १७ देखि सीदेखि ऋतुराज आगम चस्चरी ५
जगायक पद र		१८ नव बसंत आगम नव नागरि धः १०
२ खेळाते वसंत निस पियसँग जा	गी १	मानः
 जागि हो लाल, गुपाल, गिरिच 	ध्यस्तः २	२१६ नव बसंत आगम नीको धः १४६
४ प्रात समें गिरिधरनलाल की कर	ति २	१९ सिन सैन पळानो मदनगई १०
कले ऊके पद २		ग्वालके पद १
ं करों कलेक कहति जसीदा	3	२० खेळत हैं हरि आनंद होगी थे ११
६ करी करें के मदन-गुपाल	3	पलनाकं पद ७
मंगलाके पद १०		२१ अति मुंदर मनि जटित पालनों ., ११
७ आज कह देखियन और ही ८ ऐसे रीब्रे भीब्रे आए री लाल	चौनाळ ४ निनाळ ४	२२ जमोदानिई वर्ग अपनी बार्ट ,, १२ २३ जमोदानिई वर्गअपनी कान्द्र ,, १३
९ खेलिन सरम बसेन स्थाम	धमार ५	शम−गमकलो
९० गोवस्थन की सिखर चार्र्य फू	á., e	२४ मेंस्व पर्यक श्रयनम् चरचरि ४४
१९ तेर नैन उनादे तीन पहर जागे	-	वसंत के पलना.
१२ देखियतुलाउलाउदगडोरे	8	२५ रतन स्वचित को पलना सुंदर थ. १५
१३ फुळी फुळी डोजित कोन भाइ ९४ सम्बीवन फुळे विविध वसंत	9	२६ लजिन विभंगी लाडिचो ति. आ. १६
१५ सहन-त्रीति गोपाल भाव	9	राग-काफी ताल दीपचंदी
१६ साँची कहीं मनमोहन मोसी	<	२७ वरको जमुदाजीकान्दा दी. १७

\$4/\$	ताल-पृष्ठः	क्रमांक र	गल–१प्र∙
असिके पद ९ मान. २८ एकू योज योजो नैंद नैंदन १६६ र केहत ब्रिट्रापन पदं १६ केहत ब्रिट्रापन पदं १८ केहत ब्रिट्रापन पदं १८ केहत वर्ष पदं १८ व्रिट्रापन पदं ११ डोड नवज्याज योगी वर्षान ११ त्राज वर्षा पदं अष्टादी ५. मान. १४ अवजोवय मानी सङ्ग्र कुँते	घ. १७ चो. १०४ ति. ६५ ति. १८ घ. १२२ इ. , १८	१३ आत पंचमे सुभ दिनमी को १४ आत संसेत सबे मिलि समनी १५ आतु मदन वर्गे सांख्यारेगों भा मांचिरका १६ आत सुना दिन समंग पंचमी १० आत स्तुरात सांति पचमी १० आता स्तुरात सांति पचमी १० आता स्तुरात सांति पचमी १० मांकी आत स्तुरात स्पाति पचमी १० मांकी आत समने पचमी स्त्र तमर १० स्वया समी समी समी समी समी १० मांकी आत समी पचमी समी १० समी आत समी पचमी समी १० सम्बर्ग समी समी समी १० सम्बर्ग समी समी समी १० सम्बर्ग समी समी १० सम	यः दे हैं दे
वालु. 3. व्यक्ति त्वज् लता परिवीकत 3. दिग्यंत्र चाडु वयत रावस्य 3. दिग्यंत्र चाडु वयत रावस्य 3. दिग्यंत्र चाडु वयत रावस्य 4. दर्ग रिंड त्रत्र पुत्ती सत्तमहो वर्मत पंचमी के पद् 3. श्री पंचमी वरम संगठ दिन रा श्री देव नरेंदे हो? श्री देव आत वर्मने वरमे रा आहे देव तरेंदे हो?	ધ. २४ તિ. ૨૬ તિ. ૨૬ ધ. ૨૭ ધ. ૨૮ ઝ. ૨૧ ન્યા. ૨૧ વૉ. ૨૧	चर्चाई के प्र ७ ८८ आज वर्धन वर्धायों है १० केसमें प्रमान ओर्ड केमस्त्री १० स्वेजनि वर्धन वर्ध क्रिकेय १० स्वेजनि वर्धन वर्धक्रिय १० स्वेजनि वर्धन क्रिकेय १० वर्धने पर पंकन निहस्त्री १० वर्धने पर पंकन निहस्त्री १० केसमें प्रशासन के प्र १ १० केसमें प्रशासन केसमें	प. ४२ चो. ४३ प. ४० ,, ४५ ,, ४५ ,, ४८ ,, ४८ ,, ४८

क्रमांक	ताल-ग्रष्ट.	क्रमांक	नाल-५इ.
टिपारे के पद ३			
		८३ मदन गुपाल लाउ सब सुम्ब नि	ધ ઘ. દર
६६ खेलाते वसंत गिरिधरन चंद	ધા . ૬ ?	८४ मधु ऋतु ब्रिटाइन आनंद	83 ,,
६७ गोपीजन बहुभ जै मुकुंद	,, 49	१६४ मध् ऋत ब्रिटायन माधर्वा	नि. १०६
६८ निरतत गावति बन्नावनि	चो. ५२	११८ सरस बसेत सखा मिलि खेल	निथ, ८३
निस्त के पद २६		पाग के पद ३.	
६९ उडित बंदन नव अवीर वहु	च. ५४	८५ केमरिसीं भीज्यो बागो भर्यो	ति. ६६
७० ऋतुवसंत तरु लसंत	चो. ५५	८६ खेलाति बसंत आए मोहन	थ, ६६
१५० ऋतु बसंत ब्रिंदावन फूलै	1, 96	८७ खेळित बसंत गिरिधानळाळ	88
७१ ऐसे नवजराज खेळाते वसंत	,, 66		
८६ खेलानि वसेन आएं मोहन अपने		पाग चंद्रिका २.	
!७९ खेळित बसंत राघा प्यारी	¥. ११º.		
१२६ खेलिति मदन गुपाल बसंत	4. <9	^३ ६ आज सुभग दिन बसंत पंचमी	ध, १६
१३६ चार्लचिल रीब्रिंडावन	थ. ८३	८८ मोइन बदन विलोकति अम्बीयन	,, 5 €
॰२ जुबनी देद संग स्थाम मनोहर	चो. ५६	फल के सिंगार १	
१९! देखी ब्रिंदायन की जस विनान	ध. १३१	% ल का संगार र	
०६ नव कुंज कुंज कुंजाति विदेश	4. 00	< ९ फलनकी सारी पहेरे तन	थ. १ ७
०४ नंद नंदन नवल सुभग जसूना	च. ६८		
७५ नंद नंदन रूपभान् नंदिनी	30 ,,	मुक्ट १	
SE नवल बसंत फुल फुले	चो. ५९		
५५ नवल बसंत कम्मीमत बिंदावन	¥. 80	९० देखो ब्रिदावनकी भृमिको	घ. ६८
७८ नवस बसंग नवस बिंडावन खेल	ति घ. ६०	शम १	
so नवल वर्णन नवल श्रिटावन नव		44.7	
८० बन फुले इम कोकिया बोली	,, 59	९१ नवल वसंत बीच ब्रिंटावन	थ, १९
१९६ ब्रिंटावन क्रिटिन नेट नेटन	थ. १३५	सहेरा २	
८१ बिंदावन खेळान हारे जुबती	चो. ६२	4641 (
🤏 ब्रिंदा विषिन नवल वसन	,, 69	९२ खेळाते बसंत बलभद्र देव	¥. 60
१ १ ७ लाल रंग भीने वागे खेलति	थ. ८३	९३ देखो राघा माधव सरस जोरि	69

क्रमाक ताल-पृष्ठ	कर्माक ताल-पृष्ठ.
केमरी वस्त्र १	१९६ नवल बसंत उनए मेघ मोरिक ,, १०!
६३ विविधि वर्मन बनाए चली ध. ७४	९९ बसंत ऋतु आई अंग अंग ,, ७६
पीत, लाल वस्त्र १	मान २
रः अ. बल्सो नवल निकृत घ. ७४	१०१ वसंत ऋतु आई आयो पिय चो. ७७ १२६ वन वन खेलन चली कमल ,, १०१
मान पीत वस्त्र १	१९७ बिंदायन विहरति ब्रज जुवती ,, १०२
२०२ चलि बन बहति सेंद्रस्मेश आर.चो. १३९	ि॰ रंगरंगीलो नंदको लाल ,, ७६
रार चाल बन बहात सद सुगब आ । चा । १२६	१९८ हो हो बोलैं हरिधुनि बन "१०२
दो तीन तुकके पद	सुरकाम १
चोताल १९	१५९ प्यारे कान्डर हो जो तम सु. फा. १०३
९२ अवके बसंत न्यारेहि खेलें चो. ७४	
	चरचरि १
मान १	१४१ आज गिस्सिज सम्माजि च. ९५
ं अर्ड ऋतु चहु दिसि फुर्च बो. ७२	निवाल ५
१३० आई वसेत ऋतु अनुप नुत केत ,, ९७	8२ आज सदनमोडने बने ति. ९५
१४८ उन हि कुंबर कान्ड कमळ नैन ,, ९७	8 ६ नेवलें वसंत फ़ुली भातीकु ,. ९६
^{१३९} उमेगी बिंदावन देखो नवल ,, ९८	मान १
निरत १	१४४ नवल बसंत फूल जाती ति. ९६
'२० ऋतु क्मेन ब्रिंडावन फूले को. ९८	१४९ रही रही विहासी जुमेरी ९६
े : ऋतु वसंत ब्रिंदावन विद्याति ,, ९९	१४६ सब अंग छीटेलामी नीको ,, ९०
११२ ऐतो अक ओरनि मीधे बोरनि ,, १००	
° कबकी हो स्वेलति मोहिसों ,, ७६	धमार ३८
ै कुच गड्वा नोबन मोर चो, १००	११९ श्रीमिरियरलालकी वानिक घ. ८४
१९३ सेलि सेलिंगी कान्डर त्रियन ,, १००	१९४ श्रीमधा प्यारी नवल विहारी थ. ८२
° ८ जोवन मोर रोमाविल सुफल " ७६	१०२ अब जिन मोहि भरो नंद थ, ७०

क्रमांक	ताल	-88·	क्रमांक नाज-१९
१२० अरुन अवीर जिन डारो हो	ध.	<8	१११ बन उपयन ऋतुगात्र देखि 🕠 🦿
			११२ बन्यो छविटो स्याम सस्ति " ८
मान १			१३४ ब्रिटायन फल्यो नव हुलास 🕠 🕬
१२ ! आयो आयो पिय यह ऋत		64	१६५ विद्वरति बन सम्स वसंत 🕠 😘
१२१ आयो आयो १५४ ५६ २५५ १२२ आयो जान्यो हरिज ऋत	"	60	१३६ मुख मुसकनि मन वर्मी ,, ६३
१२३ ऋत् बसंत मुकलित वन		65	१३७ स्तन जटित पिचकाई कर ., ४३
१२८ ऋतु वसंत स्थाम घर आए	**	9,3	१३९ स्नाल गुपाल गुलाल हमार्ग ९:
१०३ केसंरि छींट ऋचिर बंदन	"	92	११३ स्थाम सुभग तन सोभित 🕝 🦿
१२४ कंजबिहारी प्यारीके संग	"	८६	१४० मुनि प्यारीके साल विद्यारी ९
१२५ कम्प्रमित बन देखन चलो	**	69	११५ हो हो हरि खेलति वसंत ८
१०१आ, खेलति जगलकिसोर	97	96	हो, तीन तुकके पद संपूर्ण.
१२६ खेळान मदन गुपाल बसंत	97	29	
१०७ खेलि खेलि हो लडेनी गर्ध		66	आड चोताल १
१०४ विशिधन्त्रात स्म भरे खेली	"	96	१६० देखो नवल बने नवरंग आ. ची. १०
१२ ८ यन वन इय फुले सुमुख	***	41	
१०% चटकीली चोली तन पहेंग	,,	G2	चौताल या भ्रपद ३
। १६ चलि चलि री ब्रिटाइन	17	<3	१६१ कृत् वसंत कृतुमित नव सो. १०
! १५ चलनि पर्यक्त बन देख री	**	132	
१२९ चलो विधिन देखीण गुपाल	,,,	0	वीरी १
१३० जिल्कात छीट छवीली गर्पे	**	69.	१६२ क्रिडिनि बिंडायन चंड बन चो. १०
१०० छीट छवीकी नमसूख	11	49	१६६ शक्षेद्रात । ब्रह्मचन चंद्र श्रम चीर् १०१ १६६ सधि जुआ ज बन्यों हे बसन चीर् १०१
१०८ नवल बसंग नवल बिंदाबन	11	(0	१६६ साथ जुलात बन्या ह बसल चार १०
१०९ पर भूपन मात्र चली भावनी		60	तिताल २
११० प्यारी के मुख पर चोताको	.,	(0	निरत १
१३१ पीय देखी बन छवि निहार	,,	C ?.	1460 2
१३२ फुल फुलेरी चलि देखन	.,	0,0	१६४ मधु ऋतु ब्रिट्सक्स मापकी निः १०१
१३३ फर्जाटम बेली भॉनि भाँनि		9,0	१६५ मोहयो मन आज सम्बी १०

क्रांक ताल	इ-एष्ट्र,	क्रमांक ताल-पृष्टु.
वसीर ३८		मान १
१६६ भी बिंदाबन खेळति ग्रुपाल थे। १८० अदभुत सीभा बिंदाबनकी ११ १६० आह सांबरो होण गलिन थे। १६९ आयो सो यह करतु ११	\$3.0 \$0¢ \$0¢	१८७ तेरी नवल तरूनता नव भ. १९७ १८८ देखति वन रूजनाय आज ,, १९८ १८९ देखि ससी अति आज बन्मो ,, १९९ १९० देखो प्यारी कुत्रविद्वारी ,, १९० १९१ देखो विदायन श्रीकमण्डनेन ,, १९०
१७: खेळाते गिरिधर स्ममगे संग »	111	निरत २
193 संकात गुपाल वर सासीन , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	158 158	१९२ देखो ब्रिंदाचनकी तम बिनान प. १६१ १९८ पिय प्यारी सेले तमुना नांग , १६६ १९३ फाग मेंग बदमाग म्वाळीन , १६२ १९४ फुल्यों चन कसुराग मा , १६५ १९५ बनमार्थात कुळी बमेल माम , १६४ निस्त ३
निरत १ १०९ खेळते क्यंत गथा प्यामी थ	. 119	१०६ ब्रिटायन क्रिडॉन नंद नंदन था, १३५ १९७ विराजित स्थाम (सिरोमिन) ५, १३५ १९९ राजा अनेग मेत्री गुपाल १६०
१८० खेलि खेलि हों लहेंनी ,, १८१ खेलाने वसन गिश्चिमनलाल ,,	. { { { { { { { { { { { { { { { { { { {	भोग समै मुकुट १ २०० धीरजुके आवनकी बनिहारी प. १३८
वीरी १		मान आड चोताल ५ १०१ चलियन निरुषि सत्र आ.चो. १५९
१८३ विजि देखन मेंप् नंदराज . १८२ विजि है भरनि गिरिधरन	. १२६ , १२३ , १ २४ , १२६	पीत वस्त्र मान १ २०२ चलियन बढीने भेद मुगप आ. चो. १३९ २०३ प्यारी नवल नव बन केलि १४०

कर्माक	ताल-पृष्टुः	कर्माक नाल-१४.
२०४ राते पति देदुस्य करि अ	ा.चो. १४०	२१८ प्यारी देखि बनकी बात ,, १४८
२०५ राधे देखि वनके चेन	,, 181	२१९ प्यारी गथा कुंज कुमुम सकेलें १४/
मान तिताल २		२२० फुलि झुमि आर्डबसंत कृतु ,, १४५, २२१ वेगि चलो वन कुंवरि ,, १४०
१४४ नवल बसंत फुली जाती	ति. ९६	रैपर भामिनि चंपेकी कर्ला ., १४०
२०६ फिरि पिछताइगी हो राधा	" 5.8 b	२२३ मानिनि मान छुटावन कारन १०० २२४ लाल करति मनुद्दार री प्यारी ,, १०१
मान चोताल ४		पोटायवे के ७ ताल घमार.
२०७ ऋतु बसंन प्रपुत्तिन बन	चो. १४२	२२५ खेलित खेलित पोडी स्यामा ध. १०१
२०८ कहां आई री तरकि अव	,, १४२	१२६ खेलि फागु अनुराग भरे ही १९१
२०९ मान तजो भजो कंत ऋतु	., 283	१२७ खेलि फागु मुसिकाय चले १००
२१० लाल लिवत लिवतादिक	,, 7,83	२२८ स्त्रेलि वसंत जाम प्याच्याँ १०२
धमार १४ अष्टपदी	?	२२९ खेळि बसंत पिय संग पोडी १५३ २३० प्यानी पिय खेळति वर बसंत १५३
२४ भवलोक्य सम्बी मंजुल कुंजे	ध. २७	२३१ वसंत बनाई चली ब्रज १५४
२११ ऋतु पर्न्टारी मो पे २१२ ऋतु वसंतके भागम आसी	" 588 " 588	आश्रय के १
२१३ ऐसो पत्र लिखि पठ्यो नृप	1, 284	२३२ श्रीबहुभ मभुकरना सागर घ. १५४
२१४ चलि राधे नोहिस्याम बुलारे २१५ देखि क्सन समै बनसुंदरि		असीस के १
२!६ नव बसेन आगम नीको	., १४६	२३३+९४भ+१०३भ=२३५.
२१७ नवल बसंत कुमुमित बिदाब	ev: , , F	खेलि फाग अनुगग जुबनी जन 🔍 !५४

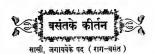
छापसूचि.

कोन सी छाप के कितने पद अरु वे कहां है ? प्रथम अंक संख्या सूचक अरु शेष क्रमांक है.

श्री प्रभचरन (२) २४-३८ श्रीभट (१) ७९ अग्रस्वामी (१) २८ आसकरनजी (१) १२९ काविकेस (२) १९-१५२, कहे भगवान हितरामराय (२) ९-१८० कल्यान (८) ४२-९७-१४१-१४८ १५१-१४९-२०४-२१९ केषांचित (१२) १.२९-५०-६१-६६-७४-१३४-१९६-१९४-२०१-२०८ २२९ कृष्णजीवन लडीराम (१) ४४ कृष्णदास (४१) २-४-६-७-११-१९-१९-३६-३२-३८-६६ -5<-32-32-33-33-42-188-188-180-108-1818-1818-182-182-188-180-१९६-१६८-१६४-१६५-१७०-१७०-१८१-२०६-२१७-२२०१६२-२२६ कंभनदास (१०) ६५-६९ ९६-१०४-१११-१७५-१८४-२०२-२१५-२२५ गदायरदासभी (३) १६७-१८७ १९० गुपालदाम (१) १९२ गोकलचंद (३) १२-१७४-१७८ गोकलवीहारी (१) १८३ गोविंद (४) ६९-५५ १०३ अ १४० चत्रभूतदास (१०) १८-३१-४९-५१-८३-८७ १०३-१३३-१३७-३१६ छीतस्याधि (५) १०-४७-१४९-१२७-२१० जगतराह (१) ८५ जगसाथ कविराह (१) ११० जनगोविंद (३) २१ १३६-१९७ जनत्रिलोक (१) ८६ जनदास (१) ६२ जयदेवजी (३) १८-३६-३७ जाहा कृष्ण ११. १८२ दामोदर (१) २३० द्वास्किसत्री (२) ५७-७३ घोंधी (१) १२० नंददासत्री (३) १००-१४६ १८३ परमानंददाम (१८) ५-१५-२०-३०-३३-४२-४५-१०२-१२६-१२७-१४०-१६८-१७१-३०० १०४ २०६-२१४-२३१ पुरुपोत्तम (१) ६४ अनाशीसनी (५) १४-९४-१०२-१११-११२ अनुपति (४:२?२-२१६-२२७-१२८ व्यास (२) १७९-१८९ व्यास स्वामिनि (२) ११६-१२४ माधोदास (३) ६ ०-१८४-१९० मानेकचंद (६) ९६ मुरलीदास (६) ९० रघुनाथदाम (१) ६४२ रघुनीर (१) २०७ समिक (७) १२-६८-१४२-१६२-१०९-२२४-२३२ समदासत्री (२) ५६९१ लघु गुपाल (१) ६० विष्तुदास (२) ७०-१६२ सरस रंग (२) ९४ भ, ९२ स्यामदास (१) ४६ मुपरगड (२) १०६-११७

सन्दामत्री (२०) १२६६-१२-१०-४०-५४-५६-७१-८०-८८-९२-५८-१२६-१११ १२५-१३० १२१ १२८-६१६-१६०-४६६-१८६-१७१-१८८-१९१-१९८-१११-१११-१११

सरम्याम (१) १३-६१-१६८-६०६ हरिजिबन (१) २९-१६६ हरिदास (श्रीहरिसयमी) १४ हरिदास (२) ४६-१९६ हरिदास स्वामी स्थामा (१)-८-९६-६०-९१४-११६-१४४-१०३ १४४-२२२ हरिबह्रम (१) १०१ स्विहरिसंस (१) ५२ ८४-१७३-११८,



खे.

॥श्रीकृष्णाय नमः॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥साखी॥आई ऋतु-बसंतकी गोपीन किये सिंगार॥ कुमकुम बरनी राधिका सो निरखति नंदकुमार ॥ १॥ आई ऋतु-बसंत की मौरे सब बनराइ॥ एक न फुळै केतकी औं फूळी बनजाइ ॥ २ ॥ श्री गिरि-राजधरनधीर लाड़िलें। ललन-बर गाइए॥ श्री नव-नीत प्रिय लाडिलो ललन-बर गाइए श्री मदन-मोहन पिय लाडिली ललन-बर गाइए॥३॥ कुंज कुंज कीडा करें, राजत रुप-नरेस॥ रसिक, रसीटी, रसभरचौ, राजत श्रीमथुरेस ॥ ४ ॥ श्रीगिरीराज-धरनधीर लाडिलौ ललन बर गाइए ॥ 🖫 ॥ अथ जगायवेके पद् ॥ खेळत बसंत निस पियसँग जागी ॥ सखी-बृंद गोकुछ की सीमा गिरिधर पिय पद-रज अनुरागी ॥ १ँ॥ नवल-निकुंज में गुंजत मधुप,

कीर.पिक, विविध सुगंध छींट तन लागी॥"ऋष्ण-दास" स्वामिनी जुवति-जूथ चूरामनि रिकवत पान पति राधा वड-भागी ॥ २ ॥ १ ॥ 🚟 ॥ जागि हो लाल, गुपाल, गिरिबरधरन, सरस ऋतुराज बसंत आयौ॥ फुले द्रमवेली, फल, फूल, बौरे, अंब, मधुप, कोकिला कीर सैन लायौ ॥१॥ जावौ खेलन, संबै ग्वारु टेरत द्वार, खाऊ भोजन मधु, घृत, मिलायौ॥ सखी-ज्रथन लीयें आई है राधिका मच्यो गहगड-राग रंग छायौ ॥२॥ सुनति मृदु-बचन, उठे चौंक नंदलाल,करलीयैं पिचकाई सुवल बुलायौ॥निरिख मुख, हरिब हियें, वारि तन मन प्रान, सूर येहि मिसहि गिरिथर जगायौ ॥३॥२॥ﷺ॥ पातसमैं गिरिधरनलाल कों करति प्रवोध जसोदा मैया॥ जागों लाल, चिरैयाँ बोलीं, सुंदर मेरे कुँवर कन्हैया ॥ १ ॥ हरुधर सँग ठैहौ मनमोहन, खेलन जाउ

त्रिंदावन धाम॥ ऋतु वसंत प्रफुछित अति देखियत सुंदर हे कालिंदी ठाम ॥२॥ जननि-बचन सुनति मनमोहन, आनँद उर न समाइ॥ 'ऋष्ण दास' प्रभृ बेगि उठे जब, जननि-जसोदा कंठ लगाइ॥ ३॥ ॥३ 🖺॥ कलेऊके पद् ॥ करों कलेऊ कहति जसौदा, सुंदर मेरे गिरिधरलाल ॥ दूध, दही, पकवान, मिठाई, माखन, मिसिरी, परम-रसाल ॥१॥ पाउँ खेलिन जाऊ लड़ैते, संग लेहु सब ब्रज के वाल ॥ चोवा, चंदन, अगर, कुंमकुमा, फेंटन भरी अवीर गुलाल ॥२॥ कीयौ कलेऊ मन की भायौ, हलधर संग सकल मिलि ग्वाल॥ कीयो विचार फागु-खेळिन को, 'परमानँद' प्रभु नैन-बिसाळ॥३॥१।ﷺ करों कलेऊ मदन-गुपाल ॥ मधु, मेवा, पकवान, मिठाई, भरि-भरि राखे कंचनथाल ॥१॥ माँखन. मिसिरी, सद्य-जम्यौ-दधि, औंट्यौ दुध, अरु सरस

मलाई॥ आप हु खाओ ग्वालन सँग लैंकें, पार्छें खेली सघन-बन जाई ॥२॥ करत कलेऊ रामकृष्ण दोउ, औरहु संग लये सब ग्वाल॥ करहि बात फागु-खेलनिकी, 'कृष्ण दास' मनमोहन लाल॥३॥ ॥२॥डा॥ मंगला के पद ॥ ताल ध्रुपद ॥ आज कछ देखियत ओर ही वानिक प्यारी तिलक आधे मोती मरगजी मंग॥ रसिक कुँवर संग अखारे जागी सजनी अधरसुख निसि बजावति उपंग ॥१॥ नव निकंज रंग मंडप में चत्य भूमि साजि सेज सुरंग॥ तापै विविध कल कृजित सखी सुनति स्रवन वन थिकत कुरंग॥ २॥ 'कृष्ण दास प्रभु नटवर' नागर रचित नयन रित पति व्रत भंग ॥ मोहन लाल गोवरधन धारी मोहि मिलन चिल नृत्यक अनंग ॥३॥१॥歸॥ ताल तिताल ॥ ऐसे रीजे भीके आए री लाल गावत हे धमारि ॥होंजु गई री

भोर बिंदावन भरि छिए अकवारि ॥ १ ॥ मुर्थरा अलक बदनपर बिथुरी निज करसों अली आप सकोरी ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी मिली हे विरह हिरदैरी॥ २॥ २॥ 🖫 ॥ ताल धमार ॥ खेलति सरस बसंत स्याम वृपभानु कें आँए देखें री॥ चलों सिरावन नैन सखी री जनम सुफल करि लेखें री॥१॥ सौंधे भीने केस साँवरो मदन मनोहर भेखें री॥कृपावंत रस नैन चूहचूहे कछुक उठत मुख रेखें री ॥२॥ व्रज बनिता बनि वनि आँई सब स्यामसुँदर मुख पेखें री॥ कहि भगवान हित राम राई प्यारी राधाको भाग विसेखें री ॥३॥३॥धा गोवरधन की सिखर चारु पे फुळी नव माधवी जाई॥ मुक्छित फुळ, दुळ, सघन मंजरी, सुमन सु सोभा बहुत हि भाइ ॥१॥ कुस-मित कुंज पुंज दुमबेली निरकर करति अनेक ठाइ॥

'छीत स्वामि' ब्रज जुवति जुथ में विहरत हैं गोकुरु के राइ ॥ २ ॥ ४ ॥ 🗯 ॥ तेरे नैन उनीदे तीन पहर जागे काहे कीं सोवत अब पाछली निसा॥ कछू अलसत बीच स्नम लागत श्रीपति न जाइ अधिक रिसा ॥१॥ गिरिधर पिय के वदन सुधा रस पान करित नाहि जात तृसा ॥ एते कहित होइ जिनि पगटित रित रस रिपु रिव इंद्र दिसा॥२॥ तुव मुख जोति निरखति उडपति मगन होत निरखि जलद खिसा॥'कृष्ण दास' बिछ बिछ बैभव की नव निकृंज ग्रह मिलत निसा ॥३॥५॥ देखियतु (लखियतु) ठाठ ठाठ हम डोरे ॥ काके सँग खेळे बसंत करि निहोरे ॥१॥ सजलताई पगट मनौं कुँकुम रसबोरे ॥ अरुनताई भई गुलाल, बंदन सित छोरे॥२॥अंजन छिव लागत मनों चौवा छिब चोरे ॥ बरुनी मानौ नृतन पहुव अघर भये सिधोरे ॥३॥ कबहू रस

मानों बिबिध तान तोरे ॥४॥ देखियत अति मिथ-

फू.

लताई मांऊ ऊक फोरे ॥ काहे कीं कहति कछ जाने मन मोरे ॥ ५ ॥ सनमुख व्हे कवह मुख फेरि जात लजोरे॥ "रसिक पीतम" मेरें तुम आए काके भोरे ॥ ६ ॥ ६ ॥ 写 ॥ फूळी फूळी डोळित कोन भाइ॥ आँन भाँति बचन रचन आँन भाँति भुमि धरत पाइ॥ १॥ जानत हों तेरे मन की सजनी, उर आनंद और हियें चाँई॥ सुनि 'ऋष्ण दास' अँग अंग फुळी मानों मिले गिरिधरनि राई ॥ २ ॥ ७ ॥ 写 ॥ सखी ब्रज फुले विविध बसंत ॥ फुले मोर, कमुद, सरसी अरु, फूले अलि, जल जेत ॥ १ ॥ फूले ड्रम बेली फूले द्विज गावत गुन-वंत॥ 'ब्रजाधीस' जन फुले लखि अति सुख फुले मिलि हरि कंत ॥ २ ॥ ८ ॥ 写 ॥ सहज-प्रीति

साँ.

वसंतके मंगलाके पद.

गोपार्छ भावे॥ मुख देखें, सुख होइ सखीरी, पीतम नैन सौं नैन मिलावै ॥१॥ सहज पीति कमल अरु भानें सहज-पीति कमोदिनि चंदे ॥ सहज-पीति कोकिला बसंते, सहज-पीति राधा नँदनंदे ॥२॥ सहज-पीति चातक अरु स्वांते, सहज-पीति धरनी-जलधारे॥मन,ऋम, बचन, दास 'परमानँद' सहज पीति कृष्ण अवतारे ॥३॥९॥धा॥ साँची कहों मनमोहन मोसौं तो खेळीं तुम सँग होरी॥आजकी रेनि कहाँ रहे मोहन, कहाँ करी वरजोरी ॥१॥ मुखर्पे पीक, पीठिपें, कंकन हियें हार विनु डोरी॥ जिय में और उपर कछु और चाल चलति कछ् ओरी ॥२॥ मोहि वतावित मोहन नागर काह मोहि जानित भोरी॥ भोर भर्यें आये हों मोहन बात कहिन कछु जोरी॥३॥'सुरदास' प्रभु एसीन कीजे आइ मिलों काह चोरी ॥ मन मानें त्यों करित

दे.

नंद स्रत अब आई हैं होरी ॥ ४ ॥ १० ॥ 写 ॥

आगमके पद् ॥ ताल चरचरि ॥ देखिरी देखि ऋतुराज आगम सखी सक्छ वन फुळ आनंद छायो॥ ताल कदली धुजा उमगि अति फग्हरे

संग सब आपुनी फौज लायो ॥ १ ॥ कोकिला कीर गुनगान आगें करें भ्रंग भेरी छीए संग आयो ॥ पुरत निसान घनघोर मोरन कीयो करत पेक सब्द गज अति सहायो ॥ २ ॥ फिरत तहां

सं पदचर चकोरन बहु सेंछ रथ चमक चढि धमक धायो ॥ उडत वारन बहु कुंमकुमा केसरि

तियनके कुचन तिक तमकरायो ॥३॥ पंच छे बान चहुँ ओर छाए प्रथम चांपले आपु हाथन चलायो॥ दोर कर सोर धप धाय लरति अति घेरि चहुं ओर गढमान ढायो ॥४॥ परी खळवळी सब नारि उर मदनकी मिलन मन स्थाम अंचल फिरायो॥ जीति

सब सुभट 'ऋष्णदास' बिंदा विपिन आय गिरि-धरनकों सीस नायो ॥५॥१॥%॥ ताल धमार॥ नवबसंत आगम नव नागरि, नव नागर-गिरिधर सँग खेलति ॥ चोवा, चंदन, अगर, कुंमकुमा, ताकि ताकि पिय-सनमुख मेलति ॥१॥ पुरुपाँजलि जब भरति मनोहर, बदन-ढाँपि अंचल गति पेटिति॥ चत्रभुज प्रभुः रसरास रसिक कौं, रीकि रीफि सुख-सागर फेलति॥२॥ताल धमार ॥ सजि सैन पळानो मदनराई॥ अबळन पर कोप्यो हे रिस्याइ ॥ कुंजर हम मदगज पठास भेभीत भयो नेक अति उदास॥ मोर महाबित चढे हे धाय॥ रुछित ठाठ पाखर बनाइ॥३॥ अंब सुभट पेहेरें मुनाइ वट वेरीया अंजानदाइ॥ त्रिविधि पवन चंचल तुरंग ॥ उडि रजपत कुकि अति उतंग ॥४॥ कद्की दल बेरख फरहरात ॥ सहेचरीयां चाटगधर

बसंतके ग्वाल पलनाके पद. पिपात ॥ कमल नैन कोकिला अति अनृप ॥ तृप-

कदार सुक कपटरूप ॥५॥ वाजे गाजे निर्फर

निसान ॥ भमर भेरि मिलि करत गान ॥ रुपिकेस प्रभु विन गुपाल ॥ केसें विहाय इह कठिन काल ॥६॥२॥ 🕾 ॥ ग्वालके पद ॥ तालधमार ॥ खेळत हैं हरि आनंद होरी ॥ करतल ताल बजावत गावत राम ऋष्णकी जोरी ॥१॥ ऋतु कुसुमाकर कामदेव पिय माखन दृध दहीकी चोरी ॥ जाके भवन कछु नहि पावत ताके चले उठि भाजन फोरी ॥२॥ देखत गोपी सुंदर ठीठा घूंघट और हिस मुख मोरी ॥ 'परमानंद' स्वामी बहु रंगी सब यों सुख देखि कर पैंरी ॥३॥१॥ध्वा पलनाके पद्॥ ताल धमार ॥ अति सुंदर मिन जटित पालनों फूलत लाल विहारी॥ खेलति फागु सखा सँग लीनें नाचित दे कर तारी ॥१॥ घर घर तें आई बनि बनिकें

१२ ज. पिहरें नौतन सारी॥ तनक गुलाल अबीरन लैकें छिरकति राधा प्यारी ॥२॥ गावति गारि आइ आंग-नमें प्रमुदित मन सुकुमारी ॥ चौवा चंदन अगर कुंमकुमा देति सीस तैं ढारी ॥३॥ छपटि रहे तन वसन रंग में छागत हैं सुखकारी ॥ देखति विवस भये मनमोहन भरि लीनें अँकवारी ॥४॥ मिसहीं मिस ढिग आइ पालनों जुलवत हैं ब्रजनारी॥ अवीर गुलाल लगाइ कपोलन हँसति दे दे कर तारी ॥५॥ तन मन मिछी पान प्यारे तें, नोतन छवि वाढी अति भारी ॥ सिथिछित वसन मुक्छित कवरी मनो प्रेम सिधु तें टारी ॥६॥ इह सुख ऋत् वसंत ठीलामें वाल केलि सुखकारी ॥ सरवसु बारि देति प्यारे पे जन गोविंद बलिहारी ॥७॥१॥ 🖫

ताल धमार ॥ जसोदा नहिं वरजे अपनों बाल ॥ अपनों वाळ रसिया गुपाल ॥ध्रु०॥ स्नान करन गई

जमुना तीर ॥ कर कंकन अभरन धरे चीर ॥ मेरी जल प्रवाह तन गई है दीठि॥ पाछ ने कान्ह मेरी मलति पीठ ॥१॥ यह अन्न न खाई मुख पीवत खीर ॥ यह केतीक बार गयों जमुना तीर॥ हों बारोंरी ग्वालिन तेरो ग्यान ॥ यह पलना फुळे मेरों बारों कान्ह ॥२॥ ब्रिंदावन दीखें में तरुन कान्ह॥ घर आइ बैठै व्हे सयान॥ उठि चळीरी ग्वाछिन जिय उपजी लाज 'स्रदास' ए प्रभुके काज ॥३॥२॥धा। तालधमार॥ जसोदा नहीं वरजे अपनो कान्ह ॥ अपनो कान्ह सुंदर सुजान ॥१॥ जल भरन गई जमुनाके घाट ॥ नहीं जान देति धर रोके बाट ॥२॥ कबहुं ऊगरि कहे छावो दान ॥ ऊपट चीर करे खैंचतान ॥३॥ पय पीवत घुट्रन चलत लाल ॥ कालिंदी तट गयो कौन चाल ॥४॥ तेरी बात सुनित मोय हास्य आत॥

यह पुरुना फुलत कछु नाहि खात ॥५॥ गौ चारत निरखे तरुन स्याम ॥ सब छलत फिरै करै ऐसे काम ॥६॥ सकुचाय ग्वाठि रही मुख निहारि॥ 'सूर' स्याम की लीला अपार ॥ ७ ॥ ३ ॥ 쯝 ॥ ताल चरचरि॥ राग रामकली ॥ प्रेंख पर्यंक शयनम् ॥ चिरविरहतापहरमति रुचिरमीक्षणं-प्रकटय प्रेमायनम् ॥ध्रु०॥ तनुतर द्विजपंक्तिमन्ति छितानि हसितानि तव वीक्ष्य गायिकानाम् ॥ इयदवधिपरमेतदाशयासमभवज्ञीवितंतावकीनाम ॥ १ ॥ तोकता वपुपि तव राजते दृशितु मदमा-निनीमानहरणम् ॥ अग्रिमे वयसि किम् भावि कामेऽपि निज गोपिका भाव करणम् ॥२॥ व्रज युवती हद्य कनकाचला नारोदुमुत्सुकं तव चरण-युगळम्॥तेन मुहुरुन्नमनमभ्यासमिव नाथ सपदि कृम्ते मृदुल मृदुलम् ॥३॥ अधिगोरोचनातिलक- ₹.

मलकोद्रमथितविविधमणिमुक्ताफल विरचितम्॥ भूपणं राजते मुग्धतामृतभरस्यंदि वदनंदु रसितम् ॥४॥ भ्रुतटेमातृरचितांजनबिंदुरितशयितशोभया-द्रग्दोपमपनयन् ॥ स्मरधनुपि मधुपिबन्निछराज-इव राजते प्रणयिसुखमुपनयन् ॥ ५ ॥ वचनरच-नोदारहाससहजस्मितामृतचयैरार्तिभरमपनयन्॥ पालय सदास्मानस्मदीयश्रीविञ्डलेनिजदास्यमुप-नयन् ॥६॥४॥ 🖫 ॥ ताल धमार ॥ रतन खचित को पलना सुंदर फूलत नँदके लाला ॥ नवसत साजि सिंगार सुंदरी कुछवत है गोपाछा ॥१॥को-ऊगावत कोऊ जांऊ बजावत ढफ है कोऊ बजावें॥ धिधिकिट धिधिकिट मुदंग करत है गति मै गति उपजावें॥२॥ चोवा चंदन छिरकि छिरकि कें लालन रगमगो कीनौं॥ अवीर गुलाल उडाइ खिलावत पिचकाई रंग भरि लीनों ॥३॥ लाल लाल बादर

भये नभमें देखतहीं बनी आवे॥ चुचकारत मुख-मांडत सब मिलि मनहि मन मुसक्यावे ॥ ४ ॥ निरिंव निरिंव मुख कमल मनोहर प्रेम विवस भई गोपी ॥ मगन भई तनकी सुधि भूळी कुळ मरजादा लोपी॥ ५॥ केसरिकलस सीस पैढोरत हो हो किह बोलैं॥ग्वालबाल उनमत व्हे नाचत गारी गावत डोहैं ॥६॥ प्रफुलित मन यह फागु खेित में चहुं दिसि आनँद छायो ॥ 'कुँभनदास' लाल गिरिधरनकों यह विधि लाड लडायों॥०॥ ॥५॥ 🗯॥ तितालके आड चोताल ॥ ललित त्रि-भंगि लाडिलो ललना ॥ त्रिंदावन गहवर निकुं-जमें जुवतिन भुज कुलत है पलना ॥ १ ॥ भा-मिनि सुरत राधा सुखसागर चितवनी चारुविरह दुःख दलना ॥ जमुना तट असोक विथिनमें कंध वाहुर्धार चळना ॥२॥ नृपुर कणित चरण अंबुज

दासं ' प्रभु नखशिख मोहन गिरिधरलाल प्रेमरम खिलना ॥ ३ ॥ ६ ॥ 🖫 ॥ राग काफी ताल दीप-चंदी ॥ बरजो जसुदाजी कान्हा ॥ टेक ॥ में जमुनाजल भरन जातही मारग निकस्यौ आना॥ बरजतही मेरी गागर फोरी है अवीर मखसाना॥ .सखी सब देति है ताना ॥ १ ॥ मेरो छाछ पछ-नामें फुलै वालक है नादाना॥ ए का जानें रसकी वतियाँ का जानें खेल जहांना ॥ कहां तुम भूली ग्याना ॥२॥ तम सांची, तमरों सत सांचो हमहीं करत वहाना ॥ 'सूरदास' त्रजवासिन त्यागे त्रजसी अंत न जाना ॥ करो अपनौ मनमाना ॥३॥७॥ ॥ बीरीके पद ॥ ताल धमार ॥ एकु बोल बोलो नँद नँदन तों खेलों तुम संग ॥ परसो जिन काहकों प्यारे आन अँगना अंग ॥ १ ॥ वरजति हों बीरी

काह की जसुमति सुत जिनि छेहु ॥ परिरंभन आिंगन चुंबन नैन सैन जिनि देह ॥२॥ मेरे खेल वीच कोऊ भामिनि आइ लाल की भरि है॥ पान-नाथ हों कहे देति हों मो पे सही न परि है ॥३॥ प्रभु मोहि भरों भरों हों प्रभु कों खेळो कुंज बिहारि॥ अग्र स्वामी सौं कहति स्वामिनी रँग उपजेंगो भारी ॥ ४ ॥ १ ॥ 🚟 ॥ ताल विताल ॥ गावित वसंत चिं। वने वीर वागे ॥ वलुभ रिकाईवे कीं मिली अनुरागे ॥१॥ इक तों पहिरावे बागो इक सींधों लांवें ॥ इक तों बदन छिरके इक अवीर उडावे ॥ २ ॥ इक तों पान खवावे इक दरपन दिखावे ॥ इक तो पंखा करें इक छै चमर दुरावे॥३॥ आरति करि कें सब किये मन भाये॥ ब्रिंदावन चंद बहु भाँति रिकाये ॥४॥२॥ﷺ॥ ताल धमार ॥ देखो रमिक ठाठ वागो रसाछ॥ खेळित बसंत पिय

रसिक बाल ॥ धु० ॥ घोष घोषकी सुघर नारि॥ रुप रंग सब, इक सारि॥ गावति ज़ुरि मिलि मीठी गारि ॥ हँसति कुंमकुमा सीस डारि ॥ १॥ नव बसंत आभरन अमोल॥ सारीमें कलमल ककोल॥ इग अंजन भरि मुख तँबोछ ॥ हुछसति बिछसति भई छोछ॥ २॥ इक ऋष्णागर छै रही हाथ॥ लपति उरसि भुज प्रिया साथ ॥ सौँधेमें बोरे गिरि-धरन नाथ ॥ चोवा बहि चल्यो कच पाग माथ ॥ ३ ॥ इक कंज पराग लगावै गाल ॥ इक गृंथि कुसम पहरावे माल ॥ गहि रही कटि तट जटित लाल ॥ मनौं निकरि नील तरु कर मुनाल ॥४॥ उडित हैं बंदन और अबीर ॥ अरुन पीत भयो स्याम चीर ॥ सुबल बगरमें बहुत भीर ॥बरखति पिचकारिन रंग धीर ॥५॥ कौस्तुभ मनि कौंधति भिंज गात ॥ बंदन भीतर सगबगात ॥ पान खाति

मुसिकातिं जात ॥ किलकि किलकि सखी करति बात ॥६॥ बाजिति तील मृदंग चंग ॥ सारंगी सुर बीन संग ॥ भरति भरावति नैन रंग ॥ निरखति विन आर्वे मींह भ्रंग ॥ ७ ॥ सिंघ पौरि ओर बज अवास ॥ चंदन बादर कियो निवास ॥ फैलि रह्यो सौरभं सुवास ॥ रसमें रसमय पिय विलास ॥८॥ इक स्रवनिन कहति चोखि॥ स्याम ठाठ अँग अंग पोखि॥ हसति श्रीदामा सखा तोक ॥ फागु-नकी हमें कछू न धोख ॥ ९ ॥ रित नाइक छवि अति अनूप ॥ नव पहुव अभिनव त्रज सरुप ॥ श्री भट परमानंद जूप ॥ आनंदित श्री नंदराइ भूप ॥१०॥३॥।।।।। ताल धमार ॥ दोऊ नवललाल म्वलित वसंत ॥ आनंदकंद गिरिधरनचंद ॥धु०॥ नवल कुंज द्वम नवल मोर ॥ नवल कुसुम सम मथुप सोर ॥१॥ नव छीछाँबर नवल पीतपट नवल अधर मुख बीरी दंत॥नवरस केसरि नवल अग्गजा नवलगुलाल अबीर उडंत ॥२॥ नवल गुपाल नवल व्रज जुवती नवल परस्पर सुख अनंत ॥ 'चत्रभू-जदास' दरस दगलोभी नवल रुप गिरिधरनचंद ॥३॥४॥ 🖫 ॥ ताल ध्रुपद ॥ नवल वसंत खेळत गोवरधनधारी ॥ मोहनके संग बनी प्रमुदित ब्रज-नारी ॥१॥ तरनि तनया तट कुजित सुकुमारी ॥ मधुर बंदी गावत जे त्रिंदावन चारी ॥ २ ॥ कुस्-मित दुम राजें बन भामिनि सुखकारी॥ कुँकुम मृगमद कपूर धूरि रस बिहारी॥३॥ विविधि सुमन वरखत पिय कामिनि सुखकारी ॥ मलय पवन कुमुद कंज दल पराग देति हारी ॥४॥ चरवित तांबुल मुख जुवतिन देति किलकारी ॥∺कृष्ण-दासं प्रभू श्रीमुख निरखत बिल बलिहारी ॥५॥ ॥५॥鍋। ताल धमार ॥ लालन सँग खेलन फागु

चली ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा छिरकत घोप गली ॥ १ ॥ ऋतु बसंत आगम नवनागरि जोबन भार भरी॥ देखन चली लाल गिरिधरिनकों नँदजू के द्वार खरी ॥ २ ॥ राती पियरी चोछी पहेरें नौतन कुमकि सारी ॥ मुखिह तँबोल नैंनमें का-जर. देति भामती गारी ॥ ३॥बाजति ताल मृदंग, बाँसुरी, गावत गीत सुहाऐ ॥ नवल गुपाल, नवल व्रजवनिता. निकसि चोहटें आऐ ॥४॥ देखों आइ कृष्ण जु की लीला बिहरत गोकुल माहीं॥ कहत न वने दास 'परमानँद' यह सुख अनत जु नाहीं ॥५॥६॥ङ्खा।अष्टपदी तालधमार॥अवलोकयसखि मंजुल कुंजे ॥ रमयतिगोकुलरमणीरिहगोकुल-पितरिक्कोकिलपुंजे ॥ भ्रु० ॥ माधविका-त्रतिकारिकारिणीरागिणीरुचिरवसंतेत्रिविधपवन कृतविरहवधूजनमदनन्दपतिसामंते ॥ १ ॥ किंशु-

ककुसुमसमीकृत द्यिताधररसपानविनोदे ॥ मधु-पसमीहितवकुळमुकुळमधुविकसित सरसिमोदे ॥ २ ॥ नवनवमंजुरसालमंजरीबोधितयुवजन-मदने ॥ दयितारदनसमद्युतिमुकुछितकुंद्चिंग-स्मितवदने ॥ ३ ॥ युवतीजन मानसगतिमानम-हागजमदमृगराजे ॥ कोकिलकलकृजितविरहान-लतापितपथिकसमाजे ॥४॥ विततपरागकुसुमसंवं-धिसदागतिवासितगहने ॥ कुसुमितकिंगुककैतव-विस्तृतविरहिदहनवनदहने॥५॥प्हवकुसुमसमेत-विपिनविस्मारितयुवगणगेहे ॥ मदनदहनदीपन-विद्रावितविरहिदीनजनदेहे ॥ ६ ॥ जगतिसमा-नशीततदितरविरचितनिजरुचिराकारे॥ वनिताज-नसंयोगसेविजनजनितानंदसुभारे ॥ ७ ॥ इति-हितकारिवचनमतिमानिनिमानयगोकुळवासे कुरुरतिमतिशयकरुणारसवतिवितरमतिहरिदासे ॥

॥८॥१॥५%॥ ताल धमार ॥ लितलबङ्गलता-परिशीलनकोमलमलयसमीरे ॥ मधुकरनिकरकर-म्बितकोकिलकृजितकुञ्जकुटीरे ॥ १ ॥ विहरति हरिरिह सरस वसंते नृत्यति युवतिजने न समं सिख विरहिजनस्य दुरन्ते ॥ ध्रु० ॥ २॥ उन्मद्-मदनमनोरथपथिकवधुजनजनितविलापे॥ अलि-कुळसंकुळकुसुमसमूहनिराकुळवकुळकळापे ॥३॥ मृगमदसौरभरभसवशंवदनवदलमालतमाले॥ यु-वजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजारे ॥ ४ ॥ मदनमहीपतिकनकदंडरुचिकेशरकुसुम-विकासे ॥ मिळितशिळीमुखपाटळपटळकृतस्मरत्-णवित्यासे ॥ ५ ॥ विगिितत्यज्जितजगद्वत्योकनत-रुणकरुणकृतहासे ॥ विरहिनिकृंतनकुंतमुखाकृति-केनकीदंतुरिताशे ॥ ६ ॥ माधविकापरिमछछछिते नवमालिनजातिसुगंधौ ॥ मुनिमनसामपि मोहन-

कारिणि तरुणाकारणवन्धौ ॥ ७॥ स्फुरदतिमुक्त-लतापरिरम्भणमुकुलितपुलकितच्ते ॥वृन्दावनवि-पिने परिसरपरिगतयमुनाजलपते ॥ ८ ॥ श्रीजय-देवभणितमिदमुदयति हरिचरणस्मृतिसारम्॥ स-रसवसन्तसमयवनवर्णनमनुगतमदनविकारम्॥९॥ ॥२॥ 🖫 ॥ ताल तिताल ॥ विरचितचाटुवचन-रचनं चरणे रचितप्रणिपातम् ॥ संप्रति मंजुलवंजु-लसीमनि केलिशयनमनुयातम् ॥१॥ मुग्धे मधु-मथनमनुगतमनुसर राधिके ॥ धु० ॥ घनजघन-स्तनभारभरे दरमन्थरचरणविहारम्॥ मुखरितम-णिमंजीरमुपैहि विधेहि मराछनिकारम् ॥ २ ॥ शुणु रमणीयतरं तरुणीजनमोहनमधुरिपुरावम्॥ क्समशरासनशासनबन्दिन पिकनिकरे भज भावम् ॥ ३॥ अनिलतरलकिसलयनिकरेण करेण लतानिक्रम्बम् ॥ प्रेरणमिव करभोरु करोति गतिं २६

स्म. प्रति मुंच विलम्बम् ॥ ४ ॥ स्फुरितमनंगतरंगव-

शादिव सूचितहरिपरिरम्भम् ॥ पृच्छ मनोहरहार-विमलजलधारममुं कुचकुम्भम् ॥ ५ ॥ अधिगत-मखिलसखीभिरिदं तव वपुरिष रतिरणसज्जम्॥ चण्डि रणितरशनारवडिण्डिममभिसर सरसमल-ज्जम् ॥ ६ ॥ स्मरशरसुभगनखेन करेण सखीम-वलम्ब्य सलीलम् ॥ चल वलयकणितैरवबोधय

हरिमपि निजगतिशीलम् ॥ ७॥ श्रीजयदेवभणि-तमधरीकृतहारमुदासितरामम् ॥ हरिविनिहित-मनसामधितिष्ठतुं कण्ठतटीमविरामम् ॥८॥३॥ध्ना। ताल तिताल ॥ स्मरसमरोचितविरचितवेशा॥ ग-लितकसमभरविललितकेशा ॥ कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥ घु० ॥ १ ॥ हरि-परिरम्भणविकतिविकारा ॥ कुचकलशोपरि तरिल-

नहारा ॥ २ ॥ विचलदलकलिताननचन्द्रा ॥

तद्धरपानरभसकृततन्द्रा ॥ ३ ॥ चंचळकुंडळद्-छितकपोला ॥ मुंखरितरसनजघनगतिलोला ॥**४॥** द्यितविलोकितलंजितहसिता॥ बहुविधकुजिन-रतिरसरसिता ॥ ५ ॥ विपुलपुलकपृथुवेपथुभंगा ॥ श्विसितनिमीलितविकसदनंगा ॥ ६ ॥ श्रमजलक-णभरसुभगशरारी ॥ परिपतितोरसि रतिरणधीरा ॥७॥ श्रीजयदेवभणितहरिरमितम् ॥ कलिकलुपं जनयतु परिशमितम् ॥८॥४॥ 🖫॥ तारु धमार॥ हरिरिह ब्रजयुवतीशतसङ्गे ॥ विलसति करिणीग-णावृतवारणवर इव रतिपतिमानभङ्गे॥ घु०॥१॥ विभ्रमसम्भ्रलोलविलोचनस्चितसञ्चितमावम् ॥ कापिदृगंचळकुवळयनिकरेरंचति तं कळरावम् ॥२॥ स्मितरुचिरुचिरतराननकमलमुदीक्ष्य हरेरतिक-न्दम् ॥ चुम्वति कापि नितम्बवती करतलधृत-चिवकममन्दम् ॥ ३ ॥ उद्घटभावविभावित-

चापलमोहननिधुवनशाली ॥ रमयति कामपि पीनघनस्तनविलुलितनववनमाली ॥ ४ ॥ निज-परिरम्भकृतेनुद्रुतमभिवीक्ष्य हरिं सविलासम् ॥ कामपि कापि वलादकरोद्ये कुतुकेन सहासम्॥ ॥५॥ कामपि नीवीबन्ध विमोकससम्भ्रमलिज-तनयनाम् ॥ रमयति सम्प्रति सुमुखि बलादुपि करतलध्तानिजवसनाम् ॥ ६ ॥ प्रियपरिरम्भविपुल पुरुकाविरुद्विगुणितसुभगशरीरा ॥ उद्गायित सिव कापि समं हरिणा रतिरसरणधीरा ॥७॥ विश्रम-सम्भ्रमगलदंचलमलयाञ्चित मंगमुदारम् ॥ प-श्यति सस्मितमपि विस्मितमनसा सुदृशः सवि-कारम् ॥ ८॥ चलति कयापि समं सकरग्रहमल-सतरं सविलासम् ॥ राधे तव पूरयतु मनोरथ-मुदिनमिदं हरिरासम्॥९॥५॥ 🛒॥ पंचमीके पद॥ ताल थमार ॥ श्री पंचमी परम मंगल दिन मदन-

महोच्छव आज ॥ वसंत बनाइ चली त्रज बनिता, करि पूजा कों साज ॥ १ ॥ कनिक कलस जल पूरि पढित रित, काम मंत्र रस मुल ॥ ता पै घरी रसाल मंजुरी ढांपि सु पीत दुकूल ॥ २ ॥ चोवा चंदन अगर कुंमकुमा नव केसरि घनसार॥ नाना ध्रुप दीप नीराँजन विविधि भाँति उपहार ॥३॥ बाजित ताल मृदंग मुरलिका वीना पटह उपंग ॥ सरस बसंत मधुर सुर गावति उपजत तान तरंग ॥ ४ ॥ छिरकति अति अनुराग मुदित गोपीजन मदनगुपाछ॥मानौं सुभग कनक कदली मंडल मधि राजित मानो तरून तमाल ॥५॥ इह बिधि चली ऋतुराज बधावन सकल घोप आनंद्॥ 'हरिजीवन' प्रभु गोवरधनधर जय जय गोकुलचंद्र ॥ ६ ॥ १ ॥ 🖫 ॥ ताल धमार ॥ आइ हम नंदके द्वारे ॥ खेलत फागु बसंत पंचमी सुख समाज बिचारै ॥ १ ॥ कोऊ छिए अगर कुमकुमा केसरि काहू के मुख पर डारे॥ कोऊ अबीर गुलाल उडावे आनंद तन न सह्यारे ॥२॥ मोहन कों निरखित गोपी सब मिलिके वदन निहारे ॥ चितवनिमें सब ही वस कीनी नागरी नंद दुलारे ॥ ३ ॥ ताल मृदंग मुरली ढफ बाजैं जांकिनकी जनकारें ॥ 'सूरदास' प्रभू रीकि मगन भये गोप वधु तन वारें ॥ ४ ॥ २ ॥ 写 ॥ ताल धमार ॥ आई है आज बसंत पंचमी खेलन चलो गुपाल ॥ संग सखा लै हो मनमोहन हम है है बज वाह ॥ १ ॥ चोवा चंदन अगर अरगजा, केसरि माट भराई॥ अबीर गुलाल की फोरी भरि भरि, छैहो हाथ पिचकाइ॥२॥ छिरकति हँसति चलति त्रिंदावन करति कुलाहल देति हैं गारी॥ ग्वालन संग लिये नंदनंदन सखियन सँग राधिका प्यारी॥ ३॥ इक नाचत इक धाइ मिलावत ढफ मुदंग बजावत तारी॥ यह सुख देखि सुरलोक अनं-दित "स्याम दास" बलिहारी ॥ ४ ॥ ३ ॥ 뗢 ॥ ताल ध्रुपद ॥ आज चलोरी ब्रिंदावन विहरति वसंत पंचमी पंचम गावति॥ साजि लेहु गडवा भरि चंदन वंदन निरिष आनंद बढावित ॥ १ ॥ कुस-मित दुमवेली अली छवि कृंजित कोकिल मानो हम ही बुळावत॥ 'कल्यानके' प्रभू गिरिधर हि परस करि ये अखियां अतिही सुख पावत॥२॥४॥धा॥ ताल धमार ॥ आज पंचमी शुभदिन नीको काम जनम दिन आयो ॥ रुक्मिन कौंखि चंद्रमा पगर्खों सब जादों मन भायों ॥ १ ॥ बाजत ताल पखावज आवज उडित अबीर गुलाल॥ फुले दान देति जादों पति मागन भए निहाल ॥ २ ॥ हरिख देवता कुसमन बरखित फुलि सब बन राइ ॥ 'पर-

मानंद ' मोद अति बाह्यों जग सबके सुखदाइ ॥ ३ ॥ ५ ॥ 写 ॥ आज बसंत सवे मिठि सजनी पूजों मोहन मीत॥ हरद दूब दिध अक्षत है के गावो सौभग गीत॥१॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा पोहुप सेत अरु पीत॥घर घर तें वानिक वनि आए आप आपुनी रीति॥२॥ मोहन कीं मुख निरिख निरखि के करि हो त्रजकी जीत ॥ खेलति हँसति परम सुख उपज्यों गयों हे द्योस निस वीति ॥३॥ खेल परस्पर बढ़चौं अति रंगसौ रीफे मोहन मीत॥ 'ऋष्ण जीवन' प्रभु सुख सागर में छाँडौं नही पसीत ॥ ४ ॥ ६ ॥ 🕾 ॥ आजु मदन महोच्छव राधे ॥ मदन गुपाल वसंत खेलति है नागरि बोध अगाघे ॥१॥ निधि वुधवार वसंत पंचमी ऋतु कुस-माकर आई ॥ जगत विमोहन मकरध्वज की दुई दिम फिरी दुँहाई॥२॥ रतिपति राज सिंगासन बैठे तिलक पितामह दीनों ॥ छत्र चंवर तृनीर संख धनि विकट चाप कर छीनों ॥ ३॥ चटां मर्खा तहां देखन जैये हरि उपजावति पीति॥'परमानंद' दासको ठाकुर जानत हैं सब रीति ॥४॥ ७॥ 🗐॥

आज सुभग दिन वसंत पंचमी जसुमति करति वधाई ॥ विविधि सुगंधन करों उवटिनो ताते नीर न्हवाई ॥१॥ बांधी पाग बनाइ सेत रंग आभूपन पहराई॥तनक सीस पे मोरचंद्रिका दिस दाहिनी ढिरकाई॥२॥ यह यह ते बज सुंदरि सब मिलि नंद ग्रह पोरि पें आई॥अंब मोर केस पुहुप मंजुरी कनक कलम बनाई ॥३॥ चोवा चंदन अगर कंमकुमा केसरि सूरंग मिलाई ॥ प्रमुदित छिरकति पान पिया कों अवीर गुलाल उड़ाई॥ ४॥ वाजित

ताल मुदंग ऊांऊ ढफ गावति गीत सुहाई॥ तन मन धन नोछावरि कीनौ आनंद उर न समाई

बसंत पंचमीके पद. 38 ॥ ५ ॥ श्रीगिरिवरधर तुम चिरजीयो भक्तन के सुखदाई ॥ श्रीवल्लभ पदरज प्रताप ते 'हरिदास' बिल जाई ॥ ६ ॥ ८ ॥ 写 ॥ ताल भ्रूपद ॥ आयो ऋतुराज साजि पंचमी वसंत आज मोरे दुम अति अनुप अंव रहे फूळी ॥ वेळी ळपटी तमाल सेत पीत कुसुम लाल उडवित सब स्याम भाम भँवर रहे कुळी ॥ १ ॥ रजनी अति भई स्वच्छ सरिता सब विमल पच्छ उडगन पति अति अकास बरखित रसमुछी॥ जती सती सिद्ध साधि जित तित उठि भजे सब विमिट जिटत तपसी भई मनि मन गति भूछी ॥ २ ॥ जुबती जुथ करति केलि स्थाम सुखद सिंधु फेलि लाज ठीक दुई पेलि परिस पगन भूली ॥ बाजित आवज उपंग वांमुरी मुदंग चंग इहि सुख सब 'छान्' निरस्व इच्छा मई लुली ॥३॥९॥歸॥ आ.

إداع

ताल धमार ॥ आवो वसंत वधावो चलो बजर्का नारि ॥ सखी सिंधपौरि ठाडे मुरारि ॥ धृ० ॥ नौतन सारी कसूंभी पहरे नव सत अभग्न

नोतन सारी कसूंभी पहरें नव सत अभगन संजिये ॥ नव नव सुख मोहन संग विलमत नवलसुख कान्ह पिय भजिये ॥ १ ॥ राघा चँद्र-भगा चँद्राविल लिलिता भाम सुसीले ॥ संजाविल कनक घट सिर पे अँव मोर जव लीले ॥ २ ॥ चोवा चंद्रन अगर कुँमकुमा उडित गुलाल अवीरे खेलित फाग भाग वड गोपी लिखकत स्याम

खेलित फाग भाग वह गोपी लिस्कत स्याम सरीरें ॥ ३ ॥ बीना बैन ऊांऊ ढफ वाजे मृदंग उपंगन ताल ॥ 'ऋष्ण दास' प्रभु गिरिधर नागर रिसक कुंवर गुपाल ॥ ४ ॥ १० ॥ धि ॥ गावत चली बसंत बधावन नंदराइ दरवार ॥ बानिक विन ठिन चोखमाख सों ब्रजजन सब इक सार ॥ १ ॥ अंगिया लाल लसत तन सारी कृमक

नव उर हार ॥ बैनी ग्रथित रुरति नितंब पे कहां कहूं वडडेवार॥२॥ मृगमद आडि बडेरी अखियाँ आँजी अंजन पूरि ॥ प्रकुछित वदन हँसित दुल-रावित मोहन जीवन मृरि ॥ ३ ॥ पग जेहरि केहरि कटि किंकिनि, रह्यों विथकि सुनि मार ॥ घोप घोप प्रति गलिन गलिन प्रति विछुवनकी फनकार ॥ ४ ॥ कंचन कुंभ सीस पै लीने मदन सिंधतें भिरकें ॥ ढाँपे पीत वसन जतनन रचि मोर मंज़्री धरिकें ॥ ५ ॥ अबीर, गुलाल, अर-गजा, सौंधों बिधि न जात विस्तारी ॥ मैनसैन ज्योनार दैनकीं कमलन कमलनि थारी ॥ ६॥ पोंहोंची जाई सिंघपोरि जब विपुल जुवति समु-दाई ॥ निज मंदिरतें निकसि जशोदा, सन्मुख आर्गे आई ॥ ७॥ भई भीर भीतर भवनन में जहाँ त्रजराज किशोर॥ भरत भाँवर्ते पान पिया

गा.

कों घेरि फेरि चहुँओर ॥ ८॥ व्रजरानी जब मुरि

39

मुसिकानी, पकरन भई जब करकी॥ है सँग सर्ग्वा ळवी कछु बतियाँ मिसही मिस उत सरकी ॥९॥ कुमकुम रँग सौं भरि पिचकारी छिरकें जे सुकु-मारी ॥ बरजत छींटैं जात द्रगनमें धनि वे पैँछन हारी ॥ १० ॥ चंदन बंदन चोवा मथिकैँ नील कंज लपटावै॥ अलक सिथल और पाग सिथल अति, पुनि वे बाँधि बनावैं ॥११॥ भरत निसंक भरे अँकवारी भुजन बीच भुज मेलें ॥ उनमद ग्वाल बदत नहीं काहू केल खेल रस रेलें ॥ १२ ॥ कियों रगमगों ठिठत त्रिमंगी भयो ग्वाछिनि मन भायों॥ टकऊक में फुकि एकहि विरियाँ, लालन कंठ लगायों ॥ १३ ॥ ताल मृदंग र्छीऐं सीदामा पहुँचे आई सहाई ॥ हरुधर *सु*बरु तोक मधुमंगल अपनी भीर बुलाई ॥ १४ ॥ खेल

मच्यों मनिखचित चोकमें कवि पें कहा कहि आवे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल छवि देखैंही बनि आवे ॥ १५ ॥ ११ ॥%॥ नीकी आजु बसंत पंचमी खेलति कुंजविहारी ॥ संग सखी रंग भीनी लीनी श्रीव्रपभानु दुलारी ॥ १ ॥ बुका बंदन केसर चंदन छिरकति पियकौं प्यारी ॥ अरस परस दोउ भरति भरावति रंग बढ्यों अति भारी ॥ २ ॥ वाजत ताल मृदंग मुरज ढफ विच विच बेनु उचारी॥ कुंज कुंजमें केलि करों मिलि लिलता-दिक बलिहारी ॥ ३ ॥ १२ ॥ 写 ॥ प्रथम बसंत पंचमी पूजन कनक कलस कामिनी उर फूले॥ आयो मदन महीप सैन है अंबडार पै कोइह जुलै ॥ १ ॥ ठोर ठोर दुमबेली फूली कालिंदी के कुल ॥ 'चत्रभुज' प्रभु गिरिधरन सँग विहरति म्यामा स्याम समतुष्ठै ॥ २ ॥ १३ ॥ 写 ॥ प्रथम समाज आज त्रिंदावन विरहति लाल विहारी ॥

पाँचें नवल वसंत बिंदावन उमिंग चली बजनार्ग ॥ १ ॥ मंगल कलस लिये बजसुंद्रि मधि वृप-भानु दुलारी ॥ फलदल, जुरि नव नत मँजरी कनक कलस सोभा री॥ २॥ गावति गीत वजा-वित वाजे मैन सैन अनुहारी ॥ दरिस परिम मन मोद बढावति राजति छवि भर भारी ॥ ३ ॥ उडित गुटाल अवीर कुँमकुमा भारे केसरि पिच-कारी ॥ छिरकति फिरति छवीछे गातन रूप अनुप अपारी ॥ ४ ॥ विविध विलास हास रसभीने इत पीतम उत प्यारी ॥ 'हित हरिवंस' निरुखि मख सोभा अखियाँ टरत न टारी ॥ ५ ॥ १४ ॥ 🚝 ॥ परम पुनीत वसंत पंचमी मुरत सुभदिन साजे हो गोपी ग्वाल मुदित मनमाही खेलति वन वृज-राजे हो ॥ १ ॥ ब्रह्मादिक सनकादिक नारद सर

विमान चढ आये हो॥ अष्टिसिधि नवनिधि द्वारें ठाढी लेकर कुसुम वधायै हो ॥२॥ फुल्यों श्री विंदावन, फूल्यों श्रीगोवरधन, फूल्यो जमुनाजीको तीर 'रामदास' प्रभु श्रीगिरिवरधर फूळे नखसिख फूळे सोभा सरीर ॥३॥१५॥ध्ना॥ वनि ठनि आई सकल बज ललना खेलनिको ज बसंत॥ श्री पंचमी परम महोच्छव परम मनोहर गोकुल कंत ॥१॥ सुभदिन सुभग सरोज प्रफुछित कृंजत भँवर सुवास ॥ खेिल मच्यों नँद आँगन अदेभुत त्रज-जन नँद कुँवर सुखरास ॥२॥ केसर कीच मची मनि चोकमें केस् कुसुम सुरंग ॥ अवीर गुलाल उडावति गावति पगट्यो अंग अनंग ॥३॥ निज करमों कर देति पियन कों सोभा कहा कहि आर्वे ॥ 'स्रदास' प्रभु सब सुख क्रीडत व्रजजन अंग लगावै ॥ ४ ॥ १६ ॥ 写 ॥ वसंत पंचमी मदन

पगट भयों सब तन मन आनंद ॥ ठींग ठींग फूल्यों पलास इम, और मोरे मकरंद ॥ १॥ विविधि भांति फुल्यों त्रिंदावन कुसुम समृह सुगंध ॥ कोकिल मधुप करत ऊंकारव गावत गीत प्रबंध ॥ २ ॥ सारस हंस सरोवर के तट बोलत सरस अमंद ॥ नाना पहुप परागनके भरि आवत समीर सुगंध ॥३॥ बैनु बजाई करी मोहित मन गोपिन कीं नँद नंद॥ मिलिधाँई त्रपभांनु सुता पें परी प्रेंमके फंद ॥ ४ ॥ गोवरधन गिरि कुंज सदनमें करत विहार सुछंद ॥ 'दास' निरिच बिल वित शोभा पै स्यामा गोकुल चंद्र॥५॥१५॥ः॥ मन मोहन सँग ठछना विहरति वसंत सरस ऋत आई ॥ है है छरी कुँवरि राधिका, कमल नैन पें धाई ॥ १ ॥ द्वादस वन रतनारे दिखियतु चहुँ-दिस केसू फूले ॥ मोरे अंब, ओरु ट्रम बेली मध्-

य.

४२

कर परिमल भूले ॥ २ ॥ सिसिर ऋतुमें अति गयो सीत सब रवि उत्तर दिसि आयों ॥ प्रेम उमिंग कोकिला बोली, बिरहिन विरह जगायौँ ॥ ३ ॥ ताल, मृदंग बाँसुरी बीना ढफ, गावत मध्री वानी ॥ देति परस्पर गारि मुदित व्है,

तरुनी, वाळ, सयानी ॥४॥ सुरपुर, नरपुर, नाग-

लोक जल, थल, कीडा रस पावे ॥ प्रथम बसंत पंचमी लीला 'स्रदास' गुन गावै ॥ ५ ॥ १८ ॥ 🖫 ॥ यह देखि पंचमी ऋतु बसंत ॥ जहँ द्वम अरु वेळी सब फलंत ॥ १ ॥ तहँ पठई लिलेता करि विचार ॥ नव कुंजन मैं करि हैं विहार ॥२॥ छै आई सब सिंगार साज ॥ हाँसे दौरि मिले मनौं मदन राज ॥ ३ ॥ नव केसरि चोवा अंगराग ॥ खंळित गुपाल बढ्यो अनुराग ॥४॥ कुल कोकिल कलगी मुख समाज॥ आहे गुंजन पुंजन कुंज

आ. गाज ॥५॥ रति कुंभ लई ठाडी निहारि॥ मधि राजित सरस सब बेस बारि ॥६॥ सखी ताळ मृदंग बजाइ गाइ ॥ तहँ 'द्वारिकेस' बिटहारी जाड

॥ ७॥ १९॥ 写॥ बधाई के पद ॥ ताल धमार ॥ आज बसंत बधायों है श्रीबहुभ राज दुआर ॥

विट्टलनाथ कियो है रचि रुचि, नव वसंत कीं सिंगार ॥ १ ॥ ब्रह्मी सृष्टि समाज संग सव. बोलति जय जयकार॥ पुष्टिभाव सों पूजत है मिलि

बाढथौं रंग अपार ॥२॥ प्रेम भक्ति को दान करत श्रीबहुभ परम उदार॥ कृपा दृष्टि अवलोकि दास कों देति हैं पान उगार ॥ ३ ॥ श्रीबहुभराज

कुमार लाल त्रजराज कुंवर अनुहार ॥ ऐसो अद-भुत रुप अनुपम 'रसिक' जात बिटहार ॥४॥१॥ 🖫॥ ताल ध्रपद ॥ केसरी उपरना ओंढें केसर की धौती॥ केसर को तिलक सोहे श्रीविङ्क छिब

88

के.

जौती ॥ १ ॥ खट मुद्रा सोभित माला उर आभू-पन भूपित सब अंग॥ नख सिख निरखित श्रीवरहम सत लिजत भयों अनंग ॥ २ ॥ आयों ऋतुराज परम रमनीक अति सुखकारी फागुन मास ॥ अति सुखदाइक कृष्ण सप्तमी व्रजपति पूरी आस ॥ ३ ॥ आजु बडो दिन महा महो-च्छव करत श्रीविद्वलनाथ॥ गिरधर आदि प्रभृति सप्त सुत निजजन कीए सनाथ ॥ ४ ॥ कीए सुगंध फुलेल उनटनो कीए जु केसरि स्नान ॥ कीए सिंगार मनोहर सब अँग पीत बसन परि-धान ॥ ५ ॥ नख सिख विविधि माँति आभूपन मोभित गिरिधर लाल ॥ कुलह केसरी सीस विराजीति मुगमद तिलक सुभाल ॥ ६॥ खट रम विजन विविधि भाँतिके कीए पकवान रसारु॥ आदर मों जिमावति भावति गोकुछ के प्रतिपाल

बसंत, बधाईके पद, ॥ ७ ॥ दे बीरा छिरकति चोवा चंदन कुँमकुम अबीर गुलाल ॥ ज्यों गुलाब कुसुम अति माभित.

सोभित सुंदर भाल ॥ ८ ॥ गावति गृन गंथवं गिळत मन बाजित सरस मृदंग ॥ ताळ ग्वाव जांकि दफ महुवरि राजत सरस सुधंग ॥९॥ अति आदर सौं करि न्योछावर आनंद उर न समाइ॥ आरति वारत श्रीमुख उपर 'गोविंद' बिछ बिछ जाइ॥१०॥२॥॥॥ ताल धमार॥ खेलति वसंत वर विट्टलेश ॥ आनंदकंद गोकुल सुदेस ॥ ध्र० ॥ श्रीगिरिधर गोविंद संग॥ श्री बालकृष्ण लजित अनंग ॥ श्री गोकुलनाथ अनाथनाथ ॥ रघुनाथ नवल जदनाथ साथ॥१॥ श्री घनस्याम अभि-राम धाम॥ श्री कल्यानराइ परिपूरन काम॥ मुरलीधर आदि समस्त बाल ॥ सेवक विचित्र सेवा रसाल॥२॥ जहाँ उडति गुलाल अवीर

बसंत, बधाईके पद. खे. ४६

रंग तहँ बाजित ताल मृदंग चंग॥ जहँ गिरिवरधारी खेलित आइ ॥ तहँ 'लघु गुपाल' बलिहारी जाइ ॥ ३ ॥ ३ ॥ 🕾 ॥ खेलति वसंत वर विद्वलेश ॥

मिलि रसिक राइ गोवरधनेस ॥ ध्रु० ॥ मृगमद कपुर केसरि सुरंग॥ अति सौंधे सांने कुसुम रंग

॥ दोउ भरि पिचकाई अति उमंग ॥ तकि भरति परस्पर सुभग अंग ॥ १ ॥ भरि नव अवीर नौतन गलाल ॥ अरगजा लगावत ललित गाल ॥ दोउ हँसित लसित आनंद ख्याल ॥ पहेरावित सुवन सुगंध माल ॥ २ ॥ चमेली फुलेल सु राइवेलि ॥ मच्यों खेलि अति रंग रेलि ॥ सब गोकुल सीरभ रह्यों फैलि॥ मधु मत्त मधुप रस रह्यों ऊेलि॥३॥ तहँ वाजत चंग मुदंग ताल ॥ सुर मिलत मुरली

गाँव गुपाल ॥ वर्ज जन रीके जिय अति रसाल ॥ मुग्व देति सबन गिरिधरनळाळ ॥४॥४॥ध्ना॥

खेलति बसंत ब्लभकुमार ॥ सोभा ममुद्र बाढे अति अपार ॥ १ ॥ श्री गिरिधर गिरिधरन नाथ ॥ भरि रंग कनक पिचकाई हाथ ॥ २ ॥ श्री गो-बिंद बालकृष्णजी संग ॥ छिरकति डारति बहु भांति रंग ॥३॥ रस खेलति खेल गोकुल के नाथ ॥ केसरि रंग सोहत पाग माथ ॥ ४ ॥ श्री रघुपति जदुपति अति सुदेस॥ घनस्याम सुभग सुंदर सुवेस ॥५॥ श्री कल्यानराइ लीला रसाल ॥ मुरलीधर दामोदर कृपाल ॥ ६ ॥ गोपीनाथ वालक विनोद ॥ सेवक जन निरखति मन प्रमोद ॥ ७ ॥ श्री गो-कुल परम सुदेस धाम ॥ मिलि गावति गीत वि-चित्र वाम ॥ ८ ॥ बाजत मुदंग मुख चंग रँग ॥ बीना कठताल पिनाक रंग ऊपंग ॥९॥ केसरि चोवा म्रगमद फुलेल॥ बज भामिनि छिरकति रेल पेल ॥ १० ॥ कोरी भरि भरि उडवति गुलाल ॥ मुख

बोलति हो हो होरी म्वाल ॥११॥ यह सुख सोभा कही न जाय॥ 'जन दास' निरखि बलिहारी जाय ॥ १२ ॥ ५ ॥ 🚎 ॥ वंदौं पद पंकज नंदलाल ॥ जे भवतारन पुरन ऋपाल ॥ ध्रु० ॥ चित चिंतत

हो बुधि विसाल ॥ ऋपा करन और दीनदयाल॥ सदाँ बसो मेरे हिये माय ॥ कुँवरि माधुरी चितहि धाय ॥१॥ तिमिर हरन सुखकर आनंद ॥ मुनि

वंदन आनंदकंद ॥ स्याम मुकट मनि कमल नैन ॥ छवि समुह पै लजित मैन ॥ २ ॥ गोकुल पति गृन नाहिन पार ॥ श्री नंद सुवन सुमिरो उदार ॥ निगमागम सब ओघ सार॥ सोई ब्रिंदावन पगट्यों विहार ॥ ३ ॥ ऋतु वसंत पहिलो समाज ॥ तहँ मदित जुवति जन सजि जु साज ॥ मुदित चले जहँ 'सुरस्याम' ॥ वसंत वधावन नंद धाम ॥ ४ ॥ ॥ ६ ॥ 🚟 ॥ वंदों पद पंकज विद्वलेस ॥ श्री व्हाम कुल दीपक सुवेस ॥ १ ॥ जिनकी महिमा जे कहें उदार ॥ अति जस प्रगट कियों संसार ॥ २ ॥ इन सरन नीच जे तजि विकार ॥ तिनें भवनिधि

तरति न लगति बार ॥ ३ ॥ करि सार अरथ भा-गवत परमान ॥ कीए खंडन पाखंड आन ॥४ ॥ बाँधि मरजादा सब बेद मान ॥ जन दीन उद्धरन

सुख निधान ॥ ५ ॥ जिहि बंस परम आनंद दैन ॥ 'पुरुपोत्तम' सब सुख के ऐन ॥६॥७॥ 🖫 ॥

कलह. भोजन के पद ॥ ताल धमार ॥ रिंगन करति कान्ह आँगन मैं कर छीये नवनीत ॥ सो-भित नील जलद तन सुंदर पैहरे ऊगुली पीत ॥१॥ रुनु छुनु, रुनु छुनु, ज्यों नुपुर बाजे, त्यों पगु ठुमकि धरें ॥ कटि किंकिनि कलस्व मनोहर सुनि किल-

कार करें ॥ २ ॥ दुलरी कंठ कनिक द्रम कानन दीयों कपोछ दिठोंना ॥ भाल विसाल तिलक गो-

रोचन अलिकावलि अलि छौना ॥३॥ लटकन लटिक रह्यों भुव ऊपर, कुलह सुरंग बनी ॥ सिंध-दवार तें उक्ति उक्तिक छिवे, निरखत हैं सजनी ॥ ४ ॥ नंद नँदन उन तन चितवतही प्रेम मगन मन आई ॥ कंचन थारु साजि घर घर तें बहु विधि भोजन लाई ॥ ५ ॥ मनि मंदिर मुढा पे संदरि, अपने वसन विछावै ॥ बालकृष्ण की जो रुचि उपजे अपने हाथ जिमावें ॥ ६ ॥ जल अच वाइ वदन पौंछत अरु बीरी देत सुधारी ॥ हियें लगाइ वदन चंवन करि सरवस डारति वारी ॥७॥ नैननि अंजन दे लालन कें म्रगमद खोरि करें॥ मुरँग गुलाल लगाइ कपोलन चिवुक अवीर भेरें ॥ ८ ॥ चोवा चंदन छिरिक अबीर गुलालन फेंट भगई ॥ तनक तनक सी मोहन कीं भरि देति कनक पिचकाई ॥ ९ ॥ आपुस माँक परस्पर छिरकति ठालन पै छिरकावैं ॥ न्हेंनी न्हेंनी मठी भराइ रंगन सौं सैनन नैन भरावें॥१०॥ निर्गव निरिष फुलित नँदरानी तन मन मोद भरी ॥ नित प्रति तुम मेरे घर आवा माना सफल घर्ग ॥ ११ ॥ देत असीस सकल ब्रजबनिता, जसुमति भागि तिहारो ॥ कोटि वरस चिरुजीयो यह बज जीवन पान हमारो ॥ १२ ॥ १ ॥ 🚟 ॥ टीपारेके पद ॥ ताल धमार ॥ खेलति वसंत गिरिधरन चंद ॥ आनंद कंद वर मनके फंद ॥ ध्र० ॥ सोहति सँग संदरि वेनु वीन ॥ वृपभानु कुँवरि अतिसे प्रवीन ॥ दोऊ छिव के सिंधु तहँ रहति छीन ॥ लिलादि सखीन के नैन मीन ॥ १ ॥ वनी मंज् कुंज जमुनाके कुछ॥ भीने नव केसरि दुकुछ॥ रँग भरति हँसति दोऊ सुखके मूछ॥ तिनें देखि मिटे सब तन की सुल ॥ २ ॥ धिधि धुक्टी धूंग

बाजित मृदंग डि डि डिमक डमक दफ मिलै है संग ॥ ठठठनन ठनन करे ताल रंग ॥ गग गनन गनन वाजै उपंग ॥ ३ ॥ गावति अलापित

तनननन निंदित कोकिल सुर समनननन ॥ रँग भरति बलहि करि फिनि ननननन ॥ इन भरे री

नेंन इन इनन इन ॥ ४ ॥ रँग भरति परसपरि करति हास ॥ नहिं वरनि जात रसना विलास ॥

सव वंधी हें जुगल हित प्रेम पास ॥ वितहारि गए जहँ 'कृष्णदास'॥ ५॥ १॥ ध्नि॥ गोपी जन

॥ घृ० ॥ जै रास रसिक रवनी सुवेस ॥ सिखिन

सिखंड विराजे केस ॥ गुंजा बन धातु विचित्र देह ॥ दरमन मन हरन बढावें नेह ॥ १ ॥ जै संदर मंदिर धरनि धीर ॥ त्रिंदावन विहरति गोप बीर ॥

वल्लभ जे मुकुंद ॥ मुख मुख्ठी नाद आनंद कंद वनिना सन जुथ जु परम धाम ॥ छावनि कछेवर कोटि काम ॥ २ ॥ जै वैजंती गर रुग्त मारु ॥ कमल अरुन लोचन विसाल॥ कुंडल मंडिन भूज दंड मुल ॥ हरि निरत करति कालिंदी कुल ॥३॥ जै पुलकित खग मृगतर मराल॥ मधुरि धुनि सुनि

मनि ध्यान टाल ॥ सुरपतिके मुर्छित तान गान ॥ सुनि थिकत भए सुर मुनि विमान ॥४॥ जै जै श्री

कृष्ण कला निधानु ॥ करुनामै जदुकुल जलज भान ॥ भगवंत अनंत चरित तोरि॥ कहें भाधो दास' मन मगन मोर ॥ ५ ॥ २ ॥ 写 ॥ ताल ध्रुपद ॥ निरतित गावति वजावति मधुर मुदंग सप्त मुरन मिल राग हिंडोल ॥ पंचम सुर है अला-पत उघटत है सप्त तान मान थेई ता थेई ता थेई थेई कहति बोल ॥ १ ॥ कनक वरन टिपारों सिर कमल बरन काछनीं कटि छिरकति राधा करत कलोल ॥ 'कृष्णदास' त्रिंदावन नटवत गिरिधर पिय सुर बनिता बारत अमोल॥२॥३॥ﷺ। निरतके पद ॥ ताल चरचरी ॥ उडत वंदन नव अवीर बहु कुमकुमा खेळित वसंत बनै लाल गि-रिवर धरन॥ मंडित सु अंग सोभा स्याम सोभित **ळळन मनों मनमथ बान** साजि आए ळरन॥१॥ तरनि तनया तीर ठीर रमनीक वन द्रम लता कुसुम मुकलित सु नाना वरन ॥ मधुर सुर मधुप गुंजार करें पीक शब्द रस लुब्ध लागे दुहुं दिस कुलाहल करन ॥ २ ॥ आइ वनि वनि सकल घोख की सुंदरी, पहरि तन कनक नव चीर पट आभरन ॥ मधुर सुर गीत गाँवें सुघर नागरी चारु निरति मुदित कुनित नूपुर चरन ॥ ३॥ वदन पंकज अधर विंव सोमित चारु ऊठकत क्षेत्रेल अति चपल कुंडल किरन ॥ 'दास कुंभन' निनाद हरिदास वर्य धर नंद नँदन कुँवर जुवति

जन मन हरन ॥ ४ ॥ १ ॥ 🕾 ॥ नारु भूपद्॥ ऋत बसंत तरु उसंत मन हसंत कामिनी भामि-नी सब अंग अंग रिमत फागुरी ॥ चरचरी अति विकट ताल गावति संगीत रसाल उरप तिरप रासि तांडव रेत रागुरी ॥ १ ॥ वंदन वृका ग्-लाल छिरकति ताके नैन भाल लाल गाल मृगज लेप अधर दागुरी॥ गिरिवर धरि रसिकराइ मेचक मुँदरी लगाइ कंचुकी पर छाप दीए चकित नागरी ॥ २ ॥ वाजित रसना मंजीर कृजित पिक मोर कीर पवन भीर जमुना तीर महल बागरी॥ 'विस्नुदास' प्रभु प्यारी भेटत हसि देत तारी काम कला निपट निपन प्रेम आगरी ॥ ३॥२॥ 🚟 ॥ ताल धमार ॥ ऐसें नवल लाल खेलति वसंत जहँ मोहि रहे सब जीव जंत॥ फूले कुसुम अनेक रंग उतसे डोठे अनंग ॥ सीतरु सुवास

॥ १ ॥ ढफ दुंदुभि औ संख भेरि ॥ विच गावति किंत्ररिटेरिटेरी॥ नाचतित्रज गोपी फेरिफेरि॥सर वरखित कुसमन होरी होरी॥ २ ॥ घसि चोवा चंदन अगर घोरि॥ केसरि कपूर रंग वसन बोरि॥ वज जुवतिन के चित चोरि चोरि कीने कौतुहरु सव पोरि पोरि ॥३॥ जै जै जै बानी प्रकास ॥ सव त्रज जनके मन भयो हुलास ॥ तहां बडभागी है स्रदास ॥ वह निमप न छांडे हरि कीं पास ॥४॥३॥ा ॥ जुर्वात वृंद सँग स्याम मनोहर खेळित वसंत और ही भाँति॥ अरुन हारित मुक-लित द्रुम मंडल मधुप हलावत अंकुर पांति॥१॥ तरनि तनया तट पुलिन रम्यमें जहँ तहँ वन कोकिल किलकाँति॥ पूरन कला रोहिनी ब्रह्म उदिन मदन कुसुमाकरि राति ॥२॥ बाजति

ताल मुदंग अघोटी बीना बेनु मिलत सुर जाति॥ उरप तिरप गति अभिनव छछना पग नृपुर मंचित

किलकाँति ॥३॥ विविधि सुगंध कुँमकुमा छिन-कति पिय बनिता बनिता पिय गात॥विविध विहार विविध पट भूपन किरनि लजावत उडगन काँति

॥ ४ ॥ मोहनलाल गोवरधन धरि कौं रुप नेन पीवत न अघात ॥ 'ऋष्णदास' प्रभु वानिक नि-रखित व्योम जान ललना ललचात ॥५॥४॥॥॥ ताल धमार॥ नवकुंज कुंज कूंजत विहंग ॥मानों वाजे वाजित रूप अनंग ॥ द्वम फुछि रहे सब फ-छनि संग ॥ मधि अति सुवास और विविध रंग ॥१॥ जहँ बाजित कालरिताल संग॥ अधवट आवज बीना उपंग ॥ अरु श्री मंडल महुवरि मृदंग ॥ कहि लाग डाट ले मोरि अंग ॥ २ ॥ धूम धिधि कटि ता धिम ता धिलांग॥ दोऊ गान लेत निरतत

सुधंग ॥ बूका गुलाल डारति उतंग ॥ बलि 'द्वार केस' छिब जुग त्रिभंग ॥ ३ ॥ ५ ॥ 🖺 ॥ ताल चरचरी ॥ नंद नंदन नवल सुभग जमुना पुलिन नवल नागरि मिलि बसंत खेलै ॥ सुखद बिंदा विपुन तरु कुसुम फुमका चलति मलय पवन वस करति पेलै ॥१॥ घोप सब सुंदरी सकल सिंगार साजि आई येह येह तें निकस करति केलें॥ भई रतिपति विवस मत्त गज गामिनी काम अभिरा-मनी रंग रेंछै ॥ २ ॥ ईते बालक तरुन सबै एकत भए करन पिचकाई लिये भुजन ठेलै॥ लाज ग्रेह कान, तज लाज गुरु जननकी, गारी गावै जवति वृंद भेटें ॥३॥ मदन मोहन रसिक तिने सिखवत वंचन जुथ पर जुथ कर पलक पेलैं॥ देखि विथ-कित भई अमर पुर नायका गिरिधरन मदन रस मिंधु ऊेळें॥४॥६॥डा॥ नंद नँदन वृपभानु नंदनी मंग मरम ऋतराज विहरति वसंते ॥ इत संखा संग

126 सोभित श्रीगिरिवरधरन उत जुवति जन मधि गथा रुसंते॥१॥सूरजा तटसुभगपरम रमनीय वन*मु*खद् मारुतमलय मृदुलबहंते॥प्रफुलितमहिकामाल्ती माधवी कुहुँ कुहुँ सब्द कोकिल हसंते ॥२॥ विविध सुर ग्राम तीन ग्राम गावत सुघर नागरी ताल कठ-ताल बाजित मृदंगे ॥ बेनु बीना अमृत कुंडली किन्नरी फांकि वहु भांति चंग उपंगे॥ ३॥ चंदन सु बंदन अवीर नव अरगजा मेद गोरा साख बहु घसंते॥ छिरकति परसपरि सु दंपति रस भरे करति वहु केिि मुसकिन हसंते॥४॥ देखि सोभा सुभग मोहे सिव विधि तहाँ थकित अमरेस छजित अनंगे॥ 'गोविंद ' प्रभु हरिदास वर्य धरि घोप पति जुवति जन मान भंगे ॥ ५ ॥ ६ ॥ 🕾 ताल ध्रुपद ॥ नवल वसंतफूछ फूळें॥ गिरिधरि पिय प्रमुद्ति प्यारी संग विहरति तरिन सुता कुछै॥१॥ किल कलिका किल

कोकिल कूजति मिथुन, मधूप अंकूर रस भूलै॥ कृष्ण दास' प्रभू कौतिक सागर सरजति सुर पादप कै मुलै ॥ २ ॥ ६ ॥ 写 ॥ ताल धमार ॥ नवल वसंत कुसमित बिंदाबन मुकलित बन कली॥ कल कल कोकिल कीर सनादित गुंजत अली ॥ १॥ नव ज्वती नव रँग पिय सँग करत रंग रही ॥ नवल तमाल मनौ नव बेली बरन वर प्रेम फल सुबिधि फर्टी ॥ २ ॥ तांडव, लासि विहार चलति सप्त सुरन सहित तान चरी॥ सुनि 'ऋष्ण दास' विविध सगं-धन विरुसत ऋतु सुख रास भली ॥ ३ ॥ ७॥ ﷺ॥ नवल वसंत नवल त्रिंदावन खेलति नवल गोवरधन धारी ॥ हलधर नवल नवल बज बालक नवल नवल वनी गोकुल नारी॥१॥ नवल जमुना तट नवल विमल जल नृतन मंद सुगंध समीर ॥ नवल कुसम नव पहुंच साखा गुंजति नवल मधुप पिक कीर

॥२॥ नव म्रगमद् नव अरगजा चंदन नऊतन अंग-सु, नबलअबीर॥नव वंदन नव अरगजा, कुँमकुमा छिरकति नबल परसपर नीर॥३॥ नवल वेनु मह्-वरिबाजे अनुपम नौतन भूपण नौतन चीर॥ नवस रुपनव'कृष्ण दास' प्रभुकों नौतन जस गावति मुनि धीर ॥ ४॥ ६॥ 写॥ नवरु वसंत नवरु विंदावन नवलें फूलें फूल ॥ नवल हे कान्ह नवल सव गोपी निरतत एकें कुछ ॥ १ ॥ नवछ गुरुारु उडे नव बुका नवल बसंत अमूल ॥ नवलें छींट बनी केसरिकी मेंटत मनमथ सूल ॥२॥ नवल ही ताल पखावज बीना नवल पवन कें फूल ॥ नवलें वाजे वाजत 'सीभट' कालिंदी के कृत्र॥३॥७॥ ताल धमार ॥ 鍋॥ वन फूले दुम कोकिला बोली मधूप ऊँकारन लागे॥ सुन भयों सोर रोर बंदी-जन मदन महीपति जागे॥१॥ तिनह दिने अंकर

पछव जे द्वम पैठैं लागे ॥ मानौ रति पति रिक जाचकन बरन बरन दिये बागे ॥२॥ नए पात नई लता पोहुप नए नए रस पागे॥ नवल केलि विल-सित मोहन सँग 'सूर' रंग नए अनुरागे॥३॥८॥ध्न॥ ताल भ्रुपद ॥ त्रिंदावन खेलति हरि जुवति जुथ संग िये हो हो हो हो होरी सुहाई ॥ दुंदुभी, मृदंग, चंग, आवज, बीना, उपंग, ताल, ऊांक, मदन भेरि, मुरली, मुखचंग, ढोल महूबरि गोमुख, सहनाई ॥ १ ॥ म्रगमद चोवा गुठाठ केसू केसर रसाल, छिरकति किलकारि देति, गावति गारी सहाई ॥ निरखति सोभा अपार भूछे सुधि बुधि सँभार सिव विरंचि सनकादिक वरखति गुन 'कृष्ण दास' वसंत ऋतु सुहाई॥ २॥ ९॥ 🗐। त्रिंदा विपिन नवल बसंत खेलति तरुन नवल बलबीर॥ त्रज बध् मंग मदित नाचित तरिन तनया तीर ॥१॥ अरुन

तरु मुकलित मनोहर विविध द्रम गंभीर ॥ मधुप विहंग करत कुलाहल, मलय वहै समीर ॥ २ ॥ अगर कुँमकुम बहुत सौरभ, उसत भूपन चीर ॥ 'कृष्ण दास' बिलास सुखनिधि गिरिधरन गृन गंभीर ॥३॥१४॥ﷺ। ताल धमार ॥ मदन गुपाल ठाल सब सुखनिधि खेलति बसंत निकुंज देस ॥ जुवतीजन सोभित समृह तहँ पहिरें भूपन नाना वेप ॥१॥ मकलित नव द्रम सघन मंज्रि कोकिल कल कुंजतिविसेप ॥ फुली नव मालती मनोहर मध्य गँजारित ता मधेस ॥ २ ॥ बाजित ताल. मुदंग, जांज, ढफ, आवज, बीना, किन्नरेस ॥ निर-तत गुनी अनेक गुन भरे गावत जीय व्हे व्हे आवेस ॥३॥ कुँकुम रँग सौं भरि पिचकाई तकति नेन औं सीस केस ॥ रँग रँग सोभा अंग अंग प्रति निरुखि बिरह भाज्यौँ बिदेस ॥ ४ ॥ जानति

Ħ.

बसंत. निरतके पद.

नहीं जाम घरी बीतति, अति आनंद हिय प्रवेस॥ दास चत्रभुज' प्रभु सब सुख निधि गिरिवरधर

त्रज जुनती नरेस॥ ५॥१०॥%॥ मधु ऋतु त्रिं-दावन आनंद न थोर॥राजति नागरि नव किसोर॥

जुथिका जुथ रूप मंजरी रसाल ॥ विथकित अलि मधु ठाळ गुळाळ ॥१॥ चंपक, बकुळ, कुल, विधि

सरोज ॥ केतकी मेदनी मुदित मनोज ॥२॥ रोचक रुचिर वहै त्रिविधि समीर॥ पुलकित निरतत आनं-दित कीर ॥३॥ पावन पुछिन घन मंजरु निकुंज॥

किसलय सैंन रचित सुख पुंज ॥४॥ मंजीर मुरज ढफ मुरली मृदंग ॥ बाजिति मधुर बीना मुख चंग

॥ ५ ॥ मृगमद मलयज कुँकुम अबीर ॥ चंदन अगर सौं चरचित चीर ॥ ६ ॥ गावति सुंदरि हरि

मग्म धमारि॥पुरुकित खग मुद बहत न बार॥७॥ हिन 'हरिवंस' हंस हंसिनी समाज ॥ ऐसें ही करी

मिलि जुग जुग राज ॥ ८ ॥ १६ ॥ﷺ। पाग के पद ॥ तिताल ॥ केसरि सौं भीज्यों वागों भर्यों है गुलाल॥ कहूँ कहूँ कृष्ण अगर सोंहत तन मोह मन अति ही संदर वर बनें नंदलाल ॥१॥ सग्म फुलेल अरगजा, भीने कच ढरुकि रही जुपाग अरध भाल॥ 'जगतराइ' के प्रभु मुखिह तंत्रोल छिन उरस बनी सोहें सुवन माल ॥ २ ॥ १ ॥ 🛒 ॥ ताल धमार ॥ खेलति बसंत आए मोहन अपने रंग॥ करतल ताल कुनित बल अबलि जुबति मंडलि संग॥१॥ मुरज, मंजरी, चंग, महुवरि, बैन, विपान, म्रदंग॥ जालरी, जंत्र, उपंग, यंत्र, धनि उपजततान तरंग ॥ २॥ उडित अवीर गुलाल कुँमकुमा केसरि छिरके अंग॥ गलित कुसुम सिर पागु लट पटी नाँचित लिलत त्रिभंग ॥ ३ ॥ कोउ किन्नरि सरस गति मिलवत कोउ चंग॥ 'जन त्रिलोक' प्रभ विपिन

विहारी चितवत उदित अनंग ॥ ४॥ २॥ 🖼॥ खेळित बसंत गिरिधरन ठाळ॥जहँ ठाग्यो अबीर. गुलाल, भाल॥ १ ॥ केसरि छिरकति नवल वाल॥ . रुपटावत चोवा अति रसारु॥ २ ॥रही पाग ढरिक अरध भारु ॥ देखति मनमथ अति भयो विहार ॥ ३ ॥ चंदन लाग्यो दुहुं गाल ॥ तब मुरलीधर रिकवत गुपाल ॥ ४ ॥ श्री गोवरधन धीर रसिक राइ ॥ 'चत्रभुजदास' वितहारी जाइ॥५ ॥३॥५ु॥ पाग चंद्रिका के पद्ममोहन वदन विलोकति अखि-यन उपजत है अनुराग॥ तराने तपत तलफत चकोर ममि पीवत सुधा पराग ॥ १ ॥ लोचन नलिन नए गजित रति पूरे मधुकर भाग॥ मनौं अलि आनंद मिलें मकरंद पिवत रस फाग ॥ २ ॥ भँवरि भाग भृकृटी पे चंदन वंदन विंदु विभाग॥ता तकिसोम मॅक्यो घनघन में निरखति ज्यों बैराग॥३॥कंचित फू. बसंत, फूछ सिंगार के पद. ६ ७

केस मयूर चंद्रिका मंडित कुसुम मुपाग ॥ मनों मदन धनुप सर लीनें वरखत है वन वाग ॥ ४ ॥ अधर विंव ते अरुन मनोहर, मोहन मुख्टी राग॥

मनों सुधा पयोध घोर वर ब्रज पे बरखन लाग ॥ ५॥ कुंडल मकर,कपोलन फलकत, स्नम सीकर के दाग ॥ मनों मीन कमल दल लोचन, सोमिन

क दाग ॥ मना मान कमल दल लाचन, साभित सरद-तडाग ॥ ६ ॥ नासा तिलक प्रसृन पदवीतर, चिबुक चारु चित खाग ॥ दाखों दसन मंद्र मुसि-कावनि मोहत सुर नर नाग ॥ ७ ॥ श्री गुपाल

काविन मोहत सुर नर नाग ॥ ७ ॥ श्री गुपाल रस रूप भरी है 'सुर' सनेह सुहाग ॥ मनों सोभा सिंधु बढयों अति इन सखियन के भाग ॥८॥१॥
ﷺ॥१००० के सिंगार ॥ ताल धमार ॥ कृलन

की सारी पेहरे तन ॥ फूळन की कंचुकी फूळन की ओढनी, अंग अंग फूळे ठळना कैं मन॥१॥ फूळन के नवकेसरि फूळन की माळा फूळन के

आभरन केस गूँथे फूछन घन॥ फूछन के हावभाव फुलन के चोज चाउ विविधि वरन फूल्यों बिंदा-वन ॥२॥ श्रीगिरिधरि पिय के फूल नाहीं कोऊ समतूल गावति वसंत राग मिलि जुवति जन ॥ कृष्णदास' विरुहारी छिनु छिनु रखवारी अखिल लोक जुवति राधिका पान पतिन ॥३॥१॥ध्न॥ मुकुट के पद ॥ ताल धमार ॥ देखो बिंदाबनकी भूमि कीं भागु॥ जहँ राधा माधव खेलति फागु ॥ भू० ॥ जाको सेस सहस्र-सुप लहे न अंत ॥ गुन गावै नारद से अनंत ॥ जाको अगम निगम कहें तेज पुंज ॥ सो तों हो हो करत फिरें कुंज कंज ॥ १ ॥ जाके कोटिक ब्रह्मा कोटिक इंद्र ॥ जाके कोटिक सुरज कोटिक चंद्र ॥ जाकों ध्यान धर्गत मुनि रहें हारि॥ ताकों सकल गोपी मिलि देति गारि॥२॥ सोहै मोर मुकुट सिर तिलक

भारु ॥ ऐसे रुखित छोछ छोचन विसार ॥ जाकि चितवनि मुसकनि हंस चाछ॥ लखी माहि रही सब व्रजकी बाल ॥ ३ ॥ जहँ वाजे वाजित तुरि ताल ॥ सुर मंडल महुवरि धुनि रसाल ॥ वीना उपंग मुरली मुदंग॥ वाजें राइ गिरगिरी अरु चंग ॥ ४ ॥ जहँ करित कुतुहरू गोपी ग्वार ॥ तहँ उडित अवीर कुँमकुमा गुलाल ॥ ऐसे छांटित छिरकति फिरें गुपाल ॥ ताते हर हर हरि हँसि भए खुसाल ॥५॥ जाकों बेद कहेत है नेति नेति॥ जासों हॅंसि हॅंसि ग्वालिनि फगुवा लेति॥ अद-भुत छीत्य अपरंपार ॥ जाकों सुर नर मृनि करे जय जयकार ॥ राधा जीवन उरको हार ॥ ऐसें "मुरुठी दास" प्रभु करे विहार ॥ ६ ॥ १ ॥३॥ रासके पद ॥ ताल धमार ॥ नवल वसंत वीच बिंदा-वन मोहन रास रचायों ॥ सुर विमान चढि देखन

बसंत, सहेराके पद. खे. 90 आए निरिष निरिष सुख पायों ॥ १ ॥ नाँचित लाल पग नूपुर बाजैं मुरली सब्द सुहायैं।॥ ताल मदंग, जांज, ढफ बाजित सब इक तार मिलायों ॥ २ ॥ साँवल, स्याम, गीर हैं प्यारी मिलि रस-सिंध् बढायों॥ गोपी ग्वाल परसपर नाँचति अद्भुत रंग जमायों ॥ ३ ॥ कहा कहीं लीला राधा बरकी किनहं अंत न पायों ॥ या छीला पे वार वारनें "रामदास" जस गायौ ॥४॥१॥ध्धा सहेराके पद् ॥ ताल धमार ॥ खेलति बसंत बलभद्र देव ॥ लीला अनंत कोउ लहै न भेव॥ धु०॥ सनकादि आदि मुख रचे ग्वार ॥ प्रगट करन ब्रज रज विहार ॥ मुख निधि गिरिधरि धर न धीर ॥ लियो बांटि वांटि ओलिन अवीर ॥१॥ मधु मंगल और सुबल मीदाम ॥ सखा सिरोमनि करत काम॥ मधु मंगल आदि सकल म्वाल॥ वने सब के सिरोमनि नंद-

लाल ॥२॥ रचि पचि है वहु अंवर वनाइ॥ वागा बहु केसरि रँगाइ ॥ रही पाग तिस सिर सुरंग ॥ कँवर रसिक मनि श्री त्रिभंग ॥३॥ सुनति चपत संब उठी हैं बाल ॥ भरि भाजन लीनें गुलाल ॥ हुलसि उठी तिज लोक लाज ॥ लई बोलि मव सखी समाज॥४॥काह की को कोऊ न बदतकानि॥ भरति हितुन कीं जानि जानि ॥ त्रजराज कुँवर वर निकट आई ॥ नैननि सिराई निरखे अघाई ॥५॥ चत्र सखी इक हास कीन ॥ दुरि मुरिवचाइ हग गाँठि दीन ॥ पाछे तें तारी बजाइ ॥ व्याह गीत सब उठी हैं गाइ॥६॥ तब बोले स्याम घन अपने मेल ॥ खिच्यों चीर तब लख्यों खेल ॥ लगी लाज चितर्वें न और ॥ सखा कहें आवो गाँठि तोर ॥ ७॥ सुनति बारु तव चरी हैं धाइ॥ बरुभद्र वीर कीं गह्यो जाइ ॥कटि पटुका पट पीत छीन ॥भछी भाँति

रँग समर दीन ॥८॥ परम पुरुप कोउ लंहै न पार॥ त्रजवासिन हित सहत गार ॥ 'सूर' स्याम हाँसि कहतिबैन ॥ भरति नैंन सुख बहुत दैंन ॥९॥१॥ध्रा। देखोराधा माधौ सरसजोरि॥खेळति बसंत पियन-वरु किसोरि॥धु०॥ इत हरुधर संग सब ग्वारु बारु॥ मधि नायक सोहैं नंदलाल ॥ उत जुवित जुथ अदभुत स्वरुप ॥ माधव नायक सोहें स्याम अति अनुप॥१॥बोहोरि निकसि चले जमुना तीर॥मानौँ रतिनायक जीयकों धीर॥देखनरति नायक पीय हें जाइ ॥ सँग ऋतु वसंत है परत पाय ॥२॥ बाजित ताल, म्रदंग, तुरि॥पुनि भेरि, निसान, रबाब, धुरि॥ ढफ, सहनाई, ऊांऊ, ढोल।। हँसत परसपर करत क-होंत्र॥३॥ चोवा, चंदन, मधि कपुर ॥ साख, अगर, अग्गजा, चुर॥ जाई, जुही, चंपक, राइ बेलि॥ रसि-कमघनमें करत केलि ॥४॥ त्रज बाढ्यो कौतिक अनंत ॥ सुंदरि सब मिलि कियो मंत ॥ तम नंद नंदन की पकरि लेऊ ॥ सखी मंकरपन की मारि देऊ ॥५॥ नवल वधु कीनों उपाइ ॥ चऊं दिम तें सब चली धाइ॥ श्रीराधा पकरि स्याम की लाइ॥ सखी संकरपन जिन भाजि जाइ ॥६॥ अहे। संकर-पन ज सनो बात ॥ नंदलाल छांडि तुम कहँ जात ॥ दे गारी वऊ विधि अनेक ॥ तब हळधर पकर सखी इक ॥ ७॥ अंजन हरुधर नैंन दीन ॥ केमरि कुँमकुम मुख मंजन कीन ॥हलध्य ज फगुवा आनि देऊ ॥ तम कमल नैन कों छड़ाइ लेऊ॥ ८॥ जो मांग्यों मो फग्वा दीन ॥ नवल लाल संग केलि कीन ॥ हँसित खेलित फिरि चले धाम ॥ बज ज्वती भई परि पुरन काम ॥९॥ नंदरानी ठाडी पोरि दुआरि ॥ नोछावरि वह देत वारि ॥ वपभान सुता संग गसिकराइ॥ जन 'मानिकचंद' बलिहारी

वि.

98

जाइ ॥१०॥२॥ୱ्धा। केसरि बस्न के पद्दा। ताल धमार ॥ विविधि वसंत वनाएं चलीं सब दैखन कुँवर कन्हाई ॥ गिरिघटीयां द्रमलता सुगंध अलि ठाडे सजि सुखदाई॥ १॥ बागों केसरी चोवा सोहै सुरँग गुलाल उडाई॥ ब्रजबालक गावति कोला-हरु धृनि 'व्रजाधीस' मन भाई ॥२॥१॥५॥। पीत, लाल वस्त्र के पद् ॥ चलरी नवल निकुंज मंदिर में वन वसंत बैठे पिय प्यारी॥ बागो पीत रँग वन्यों भूपन लाल रँग छिब न्यारी॥ १॥ मारी सुरंग, सोहै छिब नीकी कँचुकी पीत प्रिति अति भारी॥करि दरसन सुख केलि "सरस रँग" कु-मल विचित्र रँजीत सुखकारी ॥२॥१॥鍋॥ दो, तीन तुकके पद् ॥ ताल चोताल ॥ अवकें बसंत न्यारोहि खें हैं मेरीसों न मिछि खेहैं नारी तेरीसों ॥ दुचित होति कछुं न सुख पइयतु काह

सों न मिलि मेरीसों ॥१॥ देखेंगी जो रंग उपजगी

परसपर राग रंग नीकें करि फेरीसों ॥ 'हरिदास'

बसंत, दो तुक के पद.

के स्वामी स्यामा कुंजविहारी रंगहीं में उपज केरीसों ॥२॥१॥ 写 ॥ आई ऋत चहं दिस फूँट दुम कानन कोकिला समृह मिलि गावत वसंत ही ॥ मधुप गुंजारत मिलति सप्त सर भयो है हलास तनसन सब जंतही ॥ १ ॥ सुदिन ग्सिक जन उमिंग भरे हैं नहि पावत मनमथ सुख अंत ही॥ 'कुंभनदास' स्वामिनी बेगि चिल यह समे मिलि गिरिधर नव कंत ही ॥२॥२॥ध्ना। कवकी हों खेळित मोहि सों अरत हो सबन छांडि मेरी आंग्विन भगति हो ॥ रहो हो रहो हो हरि हो हूं न और त्रिय नेकु न टरत हो ॥ १ ॥ नेन मीडि फिरि फिरि मसिकात जात हों हुं जानित तेसी मोसों करति हो ॥ 'कल्यान' के प्रमु गिरिधरि रति

बसंत, चोताल के दो तुक के पद. पति विवस व्हें न डरति हो ॥२॥३॥ध्ना। जोवन मोर रोमावली सुफल कला कँचुकी वसंत ढाँपि ले चली वसंत पूजन ॥ वरन वरन कुसुम प्रकृत्रित अँव मोर ठौर ठौर लागे री कोकिला कुजन ॥ १ ॥ विविधि सुगंध संभारि अरगजा, गावित ऋतुराज राग सहित ब्रज वधु न॥ 'स्रदास' मदनमोहन प्यारी और पिय सहित चाहत कुसल सदा दुहुं जन ॥ २ ॥ ४ ॥ 写 ॥ बसंत ऋतु आई अंग अंग सरसाई खेळति रसिक गिरिधरि पिय माई॥ वन वन फुळ रही बनराई मंद पवन लागति सुखदाई ॥ १ ॥ विहरति लाडिली लाल मनोहर महवरि म्रदंग धनि गतियन भाई ॥ यह ऋतुराज केलि ग्म रह्यें। वज पें 'सरस रँग ' अद्भुत छवि छाई॥ ॥ २ ॥ ५ ॥ 写 ॥ रँगरँगीछो नंदकौं ठाछ रँगीछी प्यार्ग त्रजकी वीथाने में खेलति फागु ॥ रँग-

ਕ.

रँगीले सँग सखा गन रँगीली नव वधु तमींई जम्यों रँगीलो बसंत रागु ॥१॥ रंग रंगकी ओजट छिरकति हरिव हरिव बरिव अनुराग ॥ 'नंद-

दास' प्रभु कांहालीं वरन् वेद हु आपुन मुख कह्यों यह माननि वडभाग ॥२॥६॥ 🚟 ॥ वसंत ऋतु आई आयो पिय घर फुछैं बन उपवन हों

फुळी सब तन॥विरहविथी गई व्हें गई पतऊर भई नई उलही कोमल आनंद घन ॥१॥ मत्त मधुप कुंजन गुंजत मधुर शब्द कोकिल धुनि अलाप गावति सव ब्रजजन ॥ 'हरिव्रह्म ' प्रमुकी बिट बिट जे कैसे के रिकेएरी उनकीं मन ॥२॥ ७ ॥ 🖫 ॥ ताल धमार ॥ अब जिनि मोहि भरो नंदनंदन हों न्याकुल भई भारी ॥ कहत ही कहत कहाँ

नहीं मानत देखे न ए खिलारी ॥ १॥ कालही गुळाळ परचौं आंखिनमैं अज ह भरी नई सारी ॥ 'परमानंद' नंदके आंगन खेलति व्रजकी नारी ॥ २ ॥ १ ॥ 🖽 ॥ केसरि छींट रुचिर बंदन रज स्याम सुभग तन सोहें ॥ वीच वीच चोवा ऌप-टानों ऊपमा कों याह को हैं ॥१॥ यह सुख ऋतु वसंतके औसर राधा नागरी जो हैं॥ 'चतुरभुज' प्रभु गिरियरिनलाल छिव कोटिक मनम्य मोहैं ॥२॥२॥५५॥ खेळति जुगळ किसोर किसोरी ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा अवीर गुलाल लिये भरि फोरी॥१॥ ताल म्रदंग फांफि ढफ बाजित मुस्टीकी थोरी॥ गग वसंत दोहुं मिलि गावत यह मांबरु यह गौरी॥ रिकवत मोहन रँग प्रसपर सव निरम्वति मुख मोरी॥ दास 'गोविंद' किंद मृता तट विहरति अदभूत जोरी ॥३॥३॥५॥॥ गिरिधरिलाल रसभेरें खेलति विमल बसंत राधिका मँग ॥ उडति गुलाल अवीर अरगजा छिरकति ਚ. भरति परसपर रंग ॥ १ ॥ बाजित ताळ स्रदंग अधोटी बीना मुरुठी तान तरंग ॥ 'कुंभनदाम' प्रभु यह विधि कीडति जमुना पुलिन लजावित अनंग ॥ २ ॥ ४ ॥ ﷺ ॥ चळनि धरक वन देखि मिर्खार द्विज प्रमुदित पिक बानी ॥ जमुना तीर सघन कुंजन बनि ठाढों छैंल गुमानी ॥ १॥ फूले वह रँग कुसुम परागिन त्रिविधि पवन सुख सांनी॥ 'त्रजाधीस' प्रभू सब सुख सागर दगन सोभा रंग आनी ॥२॥५॥५॥॥ चटकीछी चोछी तन पहेरै विच चोवा लपटानो ॥ परम पिये लागति प्यारी कों अपने प्रीतमको वानो ॥ १॥ देखित सोभा अंग

अंगकी मनसिज मनही ठजानौ 'सुघरराइ' प्रभू प्यारीकी छिव निरखित मोह्यों गोवरधन रानो ॥ ॥२॥६॥ 🕾 ॥ छींट छत्रीठी तन सुख सारी प्यारी पहेरे सोहै ॥ नवल लाल रस रूप छवीली निरखित मनमथ मोहै ॥१॥ केछि कछा रस कुंज भुवनमें कीडति अति सुख सोंहे ॥ 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज विहारी उपमाकों कहिए कोंहै ॥२॥१॥भू॥ नवल वसंत नवल त्रिंदावन नवल लाल खेलति रँग भीनें हो॥ नई गधिका नई सखीयन सँग नव सिंगार तन कीने हो ॥ १ ॥ नई नई तान अछापति भाभिनि नव केसरि छि छीने हो ॥ 'ऋष्ण दास' गिरिधरिठाल अब होय र्रहे आधीने हो ॥२॥८॥ ﷺ॥ पटभूपन सजि चळी भावती चंपक तन मुख चंद॥ युवन विविधि फुळे इम वेळी मध्य पियत मकरंद ॥ १ ॥ अँग अँगकी छवि कहति न आवे मनसिज मन हि टजानों ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु गसिक मुक्**टम**नि राज्यों गोवरधन सनों ॥ २ ॥ ९ ॥ 🗯 ॥ प्यारी कें मुख्यर चोवाकों राजति रुचिर डिठोना॥

ब.

मनो कमल मकरँद पियनकों उडि बेठयों अति छोंना ॥ १॥ तेसेई चपल नैन अनियांग खंजन

होत लजौनां ॥ 'जगन्नाथ कविराइके' प्रभु मुख यह छिव निरखित प्रमुदित नंद ढीठोंनां ॥ ॥२॥१०॥ 🖺 ॥ वन उपवन ऋतुराज देखि

मनमोहन खेलित वसंत आई ॥ केसरि मुरँग गुळाळ परसपर मुख अंग ळपटावति सुखदाई॥१॥ त्रिविधि सभीर पराग उडावति कोकिल गावति मुद्

सरसाई॥ 'त्रजाधीस' प्रभु विल मन मोह्यों वाजित ताळ मुदंग सुघराई ॥ २ ॥ ११ ॥ 写 ॥ वन्यो छविछो स्याम सखि चिछ वंसीवट वसंत सुख-दाई ॥ करि सिंगार आईं, नंदनंदन जल छोरति

पिचकाई॥१॥ कोउ कुसम माल है आई सुरँग गुळाळ कपोळ लगाई ॥'त्रजाधीस' प्रभु मृद् बीन वजावति गावति कोकिल सुर सरसाई॥

स्या.

८२

२ ॥ १२ ॥ 写 ॥ स्याम सुभग तन सोभित छींटें नीकी लागी चंदनकी॥मंडित सुरंग अबीर कँम-कुमा और सुदेस रज बंदनकी ॥१॥ 'कुंभनदास' मदन तन धन विलहार कीयो नंदनंदनकी॥ गिरिधरिलाल रची विधि मनौं जुवतीजन मन फंदनकी॥२॥१३॥धा श्री राधा प्यारी नवल वि-हारी नव निकुजमें डोले ॥ सकल सुगंधन मेळें परसपर हो हो होरी बोळे॥१॥ गावति राग रँग सँगीतन उपजित तांन अतीलै॥ 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुँज विहारी अति सुख करति कलौले ॥२॥१४॥धा हो हो हरि खेळति बसंत ॥ मुकिलित वन कोकिल कल कुजति प्रमुदित मन गंधिका कँत ॥ १ ॥ विविधि सुगंध छींट नीकी मोभित मुरति केलि लीला लसंत 'ऋष्ण दास' प्रभु गिरिधरि नागर बज भामिनि हिलमिल हँसंत

॥२॥१५॥ध्ना। निरतके पद् ॥ चिठ चिठिरी विंदावन बसंत आयौ॥ फुछि रहे फुछनकें फौग मनु मकरंद उडायो ॥१॥ केकी कीर कपोत अरु खग कलाहल उपजायो ॥ नाचित स्यांम नचावित स्यांमा राधा जु राग जमायो ॥ २ ॥ चोवा चंदन अगर कुँम-कुमा अवीर गुरुारु उडायौ॥ 'व्यासस्वामिनीकी' छवि निरखति रोम रोम सुख पायौ॥३॥१७॥ ॥ 🖫 ॥ छारु रँग भीने बागे खेरुति है री रारुन लाहको सिर पैच बाँघै॥ केसरि आड अगर चंद-नकी पिचकाई भरि भरि साँधे॥१॥ इक गावति इक ताल देति इक रवाव वजावति काँधे॥ सुघ-रगई' कों प्रभु रस वस करि लीनों था थिलंग धृंधे धांधै ॥२॥१८॥ﷺ। सरस वसंत सखा मिल खेले अद्भुत गति नंद नंदनकी ॥ केसरि म्रगमद और अरगजा बनी कीच सुभ वंदनकी ॥ १ ॥

निरतित मुदित मंडिल कें मधि कोटि मैंन दुख खंडनकी ॥ 'सर' स्याम छवि कहाँछौं वरनौ नंद लीला जग वंदनकी ॥२॥१९॥॥॥ परिसिप्ट ॥ ताल धमार ॥ श्री गिरिधरिलालकी वानिक उपर

आज सखी तुन टुटै री ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा पिचकाईन रंग छुँटै गे॥ १॥ लालकै नैना रगमगे दिखियत अंग अनंगन लुटें री॥ 'ऋष्ण दास' धनि धनि राधिका अधर सुधारस घुटै री ॥२॥१६॥५६॥ अरून अवीर जिन डारी हो ठाउन दुखति आंखि हमारी॥ कालिह गुराठ परयो आंखिनमें अजह न भई पिय सारी॥१॥सव मखियन मिलि, मतो मत्यों है अवकी बेर पिय देहं गारी ॥ हाहा खाति तेरे पैयां परति हू अव हों चेरी निहारी ॥ २ ॥ हिलिमिलि खेलें हो पिय हमसों, मानों सीख हमारी ॥ 'घोंघीके' प्रभु तुम

बऊ नायक निस-दिन रहति हँकारी॥३॥१ आङ्जा मान आयो आयो पीय यह ऋतु वसंत ॥ दंपित मन सुख विरहि नैन अंत ॥ फागु खिलावो सँग कंत॥ हा हा करितृन गहति दंत॥१॥तुरत गए हरि छै मनाइ॥

हरिव मिले हिर कँठ लाइ ॥ दुख डारयो तुरत हि भुलाइ॥ सो सुख दुहूनकै ऊर न समाइ॥२॥ ऋतु

वसंत आगमन जानि ॥ नारि न राखो मान वानि॥'सुरद्(स' प्रभु मिल्ले आनि॥रस राख्यों रि रँग ठानि ॥३॥१८॥ष्ट्री। आयो जान्यो हरि ज् ऋत्

वसंत ॥ ललना सुख दीनौ तुरंत ॥धु०॥ फूळे वरन वरन कुसुम पठास ॥ रति नाइक सुख सौं विठास॥

सँग नारि चहुँ आसपास ॥ मुरुठी अमृत करित भास ॥ १ ॥ स्यामा स्याम बिलास इक ॥ सुख-दाइक गोपी अनैक ॥ तजति नहीं कौउ छिनैक ॥ अलख निरँजन विविधि भेख ॥२॥ फाग् रँग रस

करति स्याम ॥ जुवती पूरनि करति काम॥वासर हु सुख देति जाम ॥ 'सुरदास' प्रभु कंत काम

हू सुख देति जाम ॥ 'सुरदास' प्रभु कंत काम ॥३॥१९॥ﷺ॥ ऋतु बसंतमुकिटतवन सजनीसुवन जुथिका फूर्छा ॥ गुनन गुनन गुंजति दुहुं दिस

मधुप मंडली कुली॥१॥श्रीगोवरधन तट कोकिल कुजति वचनन कर रस मूली॥ देखि वदन गिरिधरनलाल कों भई उडुपति गति लुली॥२॥ ऋतु कुसुमाकर राका रजनी विग्हिन नित प्रति-कृली॥ 'कुप्नदास' हरिदास वर्ष धिर केलि कला अनुकुली॥३॥२०॥ध्नाकुंज विहारी प्यारीके

कृळी ॥ 'क्रप्नदास' हरिदास वर्य घरि केलि कला अनुकुली॥३॥२०॥ध्ना।कुंज विहारी प्यारी के मँग खेळित वसंत श्री बिंदावनमें ॥ गोर स्याम मोभा रस सागर मोद विनोद समात न मनमें ॥१॥ तन सुखकी चोळी कुँमकुम रँग, भीजि लगी न दिखियत तनमें ॥ उरज उघारेसे अनियारे गडि गई नागर कें लोचनमें ॥ २॥ घाय घरी कामिनी पिय मोहन हिये लसति ज्यों दामिनी घनमें ॥ 'च्यास स्वामिनी' जुवती जुथ मधि प्रतिविंबति मोहन आनन में॥३॥२१॥ध्वा कुसुमित वन देखन चली आज॥ तहँ पगट भयी रति रंग राज॥ अति गुंजति कोकिल कल समेत॥ जुवतीजन मन आनंद देत ॥१॥ राधिका सहित राजति निकंज ॥ तहँ मदनमोहन सुंदरता पुंज॥दंपति रति रस गाँव हलास ॥ यह सदा वसो मन 'स्रदास' ॥२॥२२॥ ॥ध्ना। निरतके पद् ॥ खेळित मदन गुपाळ वसंत ॥ नागरि नवल रसिक चूरामनि सव विधि राधिका कुँत ॥ १॥ नेन नेन प्रति चारू विलोकनि वदन वदन प्रति सुंदर हास॥ अंग अंग प्रति प्रीति निरंतर रति आगम निस जा हि विलास ॥ २ ॥ वाजित ताल मदंग अधोटी ढफ वांसुरी कुलाहल केलि॥ 'परमानंद ' स्वामी के संगम नाचित गावित रंग रोले ॥३॥२०॥धा। खेलिखेलि हो लडेंती राघे हरि के संग वसंत ॥ मदन गुपाल मनोहर मूरति मिल्यों हे भावतो कंत ॥१॥ कौन पुन्य तपकौ फल भामिनि चरन कमल अनुराग॥ कमल नैन कमलाको व्हाभ तुमकों मिल्यो सुहाग ॥२॥ यह कालिंदी यह त्रिंदावन यह तरु वरकी पांति ॥ 'परमानँद' स्वामी संग क्रीडति द्योस न जानि राति ॥३॥२३॥५५॥ घन वन द्रम फुलै सुमुख निहारे ॥ अंकुर मधि मदमत्र फुमति सखी मिथुन मधुप कुछ डारहि डारै ॥१॥ कृह-कृह पिक बोले मदन सिंधु कलोले वऊ विहाँग गावति अति सारे ॥ जुवती जुथ प्रति विवित पिय उर मनिगन खचित विमल बर हाँरै॥ २॥ गिरिधरि नवरँग सुनि सस्ती तुव सँग चाहति वसंत विहारे ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु माधव मन हरि

जीति छैहुं रति मंत्र विचारे ॥३॥२४॥ﷺ चलो विपिन देखिए गुपाल संग सोहत नव बजकी बारु ॥ श्रृ० ॥ लपटित रुखित रुता अति गजित तरु तरवर ज्यों तमाल॥ जाहि जुही कदंव केतुकी चंपक बकुरु गुराब॥१॥ कोमरु कुरु केरि किज पिय तरिन तिनया के तीर ॥ सितल सुगंध मंद मलयानल बहेतु है त्रिविध समीर ॥२॥ प्रफुलित वकुल विविधि कुसुमावली तुमही गुंथौ पिय माल॥ 'आमकरन ' प्रभु मोहन नागर सुंदर नेन विसाल ॥३॥२५॥धा। छिरकति छींट छवीली राधे चंदन भरि भरि वोरि रे॥ अवीर गुलाल विविधि रँग सोंधो लोचन परि गई रोगी रे॥१॥ सरवसव वस कियों रसिक कुमारी प्रेम फँट् हिंडोरी रे॥ 'सूर' प्रभु गिरिधरन ठाल की दे रही पान अँकोरी रे ॥२॥२६॥ﷺ। पीय देखो वन छवि

९० बसंत, दो, तीन तुकके पद. फू.

निहारि बारबार यह कहति नारि॥धु०॥ नव पछव बऊ सुवन रँग ॥ दुम वेली तनु भयो अनंग ॥ भँवरा भँवरी अमत सँग ॥ जमुना करति नाना तरँग विच

पंकज ता मधि भूँग॥१॥ त्रिविधि पवन महा हरख देन॥सदा वहतितहँ रहित चैन॥ 'स्र दास' प्रभु करि तुरत गेन॥ चछे नारिमन सुखदु मेन॥२॥२ ०॥५॥ फूळ फूळेंगे चिट देखन जेए नव वसंत हुम वेटी॥ नव्यंग्रा मदन गणाळ मनोहर नवळ गणिका

नवरंग मदन गुपाल मनोहर नवल गिथका केली ॥ ऋतु कुसुमाकर राका रजनी मधुप वृंद सब हेली ॥ मनो मुदित जुवती मंडलमधि

सव हेली ॥ मनो मुदित जुवती मंडलमधि खरजादिक तानन मेली ॥ २ ॥ विविधि विहार विविधि पट भुपन विविधि मांति खेला खेली ॥ मुनि 'ऋण्ण दास' सुर्गत रस सागर गिरिधरि पिय विरहे बज पेली ॥ ३ ॥ २८ ॥ ﷺ ॥ फूली हुम विलि मांति ॥ मनो नव बसंत सोभा कही न जाति ॥ अंग अंग सुख विरुमित मधन कुंज ॥ छिन् छिन् उपजति आनंद पुंज ॥ १ ॥ देखि रँग

छिनु छिनु उपजिति आनंद पुंज ॥ १ ॥ देखि गँग रँगे हरखे नैन ॥ स्रवनन पोखित पिक मधुप बेन ॥ सुख दायक नासा नव अमोद ॥ गमना वऊ स्वादन बहोत बिनोद ॥ २ ॥ कुमुमन कुमुमाकर

स्वादन वहात विनोद ॥ २ ॥ कुमुमन कुमुमाकर मुहाइ ॥ त्रिविधि समीर हियो सिराइ 'दास चतुरभुज ' प्रभु गुपाल ॥ वन विहरति गिरि-धरनलाल ॥ ३ ॥ २९ ॥ ﷺ ॥ त्रिंदावन फुल्यों नव इल्लास गोवरधन गिरि कें आस-

पाम ॥ भ्रु०॥ चिट सजल कदली पुंज फोपि॥ तरु तरुत तरुनता अरुन कोपि॥ जुवनी जन बिह-रित मदन चोंपि॥ तन मन भन जोवन हिर हें सोंपि॥ १॥ सित असित कुसुम मंडपन छांह॥ कुछ कमोद कुंद मंदार तहाँ॥ खेलित वसंत गिरि-धरन जहाँ॥ वपभान सुता कें कंठ बाँह॥ २॥ वसंत, दो तीन तुक के पद.

भयों अनंग अंग बिन सिवकें ताप ॥ सोई फेरि अब स्थिर रही थाप॥ भइ मगन मिट्यों अब सव संताप ॥ श्रीवहुभ सुत पद रज प्रताप ॥३॥

॥ ३० ॥ 🚟 ॥ विहरति वन सरस वसंत स्याम॥ जुवतीज्थ गाँवे छीला अभिराम ॥ धृ० ॥ मुक्ति-छित नृतन संधन तमा**छ ॥ जाई जुही चंपक**

गुङाल ॥ पारजात मंदार माल ॥ लपटाति मन मयुकरन जाल ॥ १ ॥ कृटज, कदंव, मृदेम ताल ॥ देखि वन रीके मोहनलाल॥ अति कोमल

न्तन प्रवात ॥ कोकिल कल कुजित अति ग्यात ॥२॥ लिति लवंग लता स्वास ॥ केत्की तस्नी मने। करीतहास॥ इह भांति लालन करें। विलास॥ बार्ने जाइ जन गोविंद दास'॥३॥३१॥ः॥ मुख मसकति मन वसी नवल वर, चितविन चित हीं। छीनों ॥ कुंजनि केलि रहसि रस वरखित और अरगजा भीनो ॥ १॥ अवीर अगर मन वरन

Į.

विराजित राग वसंते कीनो ॥ 'हरिटाम' के स्वामि स्यामा कुंजविहारी देखों मेंन मन हीना ॥ २ ॥ ॥३२॥॥॥ रतनजटित पिचकाई कर छिए भर्गत लालकों भावे ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा विविधि पुंद वरसावे ॥ १ ॥ कवहुंक कटि पटि वाँधि निसंक छों छै नवला सीधावे॥ मना मग्द चंद्रमा पगट्यो ब्रजमंडल तिमिर नसावे ॥ २ ॥ उडिन गुटाल परसपर आँधी रह्यो गगन टीं छाई॥ 'चतुरभुज' प्रभु गिरिधरन लाल छिव मोपे बरनी न जाई ॥३॥३३॥५॥ ऋतु वसंत स्याम घर आए तन मन धन सब बारों ॥ है गुलाल और अँगन छिरकों पलकन सो मग कारों ॥ १ ॥ चोवा चंदन और अरगजा सब संखियन पे डारों ॥ उडति गुलाल लाल भए 68 बादर भरि पिचकारी मारों ॥२॥ खेलोंगी में चतुर पियासों आय वसंत सँवारो ॥ 'सूरदास' अनहीतन के मुख सब भूपन भरि डारों ॥३॥ ॥३४॥🔄॥ लाल गुपाल गुलाल हमारी आँखिन में जिन डारो जू ॥ वदन चँद्रमा नेन चकोरी इन अंतर जिन पारी जु ॥१॥ गावी गगु वसंत

परसपर अटपटे खेळ निवारी जू ॥ कुँकुम रँगसीं भारे पिचकारी तिक नैनन जिन मारों जु ॥२॥ वंक विलोचन दुखके मोचन भरिके दृष्टि निहारी ज् ॥ नागरी नायक सव सुखदायक 'ऋष्ण दास' कीं तारी जु ॥ ३ ॥ ३५ ॥ द्धा। मुनि प्यारी के लाल विहारी खैलिन चली खेलें॥ चंदन वंदन अरु अग्गजा कुँकुम रस है पेहैं ॥ १ ॥ हिए अवीर अरगजा कुंज कुंज में केहें ॥ तुम हम-कों हम तुमकों छिग्कें रंग परसपर केले ॥२॥

मलय समीर रसति अलि दंपति लुमन पाद पद्मजा याती॥ ब्रिंदा विपिन तरनि तनया तट सुखद चँदकी राती ॥ २ ॥ बिहरति सखी जुथ

है पिय सँग बाँधी प्रेमकी गाती ॥ सुरति विलास गुन रासि राधिका 'रसिक ' कँठ लपटाती॥३॥

॥२॥५॥ नवल वसंत फूली जाती॥ पिक कृह कृह स्याम गुपालह भावे अँव डार मधु-

माती ॥ १ ॥ इहि औसर मिलि लाल गिरिधरि सों वाधी प्रेम गुन गाती॥ "कृष्ण दास" स्वामिनी

राधिका सुरति केछि रँग राती॥ २॥॥ ३॥ 🏭 रहो रहो विहारी जू मेरी आँखिनमें वृका जिन मेळी ॥ अंतर व्हे मुख अवलोकनको ॥ और

भाँमनी निहारी मिल्यो चाहै मिस करि पेंया लागों पलपलकों ॥ १॥ गावति खेलति जो सुख उपजित सो न कोटि बल है जुबतीनकों ॥ हरि- दासके स्वामी कीं हँसित खेलित मुख कहँ पाइ-यत है यह सुख मनकों ॥ २ ॥ ४ ॥ 🗐 ॥ सब अंग छोंदे लागी नीको बन्यों बान ॥ गोरा अगर अर-गजा छिरकति खेलति गोपी कान्ह ॥१॥ हाथन

भरे कनक पिचकाई भरि भरि देति सुजान ॥ सुर नर मुनि जन कौतिक भूछि जय जय जदु कुल भान ॥२॥ ताल पखावजबेन वांसुरी राग रागिनी

तान ॥ विमला "नंददास" विल वंदित नहि उप-माकौँ आन्॥३॥५॥ﷺ। ताल चोताल॥ आई वसंत ऋतु अनुप नृत कंत मोरै ॥ बोलति बन कोकिला मनौं कुह कुहु रस ढोरे ॥१॥ फूली बनराइ जाइ कुंद कुसम घोरै ॥ मद रस के माते मधुप फिरति दौरे दौरे ॥२॥ हम-तुम मिलि खेलें लाल कुंज भवन चौरे॥ 'गोविंद ' प्रभु नंद सुवन खेलति ईक ठौरे ॥ ३ ॥ १ ॥ 写 ॥ इत हि कुँवर कान्ह उ.

कमल नैंन, उतिह जुवती जहँ सकल ब्रजबासी॥ खेलित वर बसंत बांनिक सौं, बरनों कहा छिब

पगट भई मनों काम कलासी॥१॥ भरि भरि गोद अबीर उडावति निविड तिमिर मैं यौं राजति ठौर ठौर ससी प्रभा कलासी॥ 'कल्यान 'कै

प्रभु गिरिधरन रसीक वर तरु तमाल सँग लपटानि हैं कनक लतासी ॥२॥२॥ 🖫 ॥ उमँगी त्रिंदावन देखों नवल-वधु आवे॥ आज सखी ब्रजराज कों

वसंत है वधावे ॥१॥ चारु चंदन चरचित अरचित तिरुक दें सिर नावे ॥ देखति सुख रागति नीकों बुँद बुँद गांवे ॥ २ ॥ कुंज भवन ठाढे हरि सुनि

सुनिसचु पावै॥ "छीत स्वामि" गिरिधरन श्रीविद्वल व्रजजन मन भावें ॥ ३ ॥ ३ ॥ 🖫॥ निरत ॥ ऋतु वसंत बिंदावन फूछे दुम भाँति भाँति, सोभा कछ कही न जात, बोलत पिक मोर कीर॥ माधुरी गुलाब कमल, बोलसरी कुंद अमल, राइबेलि मॉन जुही मँबर पुंज, करति गुंज, सघन कुंज, जमृना तीर ॥ १ ॥ खेलति गिरिधरनलाल, संग गिथका रसाल, लिरकति केसरि गुलाल, चोवा झगमद अबीर॥ 'ऋष्णदास' हित विलास, निरखति मन अति हुलास, बाजित थेई थेई मृदंग बाँसुरी उपंग चंग जांक जालरी मंजीर।२।२१।१५० ﷺ ऋतु बसंत बिंदाबन बिहरति बजराज काज साजे हुम

नव पहुव प्रफुलित पोहोपन सुवास ॥ कलापी. कपोत, कीर, कोकिल, कमनीय कंठ कृजति स्रव-नन सुनित होत है हो हिय हुलास ॥ १ ॥ तेसीई त्रिविधि पवन बहति तेसोई सीतल सुगंध मंद रँग उपजित हे हो अति उलास ॥ प्रभु 'कल्यान' गिरिधर, उत जुवति जुथ मधि राधा, केसरि छिर-कति अबीर गलाल उडावित आवित है हो करें

१०० रंग रास ॥ २ ॥ ५ ॥ । एतो जक जोरति सोंघे वोरति हे गोरी सुखकारी ॥ हा हा विहारी बलाई ठेंहु तुम खेलो क्यों न सम्हारी॥१॥ केसरि कनक कमोरी भरि भरि छै छै देति पिय पर ढोरी॥ सकल कोमल गात रसिक तुम देखौ जियन विचारी ॥२॥

सखी वृंद मनमोहन गहि घेरें, भरि लीनें अँक-वारी ॥ प्यारी बोहोत अरगजा भिजये 'रिपिकेस' विरुहारी ॥ ३ ॥ ६ ॥ 쯝॥ कुच गडुवा जोवन मोर कंचुकि वसन ढाँपि राख्यों हे वसंत ॥ गुन मंदिर अरु रुप वर्गीचा तायधि वेठी है मुख ठसंत ॥१॥

कोटि काम लावन्य विहारी जू जाहि देखें ते सब दुख नसंत ॥ ऐसे रिसक 'हरिदास के स्वामी ' ताहि भरनि आई प्रभु हसंत ॥ २ ॥ ७ ॥ 🖫 ॥ न्वेले खेलिंग कान्हर त्रियन फुलवारी में छिरकी छिगकि गंग भगति यों सुख करें ॥ अति उत्तम बसंत दो, तीन तुक के पद.

चंदन बंदन लीने और अरगजा करी कें एम अनुराग छिरिक छिरिक तरुनी विद्देर ॥ १ ॥ एक कर पोहोप माल गरे मेलित दुजे मीर धरा-वति कोऊ धृप अधर है सुवास करें ॥ हरिदास कें स्वामी स्यामा कुंज विहारी तीन लोक जाकें वस सो राधा के मुख पे अवीर डरप कें धरें॥ २॥ ॥ ८ ॥ 写 ॥ नवल बसंत उनए मेघ मोरिक कुह-कनी ॥ पिक वानी सरस वनी कह कहक होकनी ॥ १ ॥ दंपति मधुपनकी पाँति अंकुर महकनी ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु गिरिधर मदन जिति कोकिला

टहुकनी॥२॥९॥१५५॥ﷺ। बाने बाने खेळाने चळी कमलकरी विकास लस ब्रजनारी॥ अपने अपने ग्रेह तें निकसी एक ठौर भई सकल फुलि मनों वारी फुलवारी ॥१॥ तरु तमाल लाल ढिग ठाँढ राजत चहं दिस तें कनक बेठि गोपी भरति

भाजित मनौं पवन डुलाए आगै पाछैं होत जोवन बारि ॥ 'सूरदास ' मदनमोहन अँग संग बसंत सोभित अनंग अद्भुत वारि सँवारि ॥ २ ॥ ॥ १०॥ 🏭 । त्रिंदावन विहरति त्रज जुवती जुथ संग फागु ब्रजपित ब्रजराज कुँवर परम मुदित ऋतु वसंत ॥ चोवा मृगमद अवीर, छिरकति भारे कुसुम नीर, उडवित वंदन गुलाल निरिख निरिख मुख हसंत ॥ १ ॥ फूछै बन उपवन लखि वृक्ष वेिंछ पुहुप पुंज गावति पिक, मोर, कीर उप-जित अति सुख छसंत ॥ करति केछि ऋतु विछास "छीत स्वामी" गिरिवरधरि श्रीविद्टलेस पद प्रताप सुमरति दुख नसंत ॥ २ ॥ ११ ॥ 歸 ॥ हो हो बोले हरि धुनि वन गाजी॥ नूपुरु किं-किनी सुरसौं मिलवत सुनि सखी मधुर मुरली दुहुं दिस वाजी ॥ १ ॥ कुहुकुहु पिक बोलै मधुप

प्या. बसंत ताल सुरफाग, आडचोतालके पद. १०३ ही हिये कलोलें विविधि भाँति मुकुलित दृम राजी ॥ उडति कपूर धूरि रही है गगन पृशि गोकुल सुंदरी सँग रास केलि साजी ॥ २ ॥ गिरिधरि पिय प्रमुदित कीडा वस मरकत मनि

पीक ठीक राजी ॥ 'ऋष्ण दास' मभु मान प्यारी कें विनोद हित मदन दूत केलिकें जीति रति वाजी ॥ ३ ॥ १२ ॥ 🚝 ॥ ताल सुरफाग ॥ प्यारे कान्हर हो जो तुम आंखिन भरो जू॥ ऐसे वदि खेळी खेिळ अब कें बसंत मोसों सोंह जू करी जू ॥१॥ हैं। कहि छैत बात भूछि जिन जाओं औरकें खिलायवैकों हरि जिन हरो जू॥ 'कल्यान के प्रभ' गिरिधर निधरक काहू धाय जिन धरो जु ॥ २ ॥ १ ॥ 写 ॥ ताल आडचोताल ॥ देखीं नवल वनें नवरंग॥ नवल गिरिधरलाल सुंदर नवल भांमिनि सँग ॥ १ ॥ नवल वसंत नवल बिंदावन

来. नवल है प्रथम प्रसँग ॥ नवल विटप तमाल कें

बीच नवल सुरत तरँग॥२॥ नवल केसु फुळै प्रफु-लित नवल स्यामा अंग ॥ नवल ताल पखावज बाँसरी नवल बाजति चँग॥३॥ नवल मुक्ताहार उर पै निरिष रुजित अनंग ॥ 'सूर' नवल गुपाल हि निरखति भई मनसा पंग ॥४॥१॥५॥। । ताल चौतालया भूपद् । ऋतु वसंत कुसुमित नव

वकुल मालती॥ कुरव मलिका जुथ गुंजति वहु अिंठ पांति ॥ १॥ कुजत कलकल हँस केकि मिथुन कीरा ॥ बहत मलय पवन विमल सुरभि

जमुना तीरा ॥ २ ॥ गावति करु गीत जुवती वोलति हो हो होरी॥ केसारे मृगमद कपुर छिरकति नवगोरी ॥ ३ ॥ मनि नूपुर कर किंकिनि कंकन धुनि सोंहै॥ 'हरिजीवन' प्रभु गिरिवरधर त्रिभुवन मन मोहै ॥ ४ ॥ १ ॥ 🐃 ॥ किडति बिंदावन चंद

बसंत बीरी के पद, ताल चौताल. १०५

वज जुवतिन संगे॥ भाव पूरि भरित नेन मुचित भुव भंगे ॥ १ ॥ इक रुप सुधा सिंधु नेन खर्चा

पीवे ॥ इक अंग रस भरि भुजा लाई रही ग्रीव ॥ २ ॥ इक लेति तँबोल अधर छुवाँवे ॥ इक अँक भरति इक आप अँक आवें ॥ ३ ॥ इक

बेन सुर समान उघटि तान गांवे॥ इक कृचन मँडलमें चरन कमल जांवें ॥ ४ ॥ चुंबति इक वदनकमल चिवुक गहे बाला॥ इक उरज कुँम-कुमतें चरचत बन माला॥५॥ इक नीवी मोचन भए सचिकित भए नैंना ॥ इक नैंन देति पेंहें इक कहति बेना ॥६॥ इक चिठत पवन रुठित अँचरन सह्यारे इक ॥ सिथल बसन केस लाज

तिज निहारे ॥ ७॥ स्याम द्रम रसाल बाला कोकिल श्रम कुंजे॥ 'रसिक' मनोरथ राधे राधे सम पुजे ॥ ८॥ २॥ धा राधे जू आज बन्या

म. है बसंत मनो मदन बसंत विहरत, नागरी नव कंत ॥ १ ॥ मिलत सनमुख पाटलीपट, मत्त मान जुही॥बेळी प्रथम समागम कारन, मेदनी कच गुही ॥२॥ केतुकी कुच कलस कंचन, गरै कंचुकि कसी॥ मालती मद विसद लोचन निरखि मृदु मुख हँसी ॥ ३ ॥ विरह व्याकुल कमलनी कुल, भई वदन विकास ॥ पवन परिमल सहचरी पिक गान ह्रदय विलास ॥ ४ ॥ उत सखी चंपक चतुर कदम नुतन माल॥ मधुप मनि माला मनो-हर'सुर' श्री गुपाल ॥५॥३॥ध्या तिताल॥ मध् ऋतु त्रिंदावन माधवी फूली॥ विटप पाँति सुहाई सोभा बरनी न जाई गंध ठुव्ध अिंठ मंडली भूली ॥१॥ कोकिल कपोत कीर मधुप बिहँग बीर गावति वसंत गग अनुकुली ॥ नाचित केकी सुठान छटी जन लेनि मान सुभग वंदि निस सारस मुली ॥२॥

तरिन तनया तट निकट वंसीवट जोगी एकमी नहीं कहूं समतूली ॥ मलय पवन मेव नाम हीन कुंज देव सुरतसँगम सुख हिंडीरे जुळी॥३॥ मृगमद अवीर गुलाल कुँमकुमा चंदन वनी कपुर घूछी ॥ बाजित ताल मुदंग आवज वेन उपंग बोलित हो हो होरी लाज कंचुकी खुली ॥ ४॥ खेळति राधिका नाथ अनंत जुवतीन साथ विविध भूपन वऊ रँग दुकूली॥ 'कृष्ण दास' प्रभु हरि गोवरधनधरळाळ निरिख मन उडपति गति भई ळूळी ॥ ५ ॥ १ ॥ 🚝 ॥ मोह्यो मन आज् सखी मोहन बळ वीर ॥ मधुर-मुरली सुर गावति सकल जमुना तीर ॥१॥ कनक कपिस अति सौभित कटि तट वर चीर ॥ मानिकि इति ओढनी साँवल सरीर ॥२॥ सखि सिखंड सिर सिंधू मुदित भेप अभीर ॥ मुकलित नव त्रिंदावन कृजति

बसंतके पद, ताल धमार. १०८ श्री.

पिक कीर ॥३॥ "कृष्ण दास" प्रभु कै हित त्रिगुन वहें समीर ॥ गिरिवरधर जुवतीन सँग विहरति रति रनधीर ॥४॥२॥१६५॥ध्धाताल धमार॥

श्रीत्रिंदाबन खेलति गुपाल बनि वनि आई व्रज की बाल ॥१॥ नवल सुंदरि नव तमाल ॥ फूलै नवल कमल मधि नव रसाल ॥२॥ अपने कर

सुंदर रचित माल ॥ अवलंबित नागर नंदलाल ॥३॥ नव गोप वधु राजति हैं सँग ॥ गज मोतिन संदर रुसति मंग ॥ ४॥ नव केसरि मेद अरगजा घोरि ॥ छिरकति नागरि कौं नव किसोर ॥ ५ ॥ तहँ गोपी ग्वाल सुंदर सुदेस ॥ राजित माला

विविधि केस ॥ ६ ॥ नंदनंदन की भुव बिलास ॥ मदा रही मन 'स्रदास' ॥ ७॥१॥ 📰। अद्भुत सोभा त्रिंदावनकी देखो नंद कुमार ॥ कंत वसंत आवत जानि वन बेठीन कीये हैं सिंगार ॥१॥ पल्लव बरन बरन तन पहरे बरन बरन फर फुरु॥ ऐतो अधिक सहाए लागति मन अभरन सम-तुल ॥२॥ बालक विहँग अनंग रँग भरि बाजित मनों बधाई ॥ मंगल गीत गाइवेकी जानो कोकिल बधु बुलाई ॥३॥ बहति मलय मस्त परिचारक सबके मन संतोपे ॥ द्विज भोजन सीं होति अछीनकै मधु मकरँद परोसे ॥४॥ सुनि सखी बचन 'गदाधर' प्रभुके चली पीतमपे जइए ॥ नव निकुंज महल मंडप में हिलिमिलि पंचम गेंए ॥५॥२॥धा। आजु सांवरो घोप गलि-नमें खेळित मोहन होरी ॥ संग सखी छीए राधिका बनी है अनुपम जोरी ॥१॥ बाजित ताल मुदंग छंदसौं बीच मुरलीकी थोरी॥ अरस परस छिरकति छिरकावति मोहन राधा गोरी ॥२॥ अवीर गुलाल उड़ित वृका रँग जोरी भरे

११० बसंत के पद, ताल धमार. क्.

भरिकोरी ॥ केसरि रँग सौं भरि पिचकारी मारति हैं मुख मोरी ॥३ ॥ छल बल सौं करि आंखि अंजावति लोक लाज सब तोरी ॥ लूटति सुखकी सीवां सब मिल 'परमानँद' कहति निहोरी

॥ ४ ॥ ३ ॥ 写 ॥ आयो आयोरी यह ऋतु बसंत ॥ मधकरन मधु बन वसंत ॥ दे दे तारी तिय-

मन हँसत ॥ मलय मुगज केसरि घसंत ॥ १ ॥ खेल मच्यो ब्रजपुरकें मांफ॥ कोउ गिनति न भोर मध्यान्ह साँऊ॥ बाजे मुरज ढफ बीन ऊांऊ॥ उड़ित गलाल अबीर तांऊ ॥ २ ॥ गिरिधर पिय जलजंत्र हाथ ॥ वल्लव वल्लवी भोर साथ ॥ गावित गुन मधु माधो गाथ ॥ निरखि मुरिक परयौ रतिकौं नाथ ॥ ३ ॥ नित उठि द्योस बिनोद बात ॥ पसु पंछी फरें न मात॥ प्रतिविंवति रवि ससि पात पान 'विष्णुदास' चरन विरु जात जात ॥४॥४॥%

कुसुमित कुंज विषिन त्रिंदावन चलीए नंद्रके लाला॥ पाडर जाई जुही केतुकी चंपक वकुल गुलाला ॥ १ ॥ अँव दाख दाडिम नाग्ँग फुल जांब्र परम रसाला॥ अरु बहुत फूल दुम दिखि-यतु कहति मुदित ब्रजबाला ॥ २ ॥ कोकिल कीर चकोर मोर खग जमुनातट निकट मराछा॥ तिगृन समीर वहति अछि गुंजति नीकी ठौर गुपाला ॥ ३ ॥ सुनि मृदु बचन चलै गिरिवरधर कटि तिट किंकिनि जाला॥ नाना केलि करति सखी-यन सँग चंचल नैन विसाला ॥ ४॥ तहँ वीनत कसम राधिका भामिनी ग्रथित मनोहर माला॥ 'ऋष्ण दास' प्रभुके उर मेलति भेटति स्याप तमाला ॥५॥५॥१७०॥%॥ खेळति गिरिधर रगमगे रंग ॥ गोप सखा बनि बनि आए हैं हरि हलधर के सँग ॥१॥ बाजित ताल मुदंग कांज ढफ मुरली

बसंतके पद, ताल धमार.

मुरज उपंग॥ अपनी अपनी फेंटन भरि भरि

लिए गुलाल सुरँग ॥२॥ पिचकाई नीकै करि

खे.

छिरकति गावति तान तरँग ॥ उत आईं ब्रज विनता बिन बिन मुक्ता फल भारे मँग ॥ ३॥ अचरा उरसि फेंट कँचुकी कसि राजति उरज उतंग॥ चोवा चंदन वंदन हैं मिछि भरति भामते अंग ॥ ४ ॥ किसोर किसोरी दुहूं मिलि विहरति इत रति उतही अनँग ॥ 'परमानंद' दौऊ मिलि विरुसित केरि कलाजू निसँग ॥ ५ ॥ ६ ॥ ﷺ। खेळित गुपाळ सखीन सँग ॥ नवनव अँवर रँग रँग ॥ श्रु० ॥ मुरली वेन ढफ नए चँग ॥ मधि नई कुहूक बाजे उपंग ॥ सुर समूह नई नई तरँग ॥ जहँ नई नई गति उपजति मृदंग ॥ १॥ मृगमद लपटे चंदन सुगंध॥केसरि कुँमकुम मलय मकरँद ॥ हुलसि जुवति वर वृंद वृंद ॥ लीनै

लपेटि आनंद कंद ॥ २ ॥ उडी परसपर अरुन रूँदि ॥ दुरत भरति मुख नैंन मृदि ॥ घृंघटमें मुख लसति मंद्र ॥ मनौं अरुन जलधिमें दुर चँद ॥ ३ ॥ सखी इक तब कियो वंद ॥ चतुर बोलि सिखयो सुछंद ॥ पिय नाम टेरि कहर्यो नँद नँद ॥ रहो रहो भरो जुनागर नँद ॥ ४ ॥ हाथ जारि हरि कीं दिखाई ॥ चोलीमें सोंघो दुराइ ॥ तियन अँक हँसिकें बताइ ॥ गहे तब हि सब परी हैं घाइ॥ ५॥ कोउ निरखति लोचन अघाइ ॥ कोउ आन हम आँजति सिराइ ॥ कोउ मुख पकरि रोरी फिराइ ॥ कोउ कहति भले हो स्यामराइ॥६॥ विवस प्रेमवस स्यामलाल॥ मन भायों सब करति बाल ॥ भरति अँक भरि भरि गुपाल ॥ 'सुरदास' तहँ कामपाल ॥ आ आङ्गा

खेलति पिय प्यारी सौंधें भरि भरि लीएं कनक

११४ बसंत के पद, ताल धमार. पिचकारी॥ छल करि छिरकति भरति परसपर देति दिवावति गारी ॥ १ ॥ छीनि छई मुरली

पीतमकी रंग बढावति भारी ॥ चोवा चंदन बुका वंदन कुँवरि कुँवर पे डारी ॥२ ॥ केसरि आदि जवादि कुँमकमा भींजि रही रँग सारी॥ देति नहीं डहकावति सुंदरि हँसित करित

किलकारी ॥ ३ ॥ फगुवा देहुं लेहु पिय मुर-ली कें कहा कुँवर हाहारी ॥ वरनी कहा कहति

निह आवे बढयो सुख सिंधु अपारी ॥ ४ ॥ इत मोहन हलधर दौऊ भैया उत लिलता राधा री ॥ हित 'हरि बंस' लेह किन मुरली तुमं जीते हमं हारी ॥५॥८॥ 🖫 ॥ खेळित फागु नंदके नंदन सखा सँग सब लीने ॥ अवीर गुलाल अरगजा चौवा केसरि कैं रँग भीने ॥ १ ॥ उत आईं वृपभान नँदनी सखी बसंत के पद, ताल धमार, ११५

सँग सब लाई ॥ मनौं सुक्क कृष्ण पक्ष एक व्हें प्रगट ही देति दिखाई ॥ २ ॥ हाटक गत्न

जटित पिचकाई है धाए सब ग्वाह ॥ छिर-कति जाए जुबति वृंदन पे तकि तकि नेंन

विसाल ॥ ३ ॥ ठाडी सकल नवल त्रज संदरि करति कुलाहल सौर ॥ मनौं सुभट मदन कें

रनमें रहे अपने जीर ॥४॥ चंपक वकुल केतकी जाती कुंद मिछिका फूठी ॥ गुनुन करित हि-रेफ मंडली सबहिन के अनुकूली ॥ ५ ॥ बीन

रवाव बाँसुरी आवज फांझ ताल मुख चंग॥ भेरी पटह अघोटी महुवरि वाजिति सरस मृदंग॥६॥ खेल परसपर बढ्यो अति भारी हरखे सुर नर देव ॥ अदभुत ऋतु अदभुत

यह सोभा कोउ न जाने भेव ॥ ७॥ कोक कला अभिज्ञ कौस्तुमधरि निरिष लजित सत- मार॥ 'गोकुल चंद ' सुखद रस जीवन गोपीन के उरहार ॥ ८॥ ९॥ ﷺ ॥ खेलित बन सरस वसंत लाल ॥ कोकिल कल कृजति

अति रसाल ॥ जमुना तट फूलै नव तमाल ॥ केतकी कुंद नृतन प्रवाल ॥ १ ॥ तह बाजित वीन मृदंग ताल ॥ विच वीच मुरली अति रसाल ॥ नव सत सजि आई ब्रजकी बाल ॥ साज भूपन वसन तिलक भाल ॥२॥ चोवा चंदन

साल ॥ नव तत ताज जार नव ताज साज साज भूपन बसन तिलक भाल ॥२॥ चोवा चंदन अरु गुलाल ॥ छिरकति प्यारी तिक तिक गुपाल ॥ आल्जिंगन चुंबन देति गाल ॥ पहरावित उर फूलनकी माल ॥ ३ ॥ यह विधि कीडित बज चृप कुमार ॥ सुमन वृष्टि किर सुर अपार ॥ श्रीगिरिवरधरि मन हरत मार ॥ "कुंभन दास"

श्रीगिरिवरधरि मन हरत मार ॥ "कुभन दास बाले बिल बिहार ॥ ४ ॥ १० ॥ १७५ ॥ 🖫 ॥ खेलति बसंत श्रीनंदलाल ॥ भरे रँग सब खाल बसंत के पद, ताल धमार. 239

बाल ॥ घु० ॥ जूथ जूथ सब नवल बाल ॥ सजि समाज उडित गुलाल ॥ गावित पंचम सरस राग॥ रुप सील भरी सब सुहाग॥१॥

नव केसरि भाजन भराइ॥ चंदन सौं म्रगमद मिलाइ ॥ बहु गुलाल छिरकें फुलेल ॥ कुंबर कुंबरि रँग बढी केलि॥ २॥ लाल हि ललना भरें धाइ ॥ मुख रोरी मांडें बनाइ ॥ भलें ज कहें तारी बजाइ ॥ भले तियन वस

परे हो आइ॥३॥ अंग अंग रंग सव सुहाइ॥ पिय लोचन निरखें अधाई॥ विलसति सुख वडभाग वाम ॥ सुखी भए तहँ 'सूर' स्याम

॥ ४ ॥ ११ ॥ 🖳 ॥ खेळति वसंत श्रीत्रिंदावन में मोहन कें सँग प्यारी ॥ गौर स्याम सोभा सुख सागर प्रीति बढी अति भारी ॥१॥ चोवा चंदन बुका वंदन अबीर गुलाल उडावति न्यारी॥कंचन

कलस लियें जुवती, कर मारति भारे पिच-कारी ॥२॥ ताल मृदंग फांफ ढफ बाजति बीना धुनि रस सारी ॥ खेलति फागु भाग भरि गोपी रसिकराइ गिरिधारी ॥ ३ ॥ स्यांम सुभग तन नील सरोवर कमल फूली सब ब्रजकी नारी॥ 'ऋष्ण दास' प्रभु या छिब उपर त्रिभुवन कों सुख बिटहारी॥ ४॥ १२ ॥ धाः खेलति बसंत गोकुल कें नायक जुवतीजन कें मंडल बीच ॥ सुरंग गुलाल उडाइ अरगजा कुँमकुमकी जहँ कीच ॥१॥ हाथन छिऐ कनक पिचकाई छिरकति आपुस मांऊ॥ तेसोई सुरँग रँग केसरि कों मनों फुळी सांऊ ॥ २ ॥ श्रीमंडल आवज ढफ बीना कांक फालरी ताल ॥ पटह मृदंग अधोटी महुवरी बाजित बेनु रसाल ॥ ३॥ रविकल कुल कोकिल अति कृजति चहुं और द्रम फूले ॥ तेसीई खे. बसंत, निरत के पद, ताल धमार. ११९

सुभग तीर कालिंदी देखति सुर नर भृत्रे ॥ ४ ॥ यह विधि सब मिलि होरी खेले मन में अनि आनँद ॥ गोबरधनधर रुप उपर जन बिट बिट ' गोकुल चँद ' ॥५॥१३॥ﷺ॥ निस्त ॥ खेलति बसंत राधा प्यारी॥ नाँचित गावति वेन वजा-वित अंस भुजा धरें कुँज बिहारी ॥ १ ॥ साखि जवादि कुँमकुमा केसरि छिरकति मोहन ऊमक सारी ॥ उडित अबीर पराग गुळाल ही गगनन दिस. दीन भयौ अधिकारी ॥ २॥ मधुर कोकिल कुंजित गुंजित मनों देति परस्पर गारी॥ नख सिख अंग बनी सब गोपी गावति, देखति चढीं अटारी ॥ ३ ॥ ताल रबाब कांक ढफ बाजति मदित सबे बिंदाबन नारी॥ यह सुख देखति नैंन सिरानें व्यास ही रोम रोम सुखकारी ॥४॥१४॥ 🖫॥ खेलि खेलि हो लडेंती श्रीराधे

बसंत के पद, ताल धमार.

तोही कों फब्यों हैं बसंत॥ सुनि भामिनि दामिनि सी हो तुम पायो स्याम घन कॅत ॥१॥ जमुना के तट श्री त्रिंदाबन परम अनुपम ठाऊँ ॥ कुंजन

कुंजन केलि करों मिलि सुबस बसों बलि जाऊं ॥२॥ मदन गुपाललाल रसिया कीं रस तेंई है जान्यों ॥ अपनो मन अरु वा मोहन को एक-

मेक करि सान्यों ॥३॥ उडति गुलाल धूंधरि मधि राजति राधा अंग लपटानी ॥ कहि 'भग-वान' हित रामराइ प्रभु यह छिब हिये समानी

॥४॥ १५ ॥ १८० ॥ 🖺 ॥ खेलति वसंत गिरि-धरनलाल ॥ मनमोहन हम बिसाल ॥धृ०॥ सँग सोहित सुंदर अनंग म्वाल ॥ भीने रँग केसरि करति रूयाल ॥ उडति अवीर पचरँग गुलाल ॥

बाजित मृदंग ढफ ऊांऊ ताल ॥१॥ आई बनि वनि मिलि वजकी वाम ॥ श्रीराधा रुखितादिक खे. बसंत के पद, ताल धमार.

सु नाम ॥ गावति पंचम बंधी प्रेम दाम ॥ सो भा पावत भयो नंद धाम ॥ २ ॥ रँग भरति भरावति करति

रँग ॥ रँग भरे बसन राजति सु अंग ॥ लुब्धे सुगंध

भऐ मत्त भुंग ॥ म्रद्ध बोलित डोलित संग ॥ ३ ॥ भरि लियो अबीर मुठी सु हेत ॥ दोऊ तज्यां चाहति पनि राखि छेति ॥ दग मुंदन चमकनि

व्हें स्चेत ॥ बाढित छिव सौं गुनी सुख निकेत ॥४॥ है वरन वरन रँग अमोल ॥ छिरकति हितु व

पिय हित कलोल ॥ फवि रही बुंद सोहति दुकुल ॥ मनों फूलि रहे बहु बरन फुल ॥ ५ ॥ भरे नवल वाम गिरिधर हि धाइ ॥ रहे विविधि भेद रँग अंग छाइ॥ जहँ निरखति सोभा कही न आइ॥ तहँ स्याम रँग जान्यों न जाइ॥६॥ भई मोहित सुर वनिता विमान ॥ मोहै गंधर्व सुनि मधुर

गान ॥ रँग भरौ पिय अति स जान ॥ यह राखि

१२२ बसंत बिरी के पद, ताल धमार.

हिये 'ऋष्ण दास' ध्यान ॥ ७ ॥ १६ ॥ 🖫 ॥ खेलें फागु जमुना तट नंदकुमार ॥ द्वम मोरे

विपिन अठार भार ॥ घु० ॥ हलधरि गिरिधरि म्वाल सँग ॥ मिलि भरति परसपर करति रँग ॥ बाजे मुदंग उपंग चँग ॥ राजे सुंदर विचित्र अँग ॥ १ ॥ ताल मुरज उपंग ढोल ॥ बहु वंदन

उडित गुलाल रौल ॥ बास लुब्ध आऐ मधुप

टौल ॥ तेऊ अरुन भए अलिवर निचौल ॥ २ ॥ बहुरि मधुप गऐ अपने ठाँइ॥ भरि तान पर भमरी नहिं पत्याइ॥ तुम राते भए पति कौन भाय ॥ कोऊ कपट रूप मित वेठो आय ॥ ३ ॥ खटपद कहे तुम भूली बाल ॥ जहँ धरा गिरि अंबर भयो गुलाल ॥ तहँ ऋतु बसंत बिहरित गपाल ॥ 'जाडा कृष्ण' की प्रभु मोहनलाल แช่แงงแรก विरी แ गुरुजनमें ठाडे दौऊ पीतम च. बसंत, बिरी के पद, ताल धमार. १२३

सेनन खेळति होरी॥ नैनन वेनन कहयाँ ज पम्म-पर परम रसिकनी जोरी ॥ १ ॥ पिचकाई हग छुटति कटाच्छन ढोरैं अरुन रँग रोरी ॥ छिरकति रस सौं छेल छबीछी कुंवरि छबीछी गोरी॥२॥ लसति दसन तँबोल रस भीने हँसि निरखति पिय ओरी ॥ मनौ सुरंग गुलाल उडावति संदर नवल किसोरी ॥ ३ ॥ छुटी अलक वदन छिन लागति बरनि सके कवि को री॥ मनौं कनक कुपी चोवा की, कुंबरि सीस पे ढोरी॥ ४॥ कठिन उरोज गाढी जु कँचुकी अरु अँचल ओट अगोरी॥ सँकेत कुँजन जानि रसिक पिय नैन निमेप न मोरी ॥ ५ ॥ लिलतादिक सखी पिय प्यारी अरु गिरि-धारीकी चोरी॥ 'गोकुल बिहारी' कौ मुख निरखति प्रेम समुद्र फकौरी ॥६॥१८॥ध्वा। चलि देखनि जैए नंदलाल ॥ घु० ॥ बनि ठनि आई सब

१२४

તારુ ધમાર. વ.

बजकी बाल ॥ आज ऋतु बसंत गावहु रसाल ॥ १ ॥ चली राघे कुँविर सहचरिन संग ॥ लीऐ हफ आवज किबरी मृदंग ॥ विच महुविर मधुर बाजे उपंग ॥ ले मिली स्थामा जू को राग रँग ॥ २ ॥ रँग रँगी भूमि भवन पच रँग अवीर ॥ आऐ करित कुलाहल जमुना तीर ॥ ठाडे मधु- सूदन रसन गोपी नीर ॥ नव केसिर के रँग रँग है चीर ॥ ३ ॥ जिह कुंज मधुप गुनी बास ॥ बोले अंब डार कोकिल प्रकास ॥ जह स्थाम सुंदर

बोर्छ अंब डार कोकिल प्रकास॥जहँ स्याम सुंदर करें बिलास॥ श्रीजगन्नाथ भजि 'मायौ दास' ॥४॥१९॥ ﷺ॥ चली है भरन गिरिधरन-

॥ ४ ॥ १९ ॥ 歸 ॥ चली है भरन गिरिधरन-ल्याल कों बनि बनि अनगन गोपी ॥ उवटी हैं उवटन नवल चपल तन मनों दामिनी ओपी

॥१॥ पहरे बसन बिबिधि रँग भूषन करन कनक पिचकाई ॥ चंचल चपल बडेरी अखियाँ मनों व. बसंत के पद, ताल धमार. १२५

अरग लगाई ॥ २ ॥ छिरकति चली गली गांकु-लकी कही न परत छवि भारी ॥ उडि उडि केमरि बुका बंदन अटि गऐ अटा अटारी ॥३॥ मखन सहित सजि साँवरे सुंदर सुनति हि सनम्म आए ॥ मनों अंबुज बनबास विवस व्हें अिंट रुंपट उठि धाए ॥४॥ हरि कर पिचकाई निरिष तिय कें नैंना छिबसों हि ठहिराई॥ खँजनसें मनों उडि नव चलै हैं ढरिक मीन हैं जाई॥५॥ पहिलें कान्ह कुँवर पिचकाई भरि भरि तियनकों मेली॥ मनों सोम सुधा कर सींचित नवल प्रेम की बेली ॥६॥पिय कें अँग तियन के लोचन लपटें छिबकी ओभा ॥ मनों हरि कमलन कर पुजे बनी हैं अनुपम सोभा ॥ ७ ॥ दुरि मुरि भरन बचावनि छिब सौं आविन उलटिन सोहै ॥ घुमरयी अवीर गुळाळ गगन में जो देखे सौ मोहें ॥ ८ ॥ विच विच छुटति कटाच्छ कुटिल सर उचटि हूल कों लागी ॥ मुरिक परयों लिख मैन महा भट रित भूज भरि है भागी ॥ ९॥ कहँहों कहीं कहति नहिं आवे छिब बाढी तिहिं काला॥ 'नंद दास' कें प्रभु चिर जीओ बज बाला नंद के लाला

॥ १०॥२०॥ १८५॥ 🖫॥ जुवतिन सँग खेलति फागु हरि॥ बालक बृंद करति कुलाहल सुनति न कान परी॥१॥ बाजित ताल मुदंग बाँसुरी

किन्नर सुर कोमल री॥ तिनहूं मिले रसिक नंद-नंदन मुरली अधर धरी ॥ २ ॥ कुँमकुम वारि अरगजा विविधि सुगंध मिलाई करी ॥ पिचका-ईन परसपर छिरकति अति आमोद भरी ॥ ३॥

ट्रटत हार चीर फाटति गिरि जहँ तहँ धरन धरी॥ काहू नहिं संभार कीडा रस सब तन सुधि विसरी ॥ ४ ॥ अति आनंद मगन नहि जानति बीतति बसंत. मान के पद ताल धमार. १२७

जाम घरी॥'कुंभन दास' प्रभु गोवरधनधरि सरव-

सव दें निवरी ॥५॥२१॥%॥ मान॥ तेरी नवळ तरु-नता नव बसंत॥ नव नव बिलास उपजित अनैत

॥ध्रु०॥नव अरुन अधर पहुच रसाल॥ फुलै विमल कमल लोचन विसाल॥ चिल स्कृटी भूंग भूंग-नकी पांति ॥ मृदु हँसन लसन कुसमनकी भांति

॥ १ ॥ भई प्रगट अलप रोमावलि मोर ॥ स्वास सौरभ मलय पवन ऊकोर ॥ चल फल उरोज

सुंदर सुठान ॥ बोंछै मधुर मधुर कोकिला गान ॥ २ ॥ देखित मोहै ब्रजकुंवर राइ ॥ बाढ्यो मन-मथ मन चोगुनो चाइ॥ तोहि मिलि विलस्यों चाहत हैं स्याम ॥ जाहि देखति लिजन कोटि काम ॥ ३ ॥ तब चली चरन मंथर बिहार ॥ बाजे रुनुनु नूपुर ऊंकार ॥ सुनि पुरुकित गोकुलपति कुमार ॥ मिलि भयौ 'गदा धर' सुख

अपार ॥ ४ ॥ २२ ॥ 🖺 ॥ देखति वन त्रजनाथ आज अति उपजत है अनुसग ॥ मानौं मदन बसंत मिलि दौऊ खेळत डोळत फांग ॥१॥ इम

गन मध्य पलास मंजुरी उठत अगिन की नाईं॥ अपने अपने मेलि मनौं हरि होरी हरिब लगाई ॥२॥ केकी कीर कपोत औरु खग करति कुळा-

हरु भारी ॥ जन जन खेलति ग्वाल परसपर देति दिवावति गारी ॥ ३ ॥ फिछी फांझ निर्फर

निसान ढफ भेरि भँमर गुंजार ॥ मानीं मदन मंडली रचि पुर बीथिनि विपुन बिहार ॥ ४ ॥ नव दल सुवन अनेक बरन वर बिटपन भेख धरें ॥ जनु राजति ऋतुराज सभामें हिस बहु

रंगनि भरें ॥५॥ कुंज कुंज कोकिल कल कूजत बानिक विमल वढी॥ जनु कुल वधू निलज भई हें गावत अटन चढी ॥६॥ कुसुमित छता जहाँ

देखित अछि तहीं तहीं चिछ जात ॥ मनीं षिटप सबन अवलोकति परसत गनिका गात ॥७॥ ठींने पहुप पराग पवन खग फिरति चहुं दिस धाए ॥ तिहीं ओरि संजोगिनि विरहीनि छांडति भरिकरि मनभाऐ॥८॥औरुकहाँछों कहेंं। ऋपानिधि त्रिंदा विपिन समाज॥ 'सूर दास' प्रभु सब सुख कीडति कृष्ण तुह्यारे राज॥९॥२३॥॥॥ देखि सखी अति आज बन्यों त्रिंदावन विपुन समाज ॥ आनंदित व्रजलोक भोग सुख सदा स्यामके राज ॥ १ ॥ राधारवन बसंत मचायो पंचम धुनि सुनि कान ॥ धरनि गिरति सुर किन्नर कन्या विथकित गगन विमान ॥ २॥ कलकल कोकिल कृजत उपर गुंजति मधुकर पुंज॥ बाजित महुवरि बेनु ऊांऊ ढफ ताल पखावज रुंज ॥३॥ केसरि भरि भरि ले पिचकाई छिर-

कित स्यामें धाई॥ डारति कुंवरि बुका चौआ हैं रहिस कँठ लपटाइ ॥४॥ मुकुलित बिबिधि विटप कुल बरखित पावन पवन पराग ॥ तन मन धन नौछावरि कीनो निरिष 'व्यास' बड भाग ॥५॥२४॥ दिखौ प्यारी कुंज बिहारी मुरति मंत बसंत ॥ मोरी तरुन तरुनता तनमें मनसिज रस वरपंत॥१॥ चिठ चितयन कुंतल अिंह माला मुरली कोकिला नाद ॥ देखित गोपीजन बनराई मदन मुदित उनमाद ॥ २ ॥ अरुन अधर नव पछ्य सोभा विहसनि कुसुम विकास॥ फूळै विमल कमलसे लोचन सचित मन हुलास ॥३॥ सहज सुवास स्वास मलयानिल लागति परम सुहाए॥ श्रीराधा माधवि 'गदाधर' परसत सब सुख पाए ॥ ४ ॥ २५ ॥ १९० ॥ 🖺 ॥ देखो त्रिंदावन श्री कमल नैन॥आयौ आयौ है मदन गुन गुदर देन

बसंत, निरतके पद ताल धमार. दे.

॥ धु० ॥ द्रुम नव दल सुवन अनेक रँग ॥ प्रति लित लता संकुलित सँग॥ कर घर धनुप किट किस निपँग॥मनौं वने सुभट सिज्ज कवच अँग ॥ १ ॥ कोकिल कुंजर हय हंस मोर ॥ रथ

सैल सिला पदचर चकोर ॥ वर ध्वज पताक तर तारकेरि॥ निर्फर निसान वाजे वाजें भँमर भेरि ॥ २ ॥ जँह नेम सुमति अति मलय वात ॥ मनौं

तेज वसन वाने उड़ात ॥ रुचि राजति विपिन विछोल पाति ॥ धपि धाय धरति छवि सुरंग गात ॥ ३ ॥ " सूरदास " इम वदत वाल ॥ आयो काम

कृपन सिव कोघ काल ॥ फिरि चितयो चपल **छोचन विसाल ॥ अव अपनों करि थापिए** गुपाल ॥४॥२६॥ध्नामिरत देखौ त्रिंदावनकौ जस वितान॥ छायौ सब पर बरनत पुरान ॥ घु०॥ जाकौ बरनि वेद रहे मौन धारि॥ करें ध्यान मान अभिमान १३२) बसंत निरत के पद, ताल धमार.

टारि॥ ताको गहति सकल मिलि व्रजकी नारि॥

मुख मांडि देति होरी की गारि॥१॥ जाकों रिजवति है सब नाचि गाइ॥ करे बेद युक्ति नाना उपाइ॥ ताके आँजति लोचन दगन माइ॥

छाँडे नचाय हाहा खवाइ ॥ २ ॥ जाके भजति नाम तजि काम केत ॥ भवसागर कीं बर जानि सेत ॥ दुख नास करति सुख कों निकेत॥ ताकीं हँसि हँसि म्वालिन गुलचा देति ॥३॥ जांके वस

करें सुनि सब प्रमान ॥ डरें लोकपाल सब देति मान ॥ सो तो राधा बस करे मुरुठी गान ॥ 'सुर

दास' प्रभु कॅत कान्ह ॥ ४ ॥ २७ ॥ 写 ॥ फागु सँग वडभागि ग्वालनि हरि सँग खेलति होरी ॥ कॅमकम केसरि अगर अरगजा माट भरें रंग गेरी ॥ १ ॥ आगे कृष्ण पाछें व्हें भाँमनि कर पिचकाई ठीने ॥ ब्रिंदाबनमें मोहन पकरें मन

भायों सों कीनें॥२॥ अरस परमपर मब मिल खेलति स्याम अकेलैं आए॥ अंक भरे आलिंगन चुंबन नाना भांति बनाएे॥३॥ पकरि ग्वाट परसपर दुहूं दिसि सूर सुता तट भेटे॥ अवीर गुलाल अरगजा लेके स्थामा स्थाम लपेटे ॥४॥ जाने को अंग लगे मोहन भेद न पाँचे कोहे॥ जुगल जोरि खेलों गोकुल में नित बिंदावन सोहे ॥ ५॥ २८॥ 写 ॥ फुल्यों वन ऋतु राज आजु चिछ देखिए ब्रजराज ॥ ध्रु०॥ निरखित सोभा कही न आवे मनौं उनयो अनुराग॥ उत राधिका सखी सब सँग छै खेळिन निकसी फाग॥१॥ वह सगंध वह अवीर कुँमकुमा लिए है सखन समाज ॥ कांक मृदंग कालरि दफ बीना किन्नरि महुवरि साज ॥ २ ॥ जुरै टोल जहँ दौऊ जायकैं भयौ परम हलास॥ खेलति प्यारी परम रस उप-

ਕ.

जित बहु विधि करित विलास ॥३॥ सिव विरंचि नारद सब गाँवें लीला अमृत सार ॥ श्रीविष्ठलनाथ प्रताप सिंधुकों किन हूं न पायों पार ॥४॥२९॥॥॥ बनसपित फूली बसंत मास ॥ रसिक जनन मन भयों हुलास ॥धुः॥ श्रीगोकुल फूल्यों अति रसाल॥ बाजे चँग मृदंग ताल॥ सोहें सुंदर तिलक बनायों भाल॥ गोपी लिस्कित केसिर भिर गुलाल॥ १॥ बज जन फूलें अंग अंग॥ फागु खेलित हलधर

कृष्ण सँग॥ फूछे गोपी ग्वाल मिल जुवित जुथ॥ मानों प्रगट भयों है कामदुत ॥ २॥ ब्रिंदावन फूल्यों कुंज कुंज ॥ जमुना जल फूले करित गुंज॥ फूछे कमल कली लीऐ भँवर वास ॥ फूले खग बोलित आस पास॥ ३॥ गोवरधन फूले ठौर ठाँर॥ फूले पाँडर केस अंव मोर ॥ ऐसी सोभा विलमें बारे मास॥ फूले जन गावे 'माधो दास' बि. बसंत निरत के पद, ताल धमार. १३५ ॥४॥३०॥१९५ ॥॥॥ निरत ॥ बिंदावन कीडित नँद नंदन सँग व्रपभान दुलारी ॥प्रफुल्ति कुमम कुंज द्रुम वेली कोकिल कूंजित मधुप गुँजारी ॥१॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा मृगमद केमरि

कुंज द्वम वेली कोकिल कुंजति मध्य गुँजारी ॥१॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा मृगमद केमरि सुगँध सँवारी॥ अति आनंद परसपर छिरकति हाथन है कनक पिचकारी ॥ २ ॥ बाजित ताल मुदंग जांज ढफ बीन रबाब मुरली धुनि प्यारी॥ अबीर गुलाल उडावित गावित नाँचित हॅसित दे दे कर तारी॥३॥ चिरजीयों सकल सुखदाइक ठाल गोवरधनधारी ॥ श्रीवल्लभ पदरज प्रताप तै 'हरि दास' बिलहारी ॥ ४ ॥३१॥ 写 ॥ विराजित स्याम सिरोमनि प्यारो ॥ प्रभु तिहं छोक उजियारो ॥ ध्रु० ॥ सरस वसंत सजै वन सोभा श्रीव्रजराज विराजें॥ सुर नर मुनि सब कौतिक भूछै देखि मदन कुछ छाजैं ॥१॥ रँग सुरँग १३६ बसंत के पद, ताल धमार. पि.

कुसुम नाना विधि सोभा कहति न आवैं॥ नवरु किसोर अरु नवरु किसोरी राग रागिनि गावैं ॥२॥ चोवा चँदन अगर कुँमकुमा उडति गुरुारु

अबीर ॥ छिरकति केसरि रंग परसपर कालिंदी कें तीर ॥ ३ ॥ ताल मृदंग उपंग मुरज ढफ ढोल भेरिसहनाई॥अदमुतचरित रच्यों ब्रजभूपन सोभावरनी न जाई॥४॥ दुरि मुरि ब्रज जुवती सब

निरखित निरखि हरिष सचु पाँवें ॥ तृन तोरित बिठ जाई बदन पर तनकों ताप नसावें ॥ ५ ॥ देति असिस चठी सब ग्रह ग्रह चित आनंद

बढावे ॥ या बजकुल प्रभु हरिकी लीला ' जन गोविंद ' बिल जावे ॥ ६ ॥ ३२ ॥ ﷺ ॥ पिय प्यारी खेलें जमुना तीर ॥ भिर केसिर कुँम-कुम नव अबीर ॥ध्रु०॥ घसि मृगमद चंदन अरु गुलाल ॥ रंग भीनें अरगजा पास पाल ॥ जहाँ

कुल कल केकी नव मराल॥ वन विहरति दाँऊ रसिक लाल ॥ १ ॥ बृंदादिक मोंहन लई जोरि॥ बाजे ताल मुदंग रबाब घोर॥ हँसि कें गेंदुक दुई चलाइ॥ मुख पट दे राधे गई बचाइ॥२॥ लिलता पट मोहन गहयों धाइ ॥ पीतांबर मुरुठी लई छिनाइ ॥ हों तो सपत करों छांडों न तोइ॥ स्यांमा ज् आज्ञा दई मोय ॥३॥ निज सहचरी आई वसीठ ॥ सुनिरी लिलता तुम सुनी ढीठ ॥ हठ छांडि जानि देऊ तुम नव किसोर ॥ सुनि रीकि "सूर" तृन दीयों तोर ॥ ४ ॥ ३३ ॥ 🖫 ॥ राजा अनंग मंत्री गुपाल ॥ किओं मुजरा करि छाड भाल ॥ ध्रु० ॥ प्रथम पढाई नीति जाई ॥ पनि सिंघासन बैठे आई॥ कर जोरे रहें सीस नाई॥ विनति करि मांगत राजा राइ॥१॥फूलै चहूं

दिस तरवर अनैक ॥ बोलित कपोत खग हँस

१३८ बसंत भोग समें मुकुट, ताल धमार. ह. भेक ॥ अति आमोद भरें छांडें न टेक॥ तहूँ रुंति रस हि अिंठ किर विवेक॥२॥तब कियों तिरुक रतिराज आनि॥तव ठावित भेट जिय डर हि मानि॥मनों हरित विछोना न रहयों

ठांनि ॥ तरवर दछांकित ताछ जानि ॥३॥ नाइक मन भायो काम राज ॥ छांडी सब तन तें दुहूं लाज ॥ अपनें अपनें मिले समाज ॥ डोलि रस सागर चढि जिहाज ॥ ४॥ अति चतुर राज

मंत्री है देखि॥ तब दिओं राज अपनों विसेख॥
तब गुपाल दास' अपनों जिय लेखि॥ छांडों कबहू
जिन पल निमेख ॥ ६॥ ३४॥ ध्वा भोग
समय मुकुट के पद ॥ हरि जू की आवनकी
बलिहारी ॥ वासर गति देखति हैं ठाडी प्रेम
मुदित बज नारी॥ १॥ ऋतु बसंत कुसुमित बन
गजति मधुप बंद जसु गावें॥ जे मुनि आइ

च. बसंत, मान के पद, ताल आडचोताल. १३५

रहे ब्रिंदाबन स्यांम मनोहर भावें ॥२॥ नीका भेष बन्यों है मोहन गुंजा मनि उर हार ॥ मार पच्छ सिर मुकुट बिराजित नँद कुमार उदार॥३॥ घोष प्रवेस कियो हैं सँग मिलि गौरज मंडित

देह ॥ 'परमानँद' स्वामी हित कारन जसुमित नँद सनेह ॥४॥३५॥ध्री॥ मान आडचोतारु॥ चिल वन निरिष्व राज समाज ऋतु कीं, सकल तरु

मोरे॥ यह बसंत हि जानि रति कें कंत दल जोरे ॥ १ ॥ विरहनी मित विकल करिवे मृगगन दौरे॥ कोकिला कल कंठरव मिलि. काम सर छोरै॥२॥ तरनि तनया तीर मलयज पवन ऊक ऊोरे ॥ गहरू तजि त्रज भामिनि मिलि नँद

किसोरै॥३॥१॥९॥॥ पीरे वस्त्र॥ चिट बन बहति मंद सुगंध सीतल, मलय समीरे॥तुव पंथ बेठि निहा-रित सखी हरि, सूरजा तीरै ॥१॥ चहं दिस फुटै १४० बसंतमान के पद, ताल आडचोताल. प्या.

लता द्वम हरखित सरीरे ॥ तुव बरन तन स्याम मुंदर घरति पट पीरे ॥२॥ विविधि मुर अलि पुंज गुंजति मत्त पिक कीरे ॥ तुव मिलन हित नंद नंदन हैं अति अधीरे ॥ ३॥ 'दास कुंभन' प्रभु

नद्भ ह आत अधार ॥ ३॥ 'दास कुंभन' प्रभु करति बन बहु जतन सीरें ॥ तुव विरह ब्याकुल गोबरधन उद्धरन धीरें ॥ ४॥ २॥ ध्वि ॥ प्यारी नवल नव बन केलि॥ नवल विटप तमाल अरुजी मालती नव बेलि ॥ १॥ नव बसंत, हँसति, दुम

गन जरा जारे पेठि ॥ नवल मिथुन विहँग कृजित मची ठेटा ठैटि ॥ २॥ तरिन तनया तट मनोहर मट्य पवन सहेटि ॥ वकुट कुट मकरँद रहें अटि गन फौटि ॥३॥ यह समें मिलि टाल गिरिधर मान दुख अब हेटि ॥ 'कृष्ण दास' निनाथ नवरँग, तुं कुँवारि नव बेटि ॥४॥३॥।॥॥ रितपति दे दुख करि रितपित सों ॥ तुं तो मेरी रा. बसंत मान के पद, ताल तिताल. १४१ प्यारी और प्यारे हु की प्यारी उठि चलि गज गित सों ॥ १ ॥ दुती कें वचन सुनि कें, मुस्क्यानि,

सों ॥ १ ॥ दुती कें बचन सुनि कें, मुमिक्यानि, भपन बसन सोंधो लियो बहु भांतिमाँ ॥ 'केल्यान ' के प्रभु गिरिधर नागर धाइ लई उर अतिसौँ ॥२॥४॥धा। राधे देखि वनकेँ चेन ॥ भृंग कोकिल सब्द सुनि सुनि प्रकट प्रमुदित मैन॥१॥ जहँ बहति मंद सुगंध सीतल भाँमिनी सुख सैन ॥ कौन पुन्य अगाध कीं फल तूं जो विल-सित ऐंन ॥ २ ॥ ठाल गिरिधर मिल्यो चाहति, मोहन मधुर बैन ॥ 'दास परमानँद' प्रभु हरि चारु पंकज नेन ॥ ३ ॥ ५ ॥ २०५ ॥ 뗢 ॥ मान ताळ तिताल ॥ फिरि पछिताइगी हो राधा ॥ कित तू कित हरि कित यह औसर न करत प्रेमरस बाधा ॥१॥ वहोरि गुपाल भेख कब धरि हैं कब इन कुंजन बसि है ॥ यह जडता तेरे जिय उपजी १४२ बसंत, मान के पद, ताल चोताल. ऋ.

चतुर नारि सब हँसि है ॥२॥ रसिक गुपाल सुनति सुख उपजे आगम निगम पुकारें॥ 'परमानँद' स्वामी पे आवित को यह नीति विचारे ॥३॥१॥५॥। चोताल॥ ऋतु वसंत प्रफुलित बन बकुल मालती कुंद, जाति नवकरन कारन केतुकी कुरवक गुलाल ॥ चिल राधे चटमट करि तिज हठ सठ जिय कौं, हों पठई ठेन तोहि आतुर है अति नँदलाल॥१॥ तेसोई तरिन तनया तीर तेसोई बहति सुख समीर तेसोई चहूं दिस तें उडित हैं सोंधौं गुठाल ॥ यह औसर कँठ लाइ रिक्ये 'रघुवीर' राइ तो तू एसी लागति है कनकलता कें ढिग तरु तमाल ॥ २ ॥ १ ॥ 🖫 ॥ कहा आई री तरिक अब ही जू खेलत ही पीतम सँग एक हाथ अवीर दूजे फेंटा कर ॥ जब उन भुजन जोरि मुसिकाय वदन मोरयों ते जान्यों

बसंत के मानके पद, ताल चोताल. १४३ औरन तन चितए एसो यह होय जिन परइ इन नैनन में यही डर॥१॥ जब ही तृ उठि चली तबही

लालन उफकि रहै औरन सो बुफन लागे बेकू कुकि गई कौन बात परि॥ उठि चिछ हिछिमिछि तुव गँग-राख और सबलागति चुनी समान तुव मधि नाइक सँग सोहति लाल गुपाल गिरिधरि॥२॥२॥॥॥ मान तजो भजो कंत ऋतुवसंत आयो॥वन सोभा निरुख निरखि पथिकन सुख पायौ ॥१॥ फुळ बनराई जाड मधुकर लपटायाँ॥अँवमोर ठोर ठोर बिंदावन छायाँ ॥ २ ॥ अति सुगंध बहति वायु वस पराग उडायाँ ॥ उनमद ऊंकार करति विरही जन डरायो ॥ ३ ॥ तिहारे हित कारन में यह सब्द सुनायो॥ रिसक पीतम जाइ मिलो जुवतीन मन भायो॥४॥३॥३॥ लाल लिखत लिखतादिक सँग लिए विहरत री बर वसंत्ऋतुकला मुजान॥ फुलन की कर गेंदुक लिए

१४४ बसंत मान के पद, ताल धमार. ऋ.

पटकति पट उरज छिए हँसति लसति हिलि मिलि सब सकल गुन निधान ॥ १ ॥ खेलित अति रस जो रहयों रसना नहीं जात कहयों निरिख परिव थिकत भए सघन गगन जान॥ 'छीत स्वामी' गिरिवरधर श्री विष्टल पद पद्मरेनु वर प्रताप महिमा तें कियों कीरति गान ॥२॥४॥२१०॥ध्ना। धमार ॥ ऋतु पलटी री मोपै रहयों न जाइ ॥ मधुकर! माधों सों कहियो जाइ ॥ धु० ॥ बहु बास सुवास फुळी है बेळि ॥ अरु बने कोकिला करति केलि॥ मधुप ताप तन सहयों न जाइ ॥ पिय पान गऐं कहा करि हों आइ ॥ १ ॥ पिय पान रहति हैं अवध आस ॥ पिय तुम बिनु गोपी रही उदास ॥ 'सूर दास' इह बद्ति बाल ॥ पिय तुम बिनु मथुरां कोन हाल ॥ २ ॥ १ ॥ 🚎 ॥ ऋतु बसंत के आगम बसंत मान के पद, ताल धमार. १४५

आली पचुर मदन कों जोर ॥ कैसें घरें कुछ वध् धीरज खेलति नँदिकशोर ॥ १ ॥ तेसी ए गिरि गोवरधन उपर नृत मंजुरी मोरी ॥ सुनि सुनि चली लाल गिरिधरपे बनि बनि नवल किसोरी॥२॥

जाइ मिली अनुरागु भरी रस फाग स्याम सों खेळी ॥ 'त्रजपति' स्याम तमारु हि रुपटी मानों कंचन बेळी ॥ ३ ॥ २ ॥ 写 ॥ ऐसो पत्र छिखि पठयो रूप बसंत ॥ तुम तजो मान मानिनी

तुरंत ॥ घ्र० ॥ कागद नव दल अँव पाँति ॥ द्वात कमल मिस भँवर गाति॥ लेखन काम के वान चाँप ॥ लिखि अनँग सिस दुई छाप ॥ मलया-निल पठयों करि विचार ॥ बाँचे सुक, पिक, तुम सुनों नारि ॥ 'सुर दास' यों बदति बानि ॥तू हरि भजि गोपी तर्जि सयान ॥२॥३॥५॥। चिल राघे

तोहि स्याम बुलावें॥ वह सुनि देखि वेन मधुरे

१४६ बसंत, मान के पद, ताल धमार. दे.

सुर तेरो नाम छे छै गाँवें ॥१॥ देखौ बिंदाबनकी सोभा ठौर ठौर दुम फूछै ॥ कोकिछ नाद सुनति मन आनँद मिथुन बिहँगम फुछै ॥२॥ उनमद

जोबन मदन कुलाहल यह औसर है नीको ॥ 'परमानँद' प्रभु प्रथम समागम मिल्यो भाँवतो जीको ॥ ३ ॥ ४ ॥ ध्वि ॥ देखि वसंत समें ब्रज सुंदरी तिज अभिमान चली ब्रिंदाबन ॥ सुंदर-ताकी रासि किसोरी नव सत साजि सिंगार सुभग

तन॥ १॥ गई तिहि ठौर देखि ऊंचै द्वम छता मकासित गुँजत अछि गन॥ 'कुंभन दास' छाछ गिरिघरि कों मिछी है कुँवरि राधा हुछसत मन ॥ २॥ ५॥ २१५॥ 🛒॥ नव बसंत आगम नीको

॥ २ ॥ ५ ॥ २१५ ॥ ॥ नव बसत आगम नीका लागति नवल फूल पछव नए ॥ नाना बरन सकल ब्रिंदाबन जहँ तहँ दुम प्रफुलित भए ॥ १ ॥ प्रगट्यो रतिपति वसंत सुखद ऋतु हेम काल बसंत, मान के पद, ताल धमार. १४७

कलह जू गए॥ गुंजत मधुप कीर पिक कृजित ठीर

ठीर आनंद ठए॥२॥ जमुना तट रमनीक परम रुचि कुंज बितान लिलित छए॥ तहँ साजि नटवर नँद नँदन बैठि रहे नेरें जू रुए ॥३॥ जानि सु

समय 'चतुरभुज' प्रभु पिय आतुर सँदेस तोकी जु दए ॥ बेगि चिल हिल मिलि गिरिधरि पिय सँग सब सुख करि बिलसों जू नए ॥४॥६॥५॥। नवल बसंत कुसुमित ब्रिंदाबन अधिक मिठानों

कालिंदी जल।। कलकल कोकिल कीर सनादित गुंजित मधुप मिथुन तोलित बल ॥ १ ॥ रितपित उदित मुदित मन भाँमिनी मानिनी तज, छीजित

तिल तिल पल ॥ वर निकृंज खेलति नंद नंदन बोलित तोहि छेल राधा चलि ॥२॥मोहनलाल गोवरधनधारी रसिक सिरोमनि रहसि हिल मिल ॥

'कृष्ण दास' प्रभु सुरति वारि निधि, कँठ बाहु

१४८ बसंत मान के पद, ताल धमार. प्या. धरि छोडि बिरहानल ॥३॥७॥ध्ना। प्यारी देखि

बनकी बात ॥ नव वसंत अनंत मुकुछित कुसुम और द्रम पाँति ॥ १॥ वेनु धुनि नँदलाल बोली तुव कित अलसात ॥ करति कित हि विलंब भामिनी वृथा औसर जाति ॥२॥ लाल मरकत

मनि छवीछी, तू जो कँचन गात॥ बनी 'हित हरिवंस' जोरी उमें कुल कल गाति ॥३॥८॥धा॥ प्यारी राधा कुंज कुसुम संकेंहें ॥ गृही कुसुम मनोहर माला पीतम के उर मेल॥१॥ पियके बॅन.

नैन अनियारें मैन हि ऊरी ऊेळे ॥ गोरज स्थळ स्यांम उर स्थल मनौं जुगल गढ घेरैं ॥ २ ॥ नंद नंदन सौं अति रस बाढयौ मदन मोहन सौं खेलै ॥ कहे 'कल्यान ' गिरिधर की प्यारी रस हि मैं रस मेर्छे ॥ ३ ॥ ९ ॥ 写 ॥ फूलि फूमि आई बसंत ऋतु ॥ जमुना तट नव कान्हर बिहरति नँद कुमार

बे. बसंत, मान के पद,ताल धमार. १४९

घोख जुवतिन वितु॥१॥गिरिधरि नागरतोहि बुला-वति वऊ विधान सखी कहा कहूं हितु ॥ ' कृष्ण दास ' प्रभु कौतिक सागर तुम उपरि चित धरें चपल चितु ॥ २ ॥ १० ॥ २२० ॥ 歸 ॥ बेगि चलो बन कुंवरि सयानी ॥ समय बसंत, बिपिन मधि हय गज मदन सुभट रूप फोज पलानी ॥१॥ चहं दिस चाँदनी चम् चय कुसुम धूरि धूंधरी उडानी ॥ सोरह कला छिपांकर की छिब सोहति छत्र सीस कर तानी ॥ २ ॥ बोले हंस चपल बंदी जन मनों प्रसंसित पिक वर वानी ॥ धीर समीर रटत बन अलिगन मनों काम कर मुरली सुठानी ॥३॥ कुसम सरासन बनि हि बिराजित मनों मान-गढ आन आन भानी॥ 'सूर दास' प्रभु की वेई गति करो सहाइ राधिका रानी॥४॥११॥點॥ भाँमिनी चंपेकी कली॥ वदन पराग मधुर रस

१५० बसंत, मान के पद, ताल धमार.

रुंपर नव रँग लाल अली ॥१॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा करि जु सिंगार चळी ॥ खेळति सरस बसंत परसपर रविकी कांति मछी॥२॥ ताल मुदंग जांज ढफ बीना बीच बीच मुरली॥

'ऋष्ण दास' प्रभु नव रँग गिरिधर हिलि मिलि रँग रही ॥ई॥१२॥५॥ मानिनी मान छुडावन

कारन मदन सहाइ बसंत छै आयों ॥ चतुरंगनि सैना सजि सुलभ पराग अटपटों छायौँ ॥ १॥ नील कमल दल सहस्र मानों गज कदली कुसुम रथ बेगि बनायौ॥ चंपक जुही गुलाल और कुंज बहु रँग तुरी सेन सजि धायों ॥२॥ कुँद, कनेर, मालती जाती पाइक दल आगें जु सुहायों ॥

नाग केत धुजा, अरुन चंबर इव सेत छत्र मोरि कुसुम धरायों ॥ ३ ॥ अँकुस किंसुक सीखंड केतुकी कुरबक निसान बजायों ॥ त्रिगुन समीर खे. बसंत पौढायवे के पद, ताल धमार. १५१ सुजान छट धर जस बंदी अलि कुल मिलि

गायों ॥ ४ ॥ कटक सँवारि कामिनी अँग अँग मोहन सों सर चाँप चढायों ॥ 'कृष्ण दास ' गिरि-घरि सों मिलि रति करि रति पति हार मनायो ॥ ५ ॥ १३ ॥ ﷺ॥ लाल करित मनुहाररी प्यारी

मान मनायों मेरों ॥ मदन मोहन पिय कुंजभव-नमें नाम रटित हैं तेरों ॥ १ ॥ नव नागर गुनको जू आगर ऋतुराज आयो है नेरों ॥ रिसक पीतम में हिल्टि मिल्टि भाँमिनि जैसें चित्र चितेरों

सा हिन्छ । माल भागान जस चित्र चितरा ॥२॥१४॥५६॥ पोढायवे के ॥ खेलित खेलित पोढी स्यामा नवल लाल गिरिधर पिय सँग॥ चोवा चंदन अगरकुँमकुमा जारित फिरित सकल अँग अँग॥१॥ वाजित ताल मृदंग अघोंटी बीना मुरली तान तरँग ॥ 'कुंभन दास' प्रभु यह विधि कीडित जमुना पुलिन लजावित अनँग॥२॥१२॥५६॥।२२५५॥

१५२ बसंतके, पोढायवे के पद, राग बसंत. खे.

खेलि फागु अनुराग भरे दौऊ चले धाम पौढन पिय प्यारी ॥ नवल लाल गिरिधरन नव बाला

नवल सेज सुखकारी ॥१॥ नवल बसंत नवल बिंदाबन नव चातक पिक भँवर गुंजा री॥नव नव केलि करति 'ब्रजपित' सँग नवल मानु सुकुमारी ॥२॥२॥२२६॥ ॾॎ॥ खेलि फागु मुसिकात

चले दौंऊ पोढे सुखद सेज मिलि दंपति॥ हाँसि हाँसे बात करित सुनि सजनी निरखित ऋपन मिली मनों संपति॥१॥ करित सिंगार परसपर हल्सित सोभा देखि मदन तन कांपति॥ 'बज-

पति' पिय प्यारी मििछ विरुसित सखी रुछिता-दिक चरनन चाँपित ॥ २ ॥ ३ ॥ २२७ ॥ 🖫 ॥ खेिछ वसंत जाम चारयो निसि हँसित चरे

खेित वसंत जाम चारयों निसि हँसित चरे पोढन पिय प्यारी ॥ नवल कुंज नव धाम मनो-हर नवल वाल नव केलि विहारी ॥ १ ॥ नवल खे. बसंतके पोढायवे के पद,ताल धमार. १५३ सहचरी गान करति नव नवल ताल बीना कर-

धारी ॥ पौढे नवल सेज नव 'व्रजपति' चाँपति

चरन नव, भानु कुमारी ॥२॥४॥२२८॥॥॥ खेिल बसंत पिय सँग पोढी आलम युन गँग भींनी ॥ नवल लाडिली पान पिय दोऊ नवल अंस भुज दींनी ॥१॥ नौतम सेज रची सिवयन मिलि, अति सुगंध सरसींनी ॥ नवल बीन कर लीयें माधुरी निरखति नेह नवींनी।२।५।२२९।॥ प्यारी पिय खेलित बर बसंत ॥ उपजित दुहुँ

विश्व स्वात पर परवि ॥ उपजात बुढ़ दिस सुख अनंत ॥ धु० ॥ अद्भुत सोभा गोर स्याम ॥ लाल पिया उर लिलत दाम ॥ उमँगि उमँगि अँग भरति वाम ॥ सहचरी सँग कला काम ॥ १ ॥ सेज सुहाइ अमल खेत ॥ चलि कटाच्छ पिचिक भारे हेत ॥ सनमुख भारे छिब छींट लेति ॥ रोम रोम आनँद देति ॥ २ ॥ नख

महार छिब किन गुलाल ॥ राजित बिच उर टुटी माल ॥ जावक रँग रँग्यो लाल भाल ॥ पीक पलक रँगी ललित माल ॥ ३ ॥ बाजें ढफ भूपन सुभाइ ॥ बाढयौ सुख कछ कहयौ न जाइ ॥ सुरति रँग अँग छाइ॥ 'दामोदर' हित सुरस गाइ ॥ ४ ॥ ६ ॥ २३० ॥ 写 ॥ बसंत वनाई चळी त्रज सुंदरि रसिक राए गिरिधर पिय पास ॥ अँग अँग बेलि फूलि मृग नैंनी कुच उतंग मनों कमल विकास ॥ १ ॥ कोक कला बिध कुँज सदन में गिरिवरधर सँग किये बिलास॥ कुसम पर्यंक अँक भरि पौढे निरखति बिल 'परमानँद' दास ॥२॥७॥२३१॥歸॥आश्रयके पद ॥ श्री व्हम प्रभु करुना सागर जगत उजागर गाइए॥ श्री वहुभ के चरन कमलकी बलि बलि जाइए ॥ १ ॥ वर्छभी सृष्टि समाज संग मिली जीवनकों

ने. बसंत के असीस के पद, ताल धमार. १५५ फल पाइए ॥ श्री बल्लम गुन गाइए याहि तें 'रिसक' कहाइए ॥ २ ॥ १ ॥ २३२ ॥ ﷺ ॥ असीस ॥ खेलि फागु अनुरागु मुदित जुबती जन देति असीस ॥ रिसकन की रस रासि श्रीबल्लम जीयों कोटि बरीप ॥ १ ॥ फिरि आई खेलन कें कारन अवला जुरि दस बीस ॥ 'हरिदास' के स्वामी स्यामा खेलों बसंत जय जय गोकुल के इस॥२॥१३३॥+९४ अ, १०३ अ=२३५॥॥॥

यदक्षरं पदअष्टं मात्राहिनं तु यद्भवेत । तत्मर्वे क्षम्यनां देव प्रसिद्ध परमेश्वर ॥



अंग सहित अष्टसखा.

(कीर्तनीआ नारानदासजी कों संब्रह)

₹	ર	3	В
कृष्ण दास.	कुंभनदास.	गोविंदस्वामी.	चतुरभुजदास.
 गुपालदास (मईल केटरिके जमाई र चतुर पीडारी द नगनीवन प जनिकलोक ५ दासमाथो ६ नागरीदास ७ रामराय ८ रा माधुरी 	किसोरीटास नमुं सकुंद भाषुरीदास रससान कमु गुणान विच्नुदास सरिदासके (आमी खामा) दिन दरिवंस	करपानके मधु काका बढ़भगी कृष्णदासी श्रीद्वारकेसमी त्रनपति श्रीत्रमधीसनी श्री हरियायनी रिसक की छाव बाळे श्री बिट्टल गिरिप्सनकी छावायी पंगावाई	कल्यानके प्रभु दामोदर दिन प्रेम प्रभू विचित्र विद्यारी विद्यारीदास सानदास ज्यासदास (श्रामित) श्रीभट

्र स्रीतस्त्रामि.	^६ नंददासजीः	् परमानँददास.	स्रदाम.
अश्रस्वामि (दलः) केसो सिरोपर जन मिरोपर समजानदाम साव्हरीदास क्रमोकेस स्वास्टास सुरस्राहे	कटहरिश्वा मधु बहे भगवान हिन रामराय प्रधु जन हरिश्रा नाजवीबी बादसाहकी- दूरम घोंची रामदासजी रस्ताव्यास	आसकरनजी गदापरदास गोपालदास पद्मापदास मानेकर्चद रसिक बीडारी सगुनदास डरिजीवनदास	अन्दीत्वान पदान कृष्टणजीवन लखीराय जगजाय कविराय जन भगवानदास तानमेनजी सकुंदराम सुगरीदास हरिनारायन मसु